परामर्श - समिति :

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री कोमल कोठारी

श्री विजयदान देथा

डॉ कन्हैयालाल सहल

प्रो. नरोत्तम स्वामी

डॉ. मोतीलाल मेनारिया

श्री उदयराज उज्ज्वल

श्री सीताराम लाळस

श्री गोवर्धनलाल काबरा

श्री विजयसिंह

रसराज

सम्पादक–

नारायणसिंह भाटी

प्रकाशक
राजस्थानी शोध संस्थान
चौपासनी - जोधपुर

परम्परा—भाग ८

मूल्य : ३ रुपये

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस, जोधपुर

विषय-सूची

किसी भी राष्ट्र का वर्त्तमान उसके अतीत व भविष्य के बीच एक अविभाज्य शृंखला है। अतीत के बीच से ही वर्त्तमान का निर्माण करना होता है जिसमें भविष्य की भूमिका भी अंतर्निहित है। इसलिये भविष्य के प्रति आज हमारा यही कर्त्तव्य है कि हम भारतीय सस्कृति को ध्वस्त न होने देकर उसको समृद्ध करें—जो केवल भारत ही की नही, समूची मानव जाति की मगलमयी सस्कृति है।

—आनन्द कुमारस्वामी

सम्पादकीय

तेरहवी शताब्दी के लगभग जब आधुनिक भारतीय भाषाएँ अपभ्रंश से अपना स्वतंत्र अस्तित्व अलग अलग भौगोलिक क्षेत्रों में ग्रहण करने लगी तभी से राजस्थानी भाषा भी विकसित होने लगी। अपभ्रंश की कितनी ही विशेषताओं को विरासत के तौर पर राजस्थानी अपने मे आत्मसात करने लगी, जिनमें शृंगार रस की परम्परा का विशेष महत्व है। अपभ्रंश का प्रमुख छंद दोहा, राजस्थानी मे भी अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति-क्षमता के कारण इस रसधारा का वाहक बन कर आया है।

समय के साथ जैसे जैसे राजस्थानी साहित्य अनेक विधाओ में प्रस्फुटित हुआ, वैसे वैसे शृगाररसात्मक-काव्यधारा को भी विस्तार मिला। यह साहित्य आज कई रूपों में उपलब्ध होता है जिनमें प्रबंध-काव्य, वार्ते (प्रेमगाथाएँ) स्फुट छद और लोकगीत प्रमुख हैं। इन काव्यों के माध्यम से विभिन्न कवियो ने अपनी शैली और अनुभूति के अनुकूल प्रेम-भावना को अत्यत हृदयग्राही शैली मे व्यंजित किया है। पर छद की दृष्टि से इन सब में दोहे का प्रमुख स्थान है। ढोलामारू जैसा रसपूर्ण प्रेम-काव्य प्रबन्ध होते हुए भी दोहो में ही है। वातों में शृगारिक भावनिधियों की गहराई को व्यक्त करने वाला भी दोहा ही है यद्यपि अन्य छन्दो का प्रयोग भी हुआ है। इसी प्रकार स्फुट छदों में भी दोहों की सख्या बहुत बडी है और लोकगीतो का भावात्मक सौन्दर्य भी इनके प्रयोग से दुगुना निखरा है।

अतः प्रस्तुत अक में चुने हुए दोहों के माध्यम से ही इस रसधारा का परिचय कराने का हमने प्रयत्न किया है। प्रारभ में नारी के सौन्दर्य, हाव-भाव और उनसे प्रकट होने वाले सौन्दर्यजनित प्रभाव को व्यक्त करने वाले दोहों को रखा है और उसके पश्चात् मिलन, विरह, प्रतीकात्मक प्रेम-व्यंजना, समय तथा अंत में विविध विषयों को सग्रहीत किया है। दोहे अलग अलग ग्रंथों

व प्रसंगों से सम्बन्ध रखते हैं इसलिए प्रासंगिक कथाओं और घटनाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से कुछ आवश्यक टिप्पणियाँ परिशिष्ट में देदी गई हैं जिससे अधिकाश दोहों के मर्म तक पहुँचने में सहायता मिल सकेगी।

पिछली शताब्दियो मे जहाँ यह साहित्य रचा गया है उस प्रान्त की राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अत्यन्त संघर्षपूर्ण थी। बहुत लंबे समय तक पहले मुगलों और बाद मे मरहठों के साथ तो राजस्थान को भीषण संघर्ष करना ही पड़ा था पर इसके अतिरिक्त घरेलू कलह और शासकों के आपसी झगड़ों का भी कभी अत नही आया। आये दिन युद्ध और लूट-खसोट में हजारों आदमियो का मारा जाना साधारण सी बात थी। घुड़सवारों के जत्थे सदैव इस धरती को रौदने को तत्पर रहते थे। जहाँ तोपों और बंदूकों के धुएँ से आकाश आच्छादित रहता था वहाँ लोगों के हृदय सदा आशकाओं से घिरे रहते थे। जीवन का कोई भरोसा नही था। कितने ही प्रेमियों को प्रथम मिलन के पश्चात् ही सीधा मौत से साक्षात्कार करना पड़ता था; कई युवकों की नवोदित प्रेम-भावनाएँ तलवारो की चकाचौध मे अकस्मात ही विलीन हो जाती थीं। धर्म के साये मे सामाजिक रीति-नीति और जातीयता अपनी सीमाओं को सम्हालने का निरन्तर प्रयत्न करती थी। इस उथल-पुथल और सामाजिक ऊहापोह के बीच भी मानव की सहज रागात्मक वृत्ति और प्रेम-भावनाएँ सौन्दर्यानुभूति से रंजित हृदयों को रस-स्नात करती रही हैं और उसी रस मे जो एक प्रेम-प्रसून प्रस्फुटित हुआ है उसकी रगीनी और सौरभ इस प्रेम-काव्य के रूप मे सुरक्षित है।

इसलिए यह काव्य कुछ अपवादों को छोड़ कर विलासिता के क्षणों में रगीन कल्पना लोक में विचरने वाले कवियों की वासनाजन्य काव्योक्तियों का सकलन मात्र नही है। इसमे राधा और कृष्ण की अलौकिक प्रेम-लीलाओं को स्मरण करने के बहाने अपनी विषय-लालसाओं को कविता का आकर्षक आवरण पहना कर समाज को भ्रमित करने की प्रवृत्ति भी नही है और न यह नायक-नायिकाओ के सूक्ष्म लक्षणो का केटेलाग प्रस्तुत करने में लगाये जाने वाले पाडित्यपूर्ण श्रम का ही प्रतिफलन है। इस प्रेम-काव्य के पीछे उनका अपना सहज भौतिक आधार एव सामाजिक सघर्ष है। आज उसका प्रचलित कलात्मक रूप चाहे जो भी हो पर उसके मूल में पैठी हुई सामाजिक सत्य की महत्ता और मानव हृदय की सहज वृत्तियों की शाश्वतता को स्वीकार करना होगा। कितने ही प्रेम-काव्यो के नायको के जीवन-सघर्ष को देखा

जा सकता है जिन्होंने अपने प्रेम-निर्वाह के लिए बड़े से बड़े संकटों का सामना किया है, बादशाहो की सेनाओं से टक्कर ली है और दुश्मनों के खड्ग-प्रहारों को अपने सिर पर झेला है। सोरठ को बचाने के लिए गिरनार के राव खेगार ने गुजरात के बादशाह से आखिरी दम तक भयकर युद्ध किया। ढोला और मारवणि को ऊमर सूमरा के बाणों की वर्षा में से निकलना पड़ा है। आभल की वजह से खीवजी को झालों से संघर्ष लेना पड़ा। सैंणी का हाथ पकडने के लिए बीजाणंद को वन वन की खाक छाननी पडी। जलाल ने मौत के दामन पर पैर रख कर बूबना से मिलने के कितने ही प्रयत्न किये। नागजी ने नागवती को न पाकर प्राणों से मोह छोड दिया। इसके बदले में नायिकाओं ने उनसे बढ़ कर त्याग और दृढ़ता का परिचय दिया है। इसलिए इनकी प्रेम-भावना त्याग और महान मानवोचित गुणों के प्रतीक के रूप में भी व्यक्त हुई है।

नारी या पुरुष का असाधारण सौन्दर्य और गुण विशेष ही प्रायः प्रेम का प्रारंभिक कारण रहा है पर वह निरतर संघर्ष और त्याग में से गुजरता हुआ भौतिक धरातल से ऊपर उठता गया है तथा धीरे-धीरे दैहिक आकर्षण को बहुत पीछे छोड़ दिया है जिससे अंत में प्रेम की विशुद्ध सत्ता कायम हुई है। प्रेम-सम्बन्धों का यह विकास-क्रम एक ऐसा आदर्श स्थापित करने में सफल हुआ है जो भारतीय सस्कृति में विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। प्रेमी अपने प्रियजन को प्राप्त न कर सकने पर भी निराश नही होते और पुनर्जन्म में भी मिलने की कामना करते हैं। उनके प्रेमी की इस सच्चाई और दृढता को कवियो ने इस बहाने से भी दर्शाने का प्रयत्न किया है कि नायक अथवा नायिका की अक्समात् मृत्यु हो जाने पर शिव-पार्वती की कृपा से वे पुनः जी उठते हैं और उनका सुखद मिलन सभव हो जाता है। इन अलौकिक घटनाओं का प्रयोग सही माने मे प्रेम की क्षमता को प्रमाणित करने के लिए ही किया गया है क्योकि यदि प्रेम जिन्दा है तो प्रेमी कभी मर नही सकते, चाहे इनका भौतिक शरीर नष्ट हो जाय। इस प्रकार विशुद्ध प्रेम-भावना के माध्यम से मनुष्य की आत्मा मे निहित अपार शक्ति का जो प्रमाण हमें इन प्रेम-काव्यों में मिलता है वह अन्यथा दुर्लभ है।

इस सम्पूर्ण साहित्य को कई दृष्टियो से देखा जा सकता है पर यहाँ उसके साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक स्वरूप को ही लेते हैं। इन दोहों को पढते समय रीतिकालीन हिन्दी कविता का ध्यान आये बिना नही रहता।

रीतिकालीन कविता या तो नायक-नायिकाओं के भेदोपभेद बताने के लिए रची गई या ऋतु-वर्णन की बंधी-बंधाई परिपाटी में चलने का प्रयत्न करती रही या फिर अलंकारों के चमत्कारपूर्ण उदाहरणों को प्रस्तुत करने में निःशेष हो गई। नायक-नायिकाओं के भेदोपभेद, अनेकानेक अलंकारों का सफल प्रयोग तथा प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन प्रस्तुत काव्य में भी मिलेगा। पर रीतिकालीन कविता जहाँ प्रयत्नसाध्य होकर लक्षण से काव्य की ओर चली है वहाँ यह कविता सहज प्रेम-भावनाओं से उद्भूत होकर काव्य से लक्षणों की ओर बढी है। अतः रीतिकाव्य में कविता साधन और लक्षण साध्य हो गया है। जहाँ प्रस्तुत कविता में काव्यत्व (और उससे व्यक्त होने वाली प्रेम-भावनाएँ) साध्य तथा रीति केवल साधन मात्र है जिसका प्रयोग भी अनजाने ही हुआ है। उसने कही पूर्ण शास्त्रीयता का रूप धारण करने का प्रयत्न नहीं किया। कुछ एक छन्द-शास्त्रसम्बन्धी लाक्षणिक ग्रन्थों के अतिरिक्त इस तरह की रीतिकालीन काव्य-परम्परा का प्रचलन यहाँ नहीं रहा इसलिए कुछ अपवादों को छोड़ कर यह काव्य अवाछित कृत्रिमताओ से बच गया है।

उपमाओ, उत्प्रेक्षाओ तथा रूपकों के माध्यम से प्रकृति के सूक्ष्म कार्य-व्यापारों तथा उसके अलौकिक सौन्दर्य को काव्य-रूप प्रदान किया गया है जिसमें स्थानीय विशेषताएँ सहज ही झलक उठी हैं। मरुप्रदेश में उमड़ने वाली काळी काठळ, बिजली, वर्षा और हरियाली मे मयूरों का मदोन्मत्त होकर नाचना, पपीहे की पुकार, दादुरों की कामोत्तेजक ध्वनि, पक्षियों का कलरव, घोडों की हिनहिनाहट, प्रेमियो को दूर रखने वाले हरेभरे पर्वत और उनके बीच बहने वाली भरपूर नदियों का भावना-सुलभ प्रयोग कितने ही रूपों में किया गया है जिससे सरस उद्दीपन विभावो की बहुत सुन्दर सृष्टि सृजित हुई है।

नळ नदियां बीजळ तिसा, गिणै न जळ थळ घाट।
आवै राजिद प्रीत वस, बाजिद खड़ियां वाट॥
ढोलै जाण्यौ बीजळी, मारू जाण्यौ मेह।
च्यार आंख अेकठ हुई, सैणां बंध्यौ सनेह॥
ज्यूं सालूरां सरवरां, ज्यूं धरती सूं मेह।
चम्पक वरणी वाल्हमी, चंदमुखी सूं नेह॥
घण घोरां जोरां घटा, लोरां बरसत लाय।
बीज न मावै बादळा, रसिया तीज रमाय॥
मोर सिखर ऊंचा मिळे, नाचै हुआ निहाल।
पिक टहकै झरणा पड़ै, हरियै डूंगर हाल॥

मुख सोभा दै मयंक ज्यूं, मुळकै मंद सु मंद।
पट घूंघट री ओट में, चोर लियौ घण चंद॥

विरह-व्याकुल नायिकाओं का प्रकृति से प्रेम-निवेदन तथा कभी कभी उसके प्रति शिकायत का भाव भी अत्यंत सहज रूप में व्यक्त हुआ है—जहाँ वह पक्षियों और बादलों से अपना प्रेम-संदेश ले जाने की कामना करती है वहाँ वह असह्य विरहाग्नि को प्रज्वलित करने वाले उपकरणों को कोसती भी है। उसका यह व्यवहार पाठक के हृदय पर विरहिनी की मजबूरी, प्रेम की गहनता और स्त्रियोचित भोलेपन का अमिट प्रभाव छोड़ता है।

यूं क्यूं बोल्यो मोरिया, ऊंचौ चढ़े खिजूर।
थारै मेह नजीक है, म्हारै साजन दूर॥
पिऊ पिऊ करण री, बुरी पपीहा बांण।
थारौ सहज सुभाव औ, म्हारै लागै बांण॥
बीजळियां नीलज्जियां, जळहर तूंही लज्ज।
सूनी सेज विदेस पिव, मुधरौ मुधरौ गज्ज॥

प्रेम की गहनता को जहाँ निर्वैयक्तिक रूप से व्यक्त किया है वहाँ प्रकृति के अनेकानेक उपकरणों का मानवीकरण प्रतीकात्मक शैली के द्वारा हुआ है। इस अभिव्यक्ति की अपनी सहजता और काल्पनिक सजीवता निर्जीव प्रकृति के उपकरणो के बीच वार्तालाप करवाने से द्विगुणित हो गई है। हस और सरोवर, भ्रमर और भ्रमरी, राग और मृग, बेल तथा करहा, पानी और काठ के आपसी वार्तालाप इस काव्य की चरम उत्कृष्टता के प्रमाण हैं।

हंसा कहै रे सरवरा लांबी छौळ न देय।
आपे ही उड जावसा, पख संवारण देय॥
सरवर हंस मनायले, बेगा थका जु मोड़।
ज्यांसूं दीसे फूटरौ, वासूं नेह न तोड़॥
जावतड़ां बरजूं नहीं, रैवौ तो आ ठौड़।
हंसां नै सरवर घणा, सरवर हस किरोड़॥
और घणाई आवसी, चिड़ो कमेड़ो काग।
हसा फेर न आवसी, सुण सरवर मंद भाग॥

इसी प्रकार के अन्य प्रतीकात्मक दोहों की अथाह भावात्मक गहराई और हृदय को मुग्ध करने वाली अपूर्व क्षमता अभिव्यक्ति के लाक्षणिक वैविध्य मे समाई हुई है।

इस काव्य की प्रसिद्धि और सहजता का बहुत बड़ा रहस्य इसमें प्रयुक्त होने वाले दोहा छंद मे भी है। दोहा अपभ्रंश से राजस्थानी को विरासत के

रूप में मिला है और कालान्तर में उसने हमारे साहित्य में प्रमुख स्थान बना लिया है। इसका मुख्य कारण इस छंद का अपना लाघव कई भेदोपभेद और संक्षेप मे बड़ी से बड़ी बात को व्यक्त कर सकने की क्षमता है। छोटा छंद होने से इसे याद करने मे भी बहुत सहूलियत होती है। अतः यहाँ के अनपढ़ लोगों की जबान से भी आप मार्मिक दोहे सुन सकते हैं। स्मृति के साथ इसका इतना सहज और सीधा लगाव होने के कारण ही यह युगो तक जीवित रह सका है। मौखिक परम्परा में लोक गीतों के साथ साथ दोहे ने भी यात्रा की है। कितने ही प्राचीन दोहे थोडे बहुत हेरफेर के साथ आज भी लोगों को याद हैं। वास्तव में राजस्थानी जन-जीवन का असली मर्म जितना इस छन्द के माध्यम से व्यक्त हुआ है उतना अन्य किसी छन्द के माध्यम से नही। छन्द शास्त्रों से लेकर लोकोक्तियों तक मे दोहे का प्रयोग मिलेगा। कोई रस और कोई विषय शायद ही इससे अछूता रहा हो। प्राचीन कवियों ने इसीलिए दोहे का बड़ा गुणगान किया है और आधुनिक कवियों ने भी इसे नि.संकोच अपनाया है—

> दूहो दसमो वेद, समझै तेनें सालै।
> बोयातळ नो वेण्यु, बांभण की जांणै॥
> दूहो चित चकित करै, दूहो चित री चैन।
> दूहो दरद उपावहि, दूहो दारू अेन॥
> सोरठियो दूहो भलो, भल मरवण री बात।
> जोबन छाई घण भली, तारां छाई रात॥
> सोरठियो दूहो भलो, कपड़ो भलो सपेत।
> ठाकरियो दाता भलो, घोड़ो भलो कुमेत॥

इस सग्रह के अधिकाश दोहे मौखिक परम्परा से चली आने वाली प्रेम-गाथाओं में से लिए गए हैं जो कहीं-कही भिन्न रूपों में भी उपलब्ध होते हैं। ढोला-मारू के दोहों का प्राचीन रूप और आधुनिक रूप देखने से यह परिलक्षित होता है कि इनकी भाषा भी कालान्तर में सहज से सहजतर होती गई है।

दोहों की गेयता इनका बहुत बड़ा गुण है। यहाँ की गाने वाली जातियाँ सोरठ के दोहे सोरठ रागिनी मे, जमाल के दोहे काफी रागिनी में और ढोला-मारू के दोहे मारु व माड रागिनी मे बड़ी ही खूबी के साथ गाते हैं। अतः ये दोहे सगीत और काव्य के ऐसे संगम-स्थल हैं जहाँ दोनों की सत्ताएँ अपनी पूर्णता को प्राप्त कर एक अलौकिक समा बांध देती हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी इन दोहों का महत्व असाधारण है। मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय मे विभिन्न परिस्थितियों से उत्पन्न अनेक घात-प्रतिघात

होते रहते हैं। प्रेमी और प्रेमिका के रागात्मक सम्बन्धों का सूत्र भी कितनी ही भाव-लहरियों और विचारों से झंकृत होता रहता है। उन झंकारों को व्यक्त करने की क्षमता जिस काव्य में जितनी अधिक है उतना ही वह सफल काव्य कहा जा सकता है। इन दोहों में भी स्थान-स्थान पर अत्यंत सूक्ष्म भावों और मानसिक आवेगों को खूबी के साथ व्यंजित किया गया है। प्रेमियों की उत्सुकता, मिलन-सुख, दुविधा, वियोग, सामाजिक बंधन, आत्म-समर्पण और नारी के लज्जाभरे मान में न जाने कितनी भाव-निधियों का संसार कलरव करता हैं।

इस काव्य के सामाजिक महत्व के दो पहलू हैं। एक तो तत्कालीन समाज-सम्बन्धी जानकारी के साधन रूप में और दूसरा आधुनिक समाज को उनकी अपादेयता के रूप में। प्रत्येक काव्य में अपने समय की बहुत सी बातें परोक्ष अपरोक्ष रूप से स्थान पाती ही हैं। इस काव्य में भी नारी की सामाजिक स्थिति, जाति-प्रथा, ऐतिहासिक परिस्थितियाँ, धार्मिक मान्यताएँ और इनके अंतर्गत आने वाले कितने ही छोटे-बड़े कार्य-व्यापारों के संकेत हमें मिलते हैं। पुरुष और नारी के प्रेम-सम्बन्ध, उनकी सौन्दर्य-चेतना और इनसे सम्बन्धित आदर्शों का विस्तृत वर्णन इनमें उपलब्ध होता है। नारी के नखशिख-वर्णन के साथ साथ उस समय के आभूषणों, वस्त्रों और साज-सज्जा का भी सजीव चित्रण देखने को मिलता है। नायिका के रंगरूप और अंग-उपागों की शोभा बढाने वाले अलंकारों का भी सागोपांग वर्णन कहीं कहीं तो इस खूबी और बारीकी से किया गया है कि उसका काव्य-चित्र हमारे कल्पना लोक में अपना स्थायी स्थान बना लेता है। मन की आँखें उस चित्र को देख कर मुग्ध हो जाती हैं तो कान उसकी नूपुर ध्वनि को सुने बिना ही सुन लेते हैं।

सोरठ रंग में सावळी, सोपारी रै रंग।
सींचांणं री पांख ज्यू, उड उड लागै अंग॥
सोरठ गढ़ सूं उतरी, पायल री झणकार।
धूजै गढ़ रा कांगरा, धूजै गढ़ गिरनार॥
मुहप सीस गुथाय कर, चदं दिस मत जोय।
कदेक चंदो ढह पड़ै, रैण अंधारी होय॥
जिण संचै सोरठ घड़ी, घड़ियो राव खेंगार।
कै तो संचो गळ गयो, कै लाद बुहा लवार॥

लज्जा जिस तरह नारी का आभूषण है उसी तरह मान उसका अधिकार है। लज्जा नारी के रूप और कार्यकलापों में एक अद्भुत सौन्दर्य ले आती है तो मान उसके हृदय-स्थित अनुराग में एक विशिष्ट आकर्षणभरी वक्रता ले

आता है। लज्जा जितनी उसके वाह्य सौन्दर्य को व्यक्त करती है, मान उतना ही उसके आंतरिक सौन्दर्य को प्रकट करता है। इस आन्तरिक सौन्दर्य का आभास हमे कुछ नायिकाओं के चरित्र से मिलता है। रूठी राणी ऊमा और सुहप का राशि-राशि सौन्दर्य उनके मान की वजह से ही निखरा है—

सुहप इतौज मांन कर, जितरौ आटै लूण।
घड़ी घड़ी रै रूसणै, तूझ मनासी कूण॥
मांण रखै तौ पीव तज, पीव रखै तज माण।
दो दो गयंद न बंधहि, हेकै कंबू ठांण॥

आधुनिक समाज के लिए भी इन प्रेम-काव्यों का विशिष्ट महत्व और उपयोग है। समाज के विभिन्न सम्बन्धों में प्रेम-सम्बन्ध भी एक है। प्रेम के कई स्वरूप होते हैं जैसे पिता पुत्र का प्रेम, भाई भाई का प्रेम, वहन भाई का प्रेम, मित्र मित्र का प्रेम और पति पत्नी का प्रेम। यहाँ पर पति पत्नी का प्रेम अर्थात् दाम्पत्य प्रेम ही काव्य का विषय है। इस दाम्पत्य प्रेम-भावना को गहन और दृढ़ बनाने में ही इनकी उपयोगिता निहित है। पर एक प्रश्न अवश्य उठता है कि इन काव्यो में जहाँ नायक-नायिकाएँ सामाजिक मान्यताओं को खडित कर प्रेम की एकान्तिकता में नैतिक सीमाओं तक को चुनौती देती हुई प्रतीत होती हैं तो वहाँ क्या सामाजिक दुष्परिणामों के बढ़ने की आशंका नही होती ? इस तरह की घटनाओं को ऊपरी सतह पर देखने से तो ऐसा ही लगता है कि प्रेम अपने सामाजिक कर्त्तव्य से च्युत हो गया है, जो अनुचित है। पर समूचे काव्य की गहराई में पैठ कर देखे तो अनुभव होगा कि इन सबके पीछे मानव हृदय की शाश्वत प्रेम-भावनाओं की सहजानुभूति में हमारा हृदय खो जाता है, घटनाएँ ऊपर ही ऊपर रह जाती हैं। इसीलिए जिस समय ये घटनाएँ घटी उस समाज मे उन्हे बुरी दृष्टि से भले ही देखा गया हो पर समय के अधकार ने अब एक ऐसा पर्दा डाल दिया है कि उन घटनाओं में से विकीर्ण होने वाली सच्चे प्रेम की शाश्वत ज्योति ही हमें दिखाई पड़ती है। और उसी के प्रकाश को हमें ग्रहण करना चाहिए। मानव की सौन्दर्यानुभूति और रागात्मक वृत्तियो का परिष्कार हो तथा वह अधिक सहिष्णु और शक्तिवान होता चला जाए यह एक सुन्दर सस्कृति की सब से वड़ी आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति मे इन प्रेम-काव्यों से मिलने वाले योग का बहुत वड़ा मूल्य है। यही इनकी सामाजिक महत्ता है।

अत में इस सग्रह के सकलन एव चुनाव आदि में जिन महानुभावों से सहमति व सहयोग मिला है उनका मैं अत्यत आभारी हूँ।

रसराज

दिन सोळा उनमाद रा, सोळा वरसां नार ।
ससिबदनी सोळै कळा, सोळै सज सिणगार ॥ १

हंस गवण कदळी सुजंघ, कटि केहर जिम खीण ।
मुख ससहर खंजन नयण, कुच स्रीफळ कंठ बीण ॥ २

---

१ सोळा–सोलह. उनमाद रा–उन्माद के. सोळा बरसां–सोलह वर्षों की ससिबदनी–शशि वदनी. कळा–कला. सिणगार–शृंगार ।

२ हंस गवण–हंस गामिनी. कदळी–कदली. केहर–केहरी, सिंह. खीण–क्षीण. ससहर–चन्द्रमा. नयण–नैन. बीण–वीणा ।

सुन्दर सोहग सुन्दरी, अहर अलत्ता रंग।
केहर लंकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरंग।। ३

चंद वदन म्रगलोचणी, लखण बत्तीस विवेक।
मारू जेही अपछरा, इन्द्र तणै नहि एक।। ४

उर चौड़ी कड़ पातळी, ठावै ठावै मंस।
ढोलेजो री मारवी, पावासर रौ हंस।। ५

उर चौडी कड़ पातळी, झीणी पासळियांह।
कै मिळसी हर पूजियां, कै हेमाळे गळियांह।। ६

पांच पंखेरू पाच फळ, पांच पसुन की जात।
मोवन रै मुजरे चली, पनरैहि लियां साथ।। ७

खागां नयण खतंग मझि, काजळ सार गरूर।
चीतालंकी चतुर रै, वदन्न वरसै नूर।। ८

---

३ सोहग–सुभग. अहर–अधर. अलत्ता रग–लाल रग. केहर लंकी–सिंह की सी कटि वाली कोमळ–कोमल।

४ म्रगलोचणी–मृगलोचनी. लखण–लक्षण. मारू जेही–मारवणी जैसी. अपछरा–अप्सरा. इन्द्र तणै–इन्द्र के पास।

५ कड–कटि. ठावै ठावै–यथा-स्थान. ढोलेजी री–ढोले की. पाबासर–मानसरोवर. रौ–का।

६ कड पातळी–क्षीण कटि. झीणी पासळियाह–झीनी पसलियां. कै–या. मिळसी–मिलेगी. पूजिया–पूजने से. हेमाळे–हिमालय. गळियाह–गलने पर।

७ पाच पखेरू–पाच पक्षी (कीर, भ्रमर, कोकिल, कपोत, हस). पाच फळ–पाच फल (नारियल, दाडिम, बिम्बाफल, श्रीफल, सुपारी). पाच पसुन–पाच पशु (सर्प, कुरंग, सिह, हस्ती, स्वान)।

८ खागां नयण–कटार के समान आंखें. खतंग–तिरछे. काजळ–कज्जल. चीतालंकी–चीते की सी कमर वाली।

वाला रस भीना वचन, सज भीना तन साज ।
चंदावदनी चतुर रा, लोयण भीना लाज ॥ ६

रसिया नैणा रळ रह्यौ, काजळ तीखी कोर ।
किया वटाऊ कारणै, चंदावदनी चोर ॥ १०

उर धण हुळसण हरख मन, रीझण तीजण रूप ।
लाज सुरंगा लोयणां, राजै अंग अनूप ॥ ११

मुख सोभा दै मयंक ज्यूं, मुळकै मंद मुमद ।
पट घूंघट री ओट में, चोर लियौ धण चंद ॥ १२

सोरठ नारी सांवळी, सोपारी रै रंग ।
सीचांणे री पाख ज्यूं, उड उड लागै अंग ॥ १३

सोरठ महळां ऊतरी, घाल पटां में तेल ।
घूंघट मे भळका करै, सौदागर दो सैल ॥ १४

---

६ वाला–प्रिय. रस भीना–रस से भीगे हुए. चंदावदनी–चंद्रमा से मुख वाली. लोयण–आँखें ।

१० नैणा–नैनों में. रळ रह्यौ–रमा हुआ वटाऊ–राहगीर. कारणै–लिए ।

११ धण–स्त्री हुळसण–उल्लास हरख–हर्ष. लाज–लज्जा लोयणां–आँखों मे. राजै–शोभा देती है ।

१२ सोभा–शोभा ज्यूं–जैसे मुळकै–मुस्कराता है. धण–धन ।

१३ सोरठ–नायिका का नाम सांवळी–सावली. सोपारी–सुपारी. सीचाणै–एक पक्षी ।

१४ घाल–डाल कर. पटां मे–बालो मे भळका करै–चमकते हैं. सैल–भोले ।

सोरठ संपाड़ी कर रही, निरख रही सब अंग ।
चन्नण केरे रूंख में, आंटा खाय भुजंग ॥ १५

•

जिण संचे सोरठ घड़ी, घड़ियौ राव खेंगार ।
कै तौ संचौ गळ गयौ, कै लाद बुहा लवार ॥ १६

•

चंदबदन म्रगलोचणी, सिंघ कटी गज गत्त ।
अेही ऊमा सांखळी, मनहरणी (ज्यूं) कवित्त ॥ १७

•

ना दीठी ना सांभळी, रुपै इदकी रेख ।
अेही ऊमा सांखळी, जांणै सह विवेक ॥ १८

•

सुन्दर अति सुकुमार छै, नाजक छटा निराट ।
अवर विधाता ई जिसी, घडी नही कर घाट ॥ १९

•

मांग जडयां गजमोतियां, कडयां रळंता केस ।
ताळी हंस दे तीजणी, वाळी कांमण वेस ॥ २०

---

१५ सपाडी–स्नान. निरख रही–देख रही. चन्नण केरे–चन्दन के. रूंख मे–वृक्ष मे. भुजग–सांप ।

१६ जिण–जिस. सचे–सांचे से. राव खेंगार–सोरठ का पति. कै तौ–या तो. लाद बुहा–लद चुके. लवार–लुहार ।

१७ अेही–ऐसी. ऊमा सांखळी–नायिका का नाम. मनहरणी–मन को हरने वाली ।

१८ ना दीठी–न देखी. ना साभळी–ना सुनी. इदकी–असाधारण. जाणै–जानती है ।

१९ नाजक–नाजुक. निराट–अत्यधिक. अवर–अन्य. ईं जिसी–इसके जैसी ।

२० जडया–जडे हुए. कडया–कटि पर. रळंता–छितराए हुए. तीजणी–तीज का त्यौहार मनाने वाली. वेस–उम्र।

कीर कंवळ अर कोकिळा, अहि गज सिंह मराळ ।
उदैराज देख्या इता, लूंवत अेकहि डाळ ।। २१

ससिवदनी तौ सिर सरळ, मेचक केस म जांण ।
हिये कांम पावक हुवै, तासु धुंवा मन जांण ।। २२

सित कुसमां गूंथी सुखद, वेणी सहियां व्रन्द ।
नागणि जांणै नीसरी, सांपड़ि खीर समंद ।। २३

कांन जड़ाऊ कांमरा, कुंडळ धारण कीन्ह ।
झळहळ तारा झूमका, दुहु पाखां ससि दीन्ह ।। २४

जडियौ तिलक जवाहरां, जांणै दीपक जोत ।
वाल्हम चीत पतंग विधि, हित मूं आसक होत ।। २५

काळी भमरावळि कळी, भूहां वांकड़ियांह ।
कमळ प्रभात विकासिया, इसड़ी आंखड़ियांह ।। २६

---

२१ कंवळ–कमल कोकिळा–कोकिल. अहि–सर्प मराळ–हंस. देख्या–देखे. इता–इतने ।

२२ म जाण–मत जान हिये–हृदय मे. काम पावक–कामाग्नि तासु–उसका ।

२३ कुसमा–कुसुमों से वेणी–चोटी. सहिया–सखिया. नागणि–नागिन. जाणै–जानो. नीसरी–निकली. सापड़ि–स्नान कर के. खीर समद–क्षीर समद ।

२४ कीन्ह–किये. झळहळ–चमकते हुए. दुहु पाखा–दोनों तरफ ।

२५ जडियो–जडा हुआ जवाहरा–जवाहिरात से. चीत–चित्त. आसक–आशिक ।

२६ भूहा–भौहे. वांकडियांह–बांकी. विकासिया–विकसित हुए. इसडी–ऐसी ।

नाक नवेली नारि रे, नक वेसर घण नूर ।
मोती ग्रहियां चांच मझ, जांणक कीर जरूर ।। २७

•

बणियौ तिल थारै वदन, नेह रसिक मनमार ।
तिल ऊपर तिलोत्तमा, वार दई सौ वार ।। २८

•

फबै ललाई विंब फळ, परतख अधर प्रबाळ ।
जपा कुसुम जोड़ै जियां, भाखै सहियां भाळ ।। २९

•

संजम जप तप सांपरत, व्रत जुत जोग बिनांण ।
आंख तरच्छी ईखतां, जीता समधा जांण ।। ३०

•

दुरै निहारै दंतड़ा, बादळ दांमणियांह ।
अति ऊजळ त्यां आगळी, की हीरा कणियांह ।। ३१

•

मत्र वसीकर मानजै, बांणी रस बरसंत ।
सरसुति बीणा प्रगट सुर, कोयल लाज करंत ।। ३२

•

---

२७ नक–नाक. घण नूर–अत्यंत सुन्दर. ग्रहिया–ग्रहण किये हुए. कीर–तोता ।

२८ बणियौ–बना हुआ है. थारै–तेरे वार दई–न्योछावर करदी ।

२९ फबै–शोभा देती है परतख–प्रत्यक्ष प्रबाळ–मूगा. जोडै–बराबर. जियां–जैसे. सहिया–सखिया. भाळ–देख कर ।

३० सजम–संयम. सापरत–प्रकट. जुत–युक्त. बिनाण–तरकीब. तरच्छी–तिरछी. ईखता–देखते समधा–साधारण बात ।

३१ दुरैं–छिपे हुए. दतड़ा–दांत. दामणियाह–बिजलियाँ. ऊजळ–उज्ज्वल. त्यां आगळी–उनके आगे. की–क्या ।

३२ वसीकर–वश मे करने वाला सरसुति–सरस्वती सुर–स्वर ।

अधरां डसणां सूं उदै, विमळ ह्रास दुतिवत ।
सो संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण फवंत ।। ३३

अलक डोरि तिल चड़स वौं, निरमळ चिबुक निवांण ।
सींचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचांण ।। ३४

भांमणि रा सुकुमार भुज, साहब गळै सुहाय ।
जांण नाळ जळजात रा, कांम-पताका काय ।। ३५

सुच्छम रोमावळि सुखद, वरणी उकति विचार ।
सांप्रत रस सिणगार री, बेल कियौ विसतार ।। ३६

जघ अलोम अनूप जुग, नाजुकपणै निघात ।
केळि करी कर करभ कै, सकन कूर साखात ।। ३७

सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पायं ।
निरखै भरमै नायणी, जावक दे मिळ जाय ।। ३८

---

३३ अधरा–होठो से डसणां–दांतों से उदै–प्रकट हुई संध्या सू–सायंकाल से. फवत–शोभायमान होती है ।

३४ चडग–पानी निकालने का चरस. चिबुक–ठोडी. निवांण–कुआ. समर–स्मर, कामदेव ।

३५ भामणि–स्त्री, राधिका. साहिब–प्रियतम गळै–गले मे. जाण–मानो. नाळ–कमल-तंतु. काम-पताका काय–कामदेव की ध्वजा का दंड ।

३६ सुच्छम–सूक्ष्म. रोमावळि–रोमावलि बरणी–वर्णन किया. साप्रत–प्रकट मे. सिणगार री–शृंगार की ।

३७ अलोम–केशरहित. निघात–विशेष करी कर–हाथी की सूंड. करभ–हाथी का बच्चा. सकन कूर–एक प्रकार की मछली. साखात–साक्षात ।

३८ सापरत–प्रत्यक्ष. पाय–पांव भरमै–भ्रमित होती है. नायणी–नाइन ।

बणिया अणवट बीछिया, पद पल्लव छवि पूर ।
की कोमळता रंग कहां, चंपकळी चकचूर ।। ३९

•

कटि हंदौ करणाटियां, जंघा उतकळियांह ।
गौ गुज्जरियां कुच गरव, केसां केरळियांह ।। ४०

•

जिण विध कवि मुख सूं जिलै, बधती व्है वरणांह ।
जुवती तन हूंता जिलह, इण विध आभरणांह ।। ४१

•

सोहै नीलांवर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण ।
चंपकळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण ।। ४२

•

नमणी खमणी बहुगुणी, सुकोमळी ज सुकच्छ ।
गोरी गंगानीर ज्यूं, मन गरवी तन अच्छ ।। ४३

•

गति गंगा मति गोमती, सीता सीळ सुभाय ।
महिळां सिरहर मारवी, अवर न दूजी काय ।। ४४

---

३९ अणवट बीछिया–पैर के आभूषण. पद पल्लव–अंगुलियो मे. की–क्या. चंपकळी–चपे की कली. चकचूर–पिस गई ।

४० कटि हदौ–कमर का. करणाटिया–करनाटक देश की स्त्रियों की. उतकळियाह–उत्कल देश की स्त्रियो की. गौ–गया. गुज्जरियां–गुजरात की स्त्रियो का. केरळियाह–केरल देश की स्त्रियो का ।

४१ जिलै–आब, सुन्दरता. बधती–चढती हुई. बरणाह–वर्णों की, अक्षरो की. तन हूंता–शरीर मे. आभरणाह–आभूषणो की ।

४२ सोहै–शोभा देती है नीलाबर–नीले वस्त्र. सहत–सहित. प्रमुदा–स्त्री जुत–सहित ।

४३ नमणी–विनम्र. खमणी–बरदाश्त करने वाली. बहुगुणी–अनेक गुणो वाली. मन गरवी–मन मे बडप्पन लिए हुए ।

४४ सीळ–शील. सुभाय–स्वभाव. महिळां–स्त्रियो में. सिरहर–सिरमौर. अवर–अन्य ।

हेकण जीहा किम कहूँ, मारू वौत गुणेह।
इन्द्र सेसजी गुण कहै, थाह न लाभै तेह ॥ ४५

•

घम्म घम्मंतइ घाघरे, उलटचौ जांण गयंद।
मारू चाली मन्दिरे, झीणे वादळ चंद ॥ ४६

•

मारू चाली मन्दिरे, चन्दउ वादळ मांहि।
जांणे गयंद उलट्टियौ, कज्जळ वन रै मांहि ॥ ४७

•

लाज नवेली लोयणां, बिन्दी सीस वणाय।
लंगर तूट्या लाज रौ, जाण गयंद मद जाय ॥ ४८.

•

म्रगनैणी जोबन मसत, चाल हंस चित चाव।
छटा घटा विच छैल मणि, दांमण कौ दरसाव ॥ ४९

•

चढतै जोवन रंग चुवै, पायल बाजै पाय।
चालै सुन्दर चौहटै, जांण पटाभर जाय ॥ ५०

---

४५ हेकण–एक. जीहा–जीहा. बौत गुणेह–बहुत गुणो वाली लाभै–मिले. तेह–उसका।

४६ उलटचौ–मस्ती मे चला. मन्दिरे–घर की ओर. झीणे–झीने, बारीक।

४७ चन्दउ–चन्द्रमा. जांणै–मानो. गयद–हाथी।

४८ लोयणा–आंखो मैं. वणाय–बना कर, लगा कर लाज रौ–लज्जा का. जांण–जानो।

४९ जोबन मसत–यौवन में मस्त. चित चाव–चित्त मे उमग. दामण–दामिन, बिजली. दरसाव–प्रकट होना।

५० जोवन–यौवन. पाय–पांव पटाभर–हाथी।

गम गम पायल गूघरा, ठम ठम विछिया ठाय ।
कांमण यू धरतां कदम, पदम भळक्कै पाय ॥ ५१

गज मोत्यां री दांमणी, मुखड़े सोभा देत ।
जांणे तारा पांत मिळ, राख्यौ चंद लपेट ॥ ५२

रग पायलड़ी री रणक, मिळी झमक मंजीर ।
चंगा चसमा री चमक, सोवत झमक सरीर ॥ ५३

तीजणियां दिन तीज रै, सज काजळ सिणगार ।
-आई हीडे हीडवा, अपछर रै उणिहार ॥ ५४

गोरे कचन गात पर, अंगिया रंग अनार ।
लैंगौ सोहै लचकतौ, लहरचौ लफादार ॥ ५५

सूहप सीस गुथाय कर, चंदै दिस मत जोय ।
कदेक चंदो ढह पड़ै, रैण अंधारी होय ॥ ५६

---

५१ बिछिया—पैर का आभूषण. कांमण—कामिनी. भळक्कै—चमकता है. पाय—पैर में।

५२ दामणी—गले के बाँधने का एक आभूषण. तारा पान—तारों की पंक्ति. राख्यौ—रखा है।

५३ पायलड़ी—पायल. रणन—पायल की आवाज. चंगा—सुन्दर. चसमा—चश्मा. सोवत—शोभा देती है।

५४ सिणगार—शृंगार हीडवा—हीदने को. अपछर—अप्सरा. उणिहार—समान आकृति वाली।

५५ सोहै—शोभा देता है लहरचौ—एक प्रकार की ओढ़नी. लफादार—चौड़ा गोटा लगा हुआ।

५६ सूहप—नायिका का नाम गुथाय कर—गुंथा कर. दिस—सामने. जोय—देख. कदेक—कभी रैण—रात।

सूहप सीस गुंथाय कर, गी गांधी री हाट ।
बिणज गमायौ वांणियै, बळद गमायौ जाट ।। ५७

सुहप सीस पांणी गई, ओढण चगा चीर ।
दांत झबूकै जळ हंसै, खेलण लाग्यौ तीर ।। ५८

मारू महलां संचरी, कनक वरणे तास ।
पूंगळ मांहे ऊपनी, नरवर हुवौ उजास ।। ५९

सोरठ गढ़ सूं ऊतरी, पायल रा झणकार ।
धूजै गढ रा कांगरा, धूजै गढ़ गिरनार ।। ६०

सोरठ मांण प्रमांण, रस घोटीजै रागां तणा ।
मेहूड़ा गुडे प्रमांण, रूप देख रचियै घणा ।। ६१

---

५७ गी–गई. हाट–दूकान. विणज–व्यापार. गमायौ–खोया. बळद–बैल ।

५८ सीस–शीश. पाणी गई–पानी लेने को गई. झबूकै–चमकते हैं ।

५९ महलां सचरी–महलों की ओर चली. तास–जिसका. पूगळ–एक देश. ऊपनी–पैदा हुई नरवर–मारू का ससुराल. उजास–प्रकाश ।

६० सोरठ–नायिका का नाम. धूजै–कांपते हैं. कागरा–कंगूरे ।

६१ मांण प्रमांण–शराब की भट्टी के समान. तणा–का मेहूड़ा–वे वृक्ष जिनके रस से शराब बनती है ।

नळ नदियां बीजळ तिसा, गिणे न जळ थळ घाट ।
आवै राजिद प्रीत वस, वाजिद खडियां वाट ।। ६२

सांची प्रीत सनेह गति, चित मे हित छायोह ।
आछी धण रै वासतै, काछी चढि आयोह ।। ६३

साजन आया हे सखी, की मनवार करांह ।
थाळ भरां गजमोतियां, ऊपर नैण धरांह ।। ६४

साजन आया हे सखी, सग साईणा ले'र ।
पाई नवनिधि नार अब, नगर बधाई फेर ।। ६५

धिन दीहाडौ धिन घड़ी, धिन वेळा धिन वास ।
नयणे सयण निहारिया, पूरी मन री आस ।। ६६

ढोले जांण्यौ बीजळी, मारू जांण्यौ मेह ।
च्यार आँख अेकठ हुई, सैणां बंध्यौ सनेह ।। ६७

---

६२ नळ–नाले. बीजळ–बिजली. गिणे न–मानता नही. आवै–आते हैं. राजिद–पति. वाजिद–घोडा ।

६३ साची–सच्ची सनेह–स्नेह. छायोह–छाया है. आछी–अच्छी, सुन्दर. वासतै–लिए. काछी–कच्छ देश का घोडा ।

६४ की–क्या मनवार–मनुहार. कराह–करे. भरां–भरें. धरांह–रखे ।

६५ साईणा–समवयस्क, साथी. ले'र–लेकर ।

६६ धिन–धन्य दीहाडौ–दिन. वेळा–वेला. नयणे–नैनों से. सयण–साजन. निहारिया–निरखे. पूरी–पूर्ण की. आस–आशा ।

६७ जाण्यौ–जाना बीजळी–बिजली. अेकट–इकट्ठी, एक जगह सैणा बंध्यौ–प्रेमियो के बीच बधा. सनेह–स्नेह ।

ढोलौ मारू अेकठा, करै कुतूहळ केळ ।
जांणै चन्नण रूंखड़े, विलगी नागरवेल ॥ ६८

आजे रळी वधावणी, आजे नवळा नेह ।
सखी अमीणा गेह में, दूधां वूठा मेह ॥ ६९

आसा लूध उतारियौ, धण कंचुवौ गळेह ।
घूमै पड़िया हंसड़ा, भूला मांनसरेह ॥ ७०

ज्यूं सालूरां सरवरा, ज्यूं धरती सूं मेह ।
चंपक वरणौ वाल्हमौ, चंदमुखी सूं नेह ॥ ७१

जिम मधुकर नै केतकी, जिम कोइल सहकार ।
मारवणी मन हरखियौ, तिम ढोले भरतार ॥ ७२

मो मन लागौ तौ मनां, तौ मन मो मन लग्ग ।
दूध विलग्गा पांणियां, पांणी दूध विलग्ग ॥ ७३

---

६८ करै–करते हैं. केळ–केलि चन्नण–चन्दन रूंखडे–वृक्ष से. विलगी–लिपटी ।

६९ रळी–प्रसन्नतापूर्वक. वधावणी–स्वागत करना नवळा–नवीन. अमीणा–मेरे. दूधा वूठा मेह–दूध की वर्षा हुई ।

७० आसा लूध–आशालुब्ध. उतारियौ–उतारा. कंचुवौ–कंचुकी. गळेह–गले में घूमै–घूमते हैं. मानसरेह–मानसरोवर में ।

७१ ज्यूं–जैसे सालूरां–मेंढकों. सरवरा–सरोवरों से. चंपक वरणौ–चम्पे के वर्ण वाला ।

७२ कोइल–कोयल हरखियौ–हर्षित हुआ भरतार–पति ।

७३ मो–मेरा लागौ–लगा तौ मनां–तेरे मन से विलग्गा–मिल गये. पांणियां–पानी से ।

सम्मन चूड़ी काच की, कोडी कोडी देख ।
जब गळ लागी पीव के, लाख टकां की हेक ।। ७४

•

ऊमा अचळौ मोहियौ, ज्यू चन्दण भूयंग ।
रात दिवस भीनौ रहै, भमरौ सुमनां रंग ।। ७५

•

प्रीतम छेह न दीजिये, मुझ कू बाळी जांण ।
जोबन फूल सुवास रितु, भमर भले परमांण ।। ७६

•

नवा दिहाड़ा नव रुता, नव तरुणी सौ नेह ।
नवा तिण घर छावियौ, बरसौ अधका मेह ।। ७७

•

घण घोरां जोरां घटा, लोरां बरसत लाय ।
बीज न मावै बादळां, रसिया तीज रमाय ।। ७८

•

हरणी मन हरियाळियां, उर हाळियां उमंग ।
तीज परव रग त्यारियां, सांवण लायौ संग ।। ७९

---

७४ गळ लागी–आलिगन करते समय गले के लगी. हेक–एक ।

७५ ऊमा=ऊमा सांखली–नायिका. अचळौ=अचलदास खीची–नायक. मोहियौ–मोहित किया भूयग–सर्प भीनौ रहै–प्रेम-रस में छका रहता है. भमरौ–भ्रमर ।

७६ छेह–अंत बाळा–छोटी उम्र की. जाण–जान कर. परमांण–प्रमाण ।

७७ दिहाडा–दिन रुता–ऋतुएं. तरुणी–तरुणी. सौं–से. छावियौ–छाया ।

७८ घण–धन, बादल. जोरां–जोरों से लोरा–बादलों के झुण्ड. बीज–बिजली. बादळा–बादलों मे ।

७९ हरणी मन–मन को हरने वाली. हरियाळियां–हरियाली. तीज परव–श्रावण सुदि या भाद्रपद बदि तृतीया का पर्व ।

इन्द्रधनुख तणियौ अजब, चातक धुन मच चाव ।
बीज न मावै बादळां, रसिया तीज रमाव ।। ८०

•

मोर सिखर ऊंचा मिळै, नाचै हुआ निहाल ।
पिक ठहके झरणा पड़ै, हरिये डूंगर हाल ।। ८१

•

गाजै घण सुण गावणौ, प्याला भर मद पाव ।
झूलै रेसम रंग झड, झोटा दे'र झुलाव ।। ८२

•

पेच सुरंगी पाग रा, ढांके मत धर ढाल ।
काछी चढ आछी कहूं, हंजा भींजण हाल ।। ८३

•

भीज रीझ झेली भली, पावस पांणी पैल ।
मतवाळा मनवार री, छाक म ठेलौ छैल ।। ८४

•

आलीजा अलबेलिया, हो हंजा हुसनाक ।
भीनोड़ा रसिया भमर, छैल पियौ मद छाक ।। ८५

---

८० इन्द्रधनुख—इन्द्रधनुष. चातक धुन—चातक की ध्वनि. चाव—उमंग. न मावै—नहीं समाती. रमाव—खिला ।

८१ निहाल—आनन्द से पूर्ण. ठहके—बोलती है हरिये—हरे-भरे. डूंगर—पहाड़. हाल—चल ।

८२ घण—घन. गावणौ—गाना रंग झड—रंग की झड़ी ।,

८३ पाग रा—पगड़ी के. काछी—कच्छी घोड़ा. आछी—अच्छी. हंजा—प्रेमी. भींजण—भीगने ।

८४ रीझ—प्रसन्न. झेली—ली. भली—अच्छी. मनवार—मनुहार. छाक—शराब का प्याला. म ठेलौ—पीछे मत दो ।

८५ अलबेलिया—छैला. हुसनाक—सुन्दर. भीनोड़ा—भीगे हुए ।

पांणी सू पोसाक रौ, धरग्यौ रंग धुपीज ।
द्यौ रंगभीनी दूसरी, रंगभीनी नूं रीझ ॥ ८६

बीझौ घर रौ भांणजौ, नित आवै नित जाय ।
पग सू पत्थर घिस गयौ, बीझा भेद बताय ॥ ८७

भेद कहि लाजां मरां, थांनै आसी रीस ।
थांरै आंगण बेलडी, थे नीरौ हुँ चरीस ॥ ८८

बीझा काचा करसला, म्हे द्यां कडवी बेल ।
म्हे नीरां (थे) चर जावसौ, निपटे जासी खेल ॥ ८९

प्रीत बुरी रे बालमा, निपट बुरौ है नेह ।
धमासे ज्यूं सूखसौ, मूडै आवत तेह ॥ ९०

धमासौ भलां पांगरै, ऊँडै जावत तेह ।
वे नर कदे न बावड़ै, पर नारी सूं नेह ॥ ९१

---

८६ पाणी सू–पानी से. धरग्यौ–उतर गया. धुपीज–धुल कर. द्यौ–देग्रो. रंग भीनी–रग से भीगी हुई ।

८७ बीझौ–नायक. भांणजौ–भान्जा ।

८८ लाजा मरां–लज्जित होता हूं. आसी–आयेगी. नीरौ–खाने के लिए डाल दो. चरीस–चरूंगा ।

८९ काचा–कच्चा. करसला–ऊँट का बच्चा. म्हे द्यां–मै हूं. चर जावसौ–चर जाग्रोगे. निपटे जासी–समाप्त हो जायगा ।

९० धमासौ–जवासा, एक कांटेदार भाडी विशेष जो वर्षा के घने पानी से कुम्हला कर सूख जाती है और गर्मियो के दिनो पानी के अभाव मे हरी-भरी रहती है. सूखसौ–सूख जाओगे. तेह–भूमि मे रहने वाली वर्षा की नमी ।

९१ भलांई–भले ही. पांगरै–पल्लवित हो. न बावड़ै–पहले की सी स्थिति में फिर नहीं आते ।

चांद सूर साखी करां, पियां कटोरे कोस ।
जीवतड़ां बिरचां नहीं, मुवां न दीजै दोस ।। ९२

•

वीझो बरजे सोरठी, मूझ गळी मत आव ।
थांरी पायल बाजणी, म्हांरो और सभाव ।। ९३

•

तूझ गळी म्हे आवसां, ठमकै धरसां पाव ।
थे तो वीझा जोवसो, (ज्यू) ऊन्है दूध बिलाव ।। ९४

•

आसी सांवण मास, बिरखा रुत आसी भळे ।
सांईणां रो साथ, भळे न आसी बीझरा ।। ९५

•

सोरठ थू सुरनार, सिर सोने रो वेहड़ो ।
पग थामो पिणिहार, बातां बूझै बीझरो ।। ९६

•

वीझो पूछै सोरठी, प्रीत किता मण होय ।
लागतडी लाखां मणां, तूटी टांक न होय ।। ९७

---

९२ साखी–साक्षी. पियां कटोरे कोस–देवता की साखी कर के शपथ ग्रहण करूँ. बिरचां नहीं–विमुख नहीं होऊँगा ।

९३ बरजे–मना करता है. सोरठी–नायिका का नाम. थारी–तुम्हारी. बाजणी–बजने वाली. सभाव–स्वभाव ।

९४ आवसां–आएँगे. धरसां–रखेंगे. जोवसो–देखोगे ।

९५ आसी–आएगा. बिरखा–वर्षा. भळे–फिर. साईणां–एक उम्र के ।

९६ सोने रो–सोने का. वेहड़ो–दो घड़े. बूझै–पूछे. बीझरो–बीझा, नायक का नाम ।

९७ पूछै–पूछता है. किता–कितने. मण–मन. लागतड़ी–लगती हुई, प्रारम्भ की स्थिति में. टूटी–टूटने पर. टांक–तीन चार माशे का तोल विशेष ।

साजन मेरी सांकड़ी, सांम्हा मिळिया सैण ।
बतळायां बोल्या नहीं, नीचा करग्या नैण ।। ९८

•

खीया थूं खुरसांण, धण तेगौ तरवार रौ ।
मुखमल हुंदे म्यांन, खंवे विलूवूं खीवजी ।। ९९

•

थे मोती म्हे लाल, अेकण हार पिरोविया ।
हाजर माळा हाथ, पैरौ क्यूंनी खींवजी ।। १००

•

म्हे भोजन थे थाळ, अेकण हाथ परोसिया ।
हाजर भारी हाथ, जीमौ क्यूनी खीवजी ।। १०१

•

म्हे चौपड़ थे सार, अेकण जाजम ढाळिया ।
हाजर पासौ हाथ, खेलौ क्यूनी खींवजी ।। १०२

•

म्हे आभल थे खींवजी, मिळिया जोग अठेह ।
खेलौ क्यूनी खीवजी, तिल तिल रात घटेह ।। १०३

---

९८ सेरी–गली. माकडी–सकडी. साम्हा–सामने. मिळिया–मिले. बतळाया–बोलने पर ।

९९ खीया–खीवजी, नायक का नाम. खुरसाण–शाण. खवे विलूवू–कधे मे झूम जाऊँ।

१०० अेकण–एक ही पिरोविया–पिरोये गये. माळा–माला. क्यूंनी–क्यो नही ।

१०१ अेकण–एक ही परोसिया–परोसे गये ।

सूप सजण घर आवियौ, दीजै नाहीं पूठ ।
आगा हुय मिळजौ अवस, आदर दीजे ऊठ ।। १०४

•

सूप इतरो ज मांन कर, जितो ज अंग सुहाय ।
लाख टकां री मोचड़ी, पैरीजै पग मांय ।। १०५

•

सूप इतरो ज मांण कर, जितो ज आटे लूण ।
घड़ी घड़ी रै रूसणै, तूझ मनासी कूण ।। १०६

•

मांण रखै तौ पीव तज, पीव रखै तज मांण ।
दो दो गयंद न बंधहि, हेके कंबू ठांण ।। १०७

•

डूंगरिया हरिया हुआ, पड़िया जळ भर पंत ।
बरसाळै मत बीछड़ौ, कांमण दाखै कंत ।। १०८

•

धनस चढ़ावै सो धरा, इन्द्र कढ़ावै आंण ।
करै न सांवण मास में, पंथी पंथ पयांण ।। १०९

---

१०४ सूप–नायिका का नाम. आवियौ–आया आगा हुय–आगे होकर. मिळजौ–मिलना अवस–अवश्य ही ।

१०५ जितो ज–जितना सुहाय–सुहावे मोचड़ी–जूती पैरीजै–पहनी जाती है ।

१०६ मांण–मान. जितो ज–जितना. आटे लूण–आटे में नमक. रूसणै–रूठने पर. मनासी–मनाएगा. कूण–कौन ।

१०७ मांण–मान. पीव–पति. गयंद–हाथी न बंधहि–नहीं बँध सकते हेके–एक ही. कंबू ठांण–हाथी को बाँधने का स्तंभ या स्थान ।

१०८ डूंगरिया–पर्वत. हरिया–हरे-भरे पंत–मार्ग. बरसाळै–वर्षा ऋतु में. बीछड़ौ–बिछड़ो. कांमण–कामिनि. दाखै–कहती है ।

१०९ धनस–धनुष आंण–सौगन्ध पंथी–राहगीर. पयांण–प्रस्थान ।

गह घूमी नूमी घटा, पावस उलट्या पूर।
सांवण महिने मायबा, कदे न राखूं दूर ॥ ११०

•

आज सियाळै सी पड़ै, ओळग जाय बलाय।
फूल महल में पोढस्यां, प्रीतम कंठ लगाय ॥ १११

•

जिण रुत नाग न नीसरै, दाझै वन खंड दाह।
तिण रुत हे साहिब कहो, कुण परदेसां जाह ॥ ११२

•

छः रितु बारै मास गणि, आयौ फेर बसंत।
सो रितु मूझ बताइदे, तिय न सुहावै कंत ॥ ११३

•

हार जितोही आंतरो, हिये न सहियो रात।
राज हलग्न रो आंतरो, किम महसी परभात ॥ ११४

•

रहो सधीरा राजवण, नैण न नांखो नीर।
रंगो मत इण रंग मे, चंगो भीजै चीर ॥ ११५

११० उलट्या पूर–भरपूर बरसने लगा. मायबा–पति. कदे–कभी।

१११ सियाळै–सर्दी में सी–शीत ओळग–नौकरी. पोढस्यां–सोऊंगी।

११२ जिण रुत–जिस ऋतु में न नीसरै–नहीं निकलते दाझै–झुलसते हैं. तिण–उस जाह–जाए।

११३ बारै–बारह गणि–गिनने पर. मूझ–मुझे बताइदे–बता दे. तिय–पत्नी।

११४ हार जितोही–हार व जीत में भी आंतरो–दूरी सहियो–सहा [illegible]. महसी–[illegible]।

११५ सधीरा–धैर्य धारण कर राजवण–प्रियतमा नैण–नैन न नांखो नीर–रोओ मत।

प्यारी न्यारी ना करूं, जां लग घट में सांस ।
रोम रोम में रम रही, ज्यूं फूलन में वास ।। ११६

सिधो सिधावौ सिध करौ, रहजो अपणी दाय ।
इण लाखीणी जीभ सू, जावौ कह्यौ न जाय ।। ११७

...

आज सखी हम युं सुण्यौ, पौ फाटत पिय गौण ।
पौ अर हिवड़े होड है, पहली फाटै कौण ।। ११८

सजण सिधासी हे सखी, प्रात उगंते भांण ।
बधजे म्हारी रातडी, कदे न होय विहाण ।। ११९

सजण सिधाया हे सखी, सूना करे आवास ।
गळे न पांणी ऊतरै, हिये न मावै सांस ।। १२०

सजण सिधाया हे सखी, भीणी ऊडै खेह ।
हिवडौ बादळ छाइयौ, नैण टबूकै मेह ।। १२१

---

११६ न्यारी–अलग जां लग–जब तक वास–सुगंध ।

११७ सिधावौ–विदा करने के लिए आदरसूचक शब्द अपणी–अपनी. दाय–पसन्द ।

११८ सुण्यौ–सुना. गौण–गमन. हिवड़े–हृदय में. कौण–कौन ।

११९ सिधासी–विदा होंगे भांण–सूर्य. बधजे–बढ़ना. विहांण–विहान, सवेरा ।

१२० सिधाया–विदा हुए आवास–घर गळे–गले में हिये–हृदय में ।

१२१ खेह–गर्द हिवड़ौ–हृदय. छाइयौ–छाया. टबूकै–टपकता है ।

सजण सिधाया हे सखी, हरियौ दुपटौ हाथ ।
सूनी करगा सेजड़ी, तन मन लेग्या साथ ॥ १२२

•

सजण सिधाया हे सखी, ऊभा आंगण वीच ।
नैणां छूटा चोसरा, काजळ माच्यौ कीच ॥ १२३

•

सजण सिधाया हे सखी, परवत देग्या पूठ ।
हियड़ौ काचा ताग ज्यूं, गयौ लड़ंगां तूट ॥ १२४

•

साल्ह चलंतै परठिया, आंगण वीखड़ियांह ।
सो मो हिये लगाड़िया, भरि भरि मूठड़ियांह ॥ १२५

•

सज्जण चाल्या हे सखी, दिस पूगळ दोड़ेह ।
सायधण लाल कवांण ज्यु, ऊभी कड़ मोड़ेह ॥ १२६

•

ढोलो चाल्यौ हे सखी, बाज्या विरह निसांण ।
हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुआ संधांण ॥ १२७

---

१२२ हरियौ–हरा. करगा–कर गये. सेजडी–सेज।

१२३ ऊभा–खडे थे. नैणा छूटा चोसरा–आंखो में आंसुओ की भडी लग गई. माच्यौ–मच गया।

१२४ परबत–पर्वत. काचा ताग–कच्चा धागा. लडगा तूट–लम्बे समय के लिए टूट गया।

१२५ साल्ह–साल्हकुमार, ढोला. परठिया–छोडे. वीखडियाह–पैरों के खोज. लगाडिया–लगाये. मूठडियाह–मुट्ठियां।

१२६ सायधण–स्त्री. कड मोडेह–कटि को मोडती है।

१२७ बाज्या–बजे. हाथे–हाथ से सधाण–सन्धि-स्थल।

सजण सिपाही हे सखी, किण विध बांधूं नेह ।
रात रहै दिन उठ चलै, आंधी गिणै न मेह ॥ १२८

मन जांणे हुवां बादळि, आभै जाय अड़ंत ।
वींझो चालै वाटड़ी, ऊपर छांय करंत ॥ १२९

मन जांणै हुवां बावड़ि, बागड़ री थळियांह ।
वींझो पावै घोड़ियां, पग दे पावड़ियांह ॥ १३०

मन जांणै हुवा बावळि, (ऊभां) थोभड़ री थळियांह ।
वींझो बाढ़ै कांवड़ी, छिबती आंगळियांह ॥ १३१

मन जांणै वड़लौ हुवां, (ऊगां) वेणप री थळियांह ।
वींझो ढाळै ढोलियौ, वळती छांहड़ियांह ॥ १३२

मन जांणै सीरख हुवां, वींटे घात वहंत ।
वींझौ ढाळै ढोलियौ, पासै हेट रहंत ॥ १३३

१२८ किण विध–किस तरह गिणै न–नहीं गिनता ।

१२९ आभै–आकाश से. अड़ंत–लग जाऊँ वींझो–नायक जिसका संगी से प्रेम था. वाटड़ी–बाट, राह ।

१३० बागड़–रेतीली ऊँची भूमि थळियांह–मरुस्थल पावड़ियांह–सीढ़ियों पर ।

१३१ बावळि–कटीली झाड़ी. छिबती आंगळियांह–हाथ में पकड़ने योग्य. बाढ़ै–काटे कांवड़ी–छड़ी ।

१३२ वेणप री–रास्ते की वळती–मुड़ती हुई ।

१३३ सीरख–रजाई. वींटे–बिस्तरे में घात–डाल कर. वहंत–चले. पासै हेट–करवट के नीचे ।

वीभाणंद वळेह, सैणल घर संपजे नहीं।
चित डूंगर चढ़ेह, जीवां जितै जोवां घणौ ॥ १३४

•

साजन बोळावे हूं खड़ी, ऊभी बजारां मज्भ।
लाख घरां री बसतड़ी, लागै बिरंगी अज्ज ॥ १३५

•

सजण बोळावे हूं वळी, ऊभी मिन्दर पूठ।
हिवड़ो काचा तार ज्यू, गयौ लड़ंगां तूट ॥ १३६

•

साजनिया सालै नहीं, सालै आईठांण।
भर भर बाथां नीरती, ठाला लागै ठांण ॥ १३७

•

साजन सिळी सनेह को, खटक रही दिल मांय।
नीकाळी निकळै नही, जड़हि कळेजा मांय ॥ १३८

•

साजन ऐसा कीजिये, जैसा कूए कोस।
पग दे पाछा ठेलिये, तोइ न मानै रोस ॥ १३९

•

---

१३४ वळेह–फिर संणल–नायिका का नाम. सपजे–होगी. डूगर–पहाड. चढेह–चढ कर. जोवां–देखती रहूँगी. घणौ–बहुत।

१३५ बोळावे–खोकर. ऊभी–खडी. मज्भ–बीचोबीच. बसतडी–बस्ती. बिरंगी–असुहावनी।

१३६ वळी–लौटी. मिन्दर पूठ–घर के पीछे।

१३७ सालै नही–खटकते नही. आईठाण–स्मृति-चिन्ह. नीरती–घोडो के लिए घास डालती थी।

१३८ सिळी–छोटा काटा. नीकाळी–निकालने पर।

१३९ कूए कोस–कूए का चरस. पाछा ठेलिये–चरस को पकडते समय पैर से पीछे ढकेलते हैं रोस–गुस्सा।

साजन ऐसा कीजिये, जैसा रेसम रंग।
सिर सूळी घड़ पिंजरे, तोही न छोडै संग ॥ १४०

साजन फूल गुलाब रौ, म्हे फूलन री वास।
साजन म्हारा काळजा, म्हे साजन री सांस ॥ १४१

साजनिया थांरे थको, वसूं अजूणे वास।
कांम करूं घर आपरै, जीव तुमारे पास ॥ १४२

हंजा तमीणो हेत, सर सारोही डोवियौ।
सर में पंखी ढेर, नहीं मुआवे हंज रे ॥ १४३

हंसां नै सरवर घणा, मुगणां घणा ज मित।
जाय पड़चा परदेस में, साजन आया चित ॥ १४४

आडा सर अवखी धरा, अळग पिया रौ देस।
आय न सकै अेकला, जिण विध विरंगा भेस ॥ १४५

---

१४० तोही–तो भी।

१४१ वास–सुगन्ध. काळजा–कलेजा।

१४२ थारे थको–आपके निमित्त. अजूणे–अन्य।

१४३ हंजा–प्रिय, हंस. सारोही–पूरा ही. डोवियौ–उथल-पुथल किया. मुआवे–समान।

१४४ मुगणां–अच्छे गुण वाले मित–मित्र. चित–याद।

१४५ अवखी–कठिन. अळग–दूर. भेस–भेष।

दव लागै उण डूगरां, बीज पड़ै उण देस ।
थे मन धरलौ ग्रौर सूं, करौ सुरंगा भेस ।। १४६

•

धरती धांन न नीपजै, तारा न मंडळ होय ।
म्हे मन धरलां ग्रवरसां, पिरथी परळै होय ।। १४७

•

ग्रांख्यां रा तारा ग्रवस, सुख स्वारथ रा सार ।
साहब सिर रा सेहरा, ग्रातम रा ग्राधार ।। १४८

•

धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि ।
मज्जीठां जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि ।। १४९

•

ग्राध तिलां रौ ग्राध तिल, तिण ग्राधां रौ ग्राध ।
ग्रवगुण ग्रो सज्जण तणौ, म्हे ग्रेतोहि न लाध ।। १५०

•

सज्जण वल्ले गुण रहे, गुण भी वल्लणहार ।
सूकण लागी वेलड़ी, गया ज सींचणहार ।। १५१

---

१४६ दव–ग्राग. बीज–बिजली. मन धरलो–प्रेम बाँध लो ।

१४७ ग्रवरसा–ग्रन्य से. पिरथी–पृथ्वी. परळै–प्रलय ।

१४८ ग्रवस–ग्रवश्य. साहब–पति. ग्रातम–ग्रात्मा ।

१४९ जेहा–जैसे. भरखमा–क्षमापूर्ण. नमणा–विनम्र. केळि–बेल वृक्ष, जिसकी टहनी बहुत मुडती है मज्जीठा–मजीष्ठ के समान. रच्चणा–ग्रनुरंजित होने वाला. दई–विधाता ।

१५० तणौ–का. ग्रेतोहि–इतना भी ।

१५१ वल्ले–चले गये सूकण लागी–सूखने लगी. सींचणहार–सींचने वाला ।

मन प्रवीण कुंदन मुहर, प्रेम प्रगासैं जोत ।
विरह अगन ज्यूं ज्यूं तपै, त्यूं त्यूं कीमत होत ॥ १५२

•

और रंग सै ऊतरैं, ज्यू दिन बीत्या जाय ।
विरह प्रेम बूटा रचै, दिन दिन वधै सवाय ॥ १५३

•

नोज किणी सूं लागजौ, वैरी छांनौ नेह ।
धुकै न धूंवौ नीसरै, जळै सुरंगी देह ॥ १५४

•

कूवौ व्है तौ डाक लूं, समद न डाक्यौ जाय ।
टावर व्है तौ राखलूं, जोवन (न) राख्यौ जाय ॥ १५५

•

तिणकौ व्है तौ तोडलू, प्रीत न तोडी जाय ।
प्रीत लगी छूटै नही, ज्यां लग जीव न जाय ॥ १५६

•

मसनेही समदां परे, बसत जु हिये मझार ।
कुसनेही घर आंगणे, जांण समंदां पार ॥ १५७

---

१५२ प्रेम प्रगासैं–प्रेम की ज्योति मे प्रकाशवान होते हैं।

१५३ सै–सभी. बूटा रचै–नवीन भाव-रेखायें उभारता है. वधै–बढ़ता है।

१५४ नोज–ईश्वर न करे छांनौ नेह–गुप्त स्नेह।

१५५ समद–समुद्र. टावर–बालक राखलू–रख लूं, सम्भाल लूं।

१५६ तिणकौ–तिनका. ज्यां लग–जब तक।

१५७ ससनेही–प्रेम करने वाला. हियै मझार–हृदय में।

हूं वळिहारी सज्जणा, सज्जण मो वळिहार ।
हूं सज्जण पग पांनही, सज्जण मो सिणगार ॥ १५८

•

साजन साजन हूं करूं, साजन जीव जड़ीह ।
साजन फूल गुलाव री, निरखूं घड़ी घड़ीह ॥ १५९

•

साजन तुझ मुख जोय, जग सारोही जोइयौ ।
ग्रेसौ मिळयौ न कोय, ज्यां देख्यां तुझ वीसरूं ॥ १६०

•

तन तरवर मन माछळी, पड़ी विरह के जाळ ।
तलफ तलफ जिय जात है, वेगा मिळौ जमाल ॥ १६१

•

पिव कारण सब ग्ररपिया, तन मन जोवन लाल ।
पिव पीड़ा जांणी नही, किणसू कहूं जमाल ॥ १६२

•

काची केरी घर पकी, वाग पकी है दाख ।
पिय रस कस दिन च्यार कौ, चाख सकै तौ चाख ॥ १६३

---

१५८ पानही–जूती. सिणगार–शृंगार ।

१५९ निरखूं–निरखती हूं, प्रेमसहित देखती हूं ।

१६० जोय–देख कर. जोइयौ–देखा । मिळयौ–मिला. ज्यां देख्यां–जिनको देखने से. वीसरू–भूल जाऊँ ।

१६१ माछळी–मछली. तलफ–तड़फ. वेगा–जल्दी. जमाल–कवि का नाम ।

१६२ ग्ररपिया–ग्रर्पण किये. किणसू–किससे ।

१६३ दिन च्यार कौ–चार दिन का ।

पनरै वरसां पोंचियां, पिय जागै तौ जाग ।
जोवन दूध उफांण ज्यूं, जाहि ठिकांणे लाग ॥ १६४

•

सब मुख देखै चंद कौ, मै मुख देखू तोय ।
मेरे तुम ही चंद हौ, मुख देख्यां मुख होय ॥ १६५

•

सोळै वरसां कांमणी, मगर पचीसां कंथ ।
ग्रे दिन फेर न ग्रावसी, जोवन रा महमंत ॥ १६६

•

जुरा झंप जोवन खिसै, घटै ज नवळौ नेह ।
ग्रेक दिहाड़ै सज्जणा, जम करसी जुध ग्रेह ॥ १६७

•

चंपाकेरी पांखडी, गूथू नवसर हार ।
जे गळ पहरूं पीव विन, लागै ग्रंग ग्रंगार ॥ १६८

•

मालण लाई चोसरा, फूल ग्रनोखा पोय ।
मन मुरझायौ देखतां, ऊतर दीन्हौ रोय ॥ १६९

१६४ पनरै–पन्द्रह. पोंचिया–पहुँचने पर दूध उफाण–दूध के उफान के समान.
ठिकाणे लाग–ठिकाने लग गया ।
१६५ तोय–तुम्हारा. देख्या–देखने से ।
१६६ कामणी–कामिनी. मगर पचीसा–पूर्ण जवानी में. महमत–मस्त ।
१६७ जुरा झंप–बुढ़ापे की झपेट. नवळौ–नवीन । दिहाड़ै दिन ।
१६८ चंपाकेरी–चंपे की. पांखडी–पखुड़ी ।
१६९ पोय–पिरो कर. देखतां–देखने पर ।

मालण थारा चोसरा, किण विध ग्रावै दाय ।
पीव विनां हूं पापणी, जीव ग्रमूज्यौ जाय ।। १७०

मन वाड़ी गुण फूलड़ा, पिय नित लेता वास ।
ग्रब उण थांनक रैण दिन, पिय विन रहूं उदास ।। १७१

कमळ वदन बिलखाइया, सूख्या सुख बनराय ।
विना पिया कै ग्रेक खिण, बरस बराबर जाय ।। १७२

प्यारा थांसूं पलक ही, वांधूं नहीं विजोग ।
उरबसिया मो ग्रावजौ, रसिया थारा रोग ।। १७२

प्रात तणी पांसी पड़ी, दासी हूं विण दाव ।
ग्रांख पलक सिर ऊपरै, थारा धरजे पांव ।। १७४

मैं कीन्हौ सांचै मतै, नायक तौसूं नेह ।
वण ग्रावै सौ देह वित, दाह विरह मत देह ।। १७५

---

१७० किण विध–किस तरह. दाय–पसन्द ग्रमूज्यौ जाय–घुटा जाता है ।

१७१ उण थांनक–उस स्थान पर. रैण–रात ।

१७२ बिलखाइया–मुरझा गये. खिण–क्षण ।

१७३ विजोग–वियोग. उरबसिया–उर में बसने वाला. ग्रावजौ–ग्राना ।

१७४ पांसी–फांसी. विण दाव–बिना दाम ।

१७५ सांचै मतै–सच्चे इरादे से वण ग्रावै–बन ग्रावे वित–धन ।

ब्रखां टपटपियांह, विण वादळे विछूटियां ।
आंखे आभ थयांह, नेह तुमारे साहिवा ॥ १७६

•

जिण दिस सज्जण थे वसौ, सोही वाजे वाव ।
थां लागां मुझ लागसी, सोही लाख पसाव ॥ १७७

•

मोरां विन डूंगर किसा, मेह विन किसा मल्हार ।
तिरिया विन तीजां किसी, पिव विन किसा सिंगार ॥ १७८

•

सहियां सोइ विदेस पिव, तनहि न जावै ताप ।
वावहिया आसाढ़ जिम, विरहण करै विलाप ॥ १७९

•

हिवड़ा भीतर पैस कर, ऊगौ सज्जण रूख ।
नित सूखै नित पल्लवै, नित नित नवळा दूख ॥ १८०

•

चंदण देह कपूर रस, सीतळ गंग प्रवाह ।
मन रंजण तन उल्हवण, कदे मिळेसी प्रवाह ॥ १८१

---

१७६ विण–बिना विछूटिया–छूटने पर, बरसने पर आभ–आकाश. थयांह–होने पर ।

१७७ वसौ–बसते हो वाजे–चलना वाव–हवा. लाख पसाव–लाख रुपये की कीमत का इनाम ।

१७८ डूंगर–पर्वत. तिरिया–त्रिया सिंगार–शृंगार ।

१७९ सहियां–सखियां. वावहिया–पपीहा ।

१८० हिवड़ा–हृदय. पैस कर–पैठ कर. रूख–वृक्ष. पल्लवै–पल्लवित होता है. नाह–नाथ, पति ।

१८१ उल्हवण–उल्लसित करने वाला. कदे–कब मिळेसी–मिलेंगे. नाह–पति ।

मालण थारा चोसरा, किण विध आवै
पीव विनां हूं पापणी, जीव अमूज्यौ

•

मन बाड़ी गुण फूलड़ा, पिय नित ले
अब उण थांनक रैण दिन, पिय विन

•

कमळ बदन बिलखाइया, सूख्या
बिना पिया कै अेक खिण, वरस

•

प्यारा थांसूं पलक ही, बां
उरबसिया मो आवजौ, र

•

प्रात तणी पांसी पड़ी,
आंख पलक सिर ऊपरै

•

मै कीन्हौ सांचै म
बण आवै सौ देह

---

१७० किण विध–किस
१७१ उण थांनक–
१७२ बिलखाइया–
१७३ विजोग–वि
१७४ पासी–
१७५ सांचै

अबकै जे प्रियतम मिळै, पलक न छोडूं पास ।
रोम रोम में छिप रहूं, ज्यूं कळियन में बास ।। १८८

•

मन मांणक गहणौ धरचौ, मिंत तुमारे पास ।
नेह व्याज अति बाढियौ, नहिं छूटण की आस ।। १८९

•

कूक करूं तौ जग हंसै, चुपकै लागै घाव ।
अैसे कठण सनेह कौ, किण विध करूं उपाव ।। १९०

•

ऊभी राय ज आंगणे, चंपे केरी छांय ।
आंगळियां री मूदड़ी, आवण लागी बांय ।। १९१

•

आठम आज सहेलियां, औ पख अैळौ जाय ।
हिये खटूकै साहिबौ, काटौ अेडी मांय ।। १९२

•

ढळतां आधी रातड़ी, जागै और न लोग ।
कै तौ जागै संत जन, कै तिय पीय विजोग ।। १९३

---

१८८ बास–सुवास, सुगंध ।

१८९ गहणौ–गहना. बाढियौ–बढ गया ।

१९० कूक–जोर से चिल्लाना. कठण–कठिन. उपाव–उपाय ।

१९१ राय ज आंगणे–राज आंगन, अपने आंगन में चंपे केरी–चम्पे की. बांय–बांह ।

१९२ पख–पक्ष, अैळौ–व्यर्थ. हिये–हृदय में. साहिबौ–प्रियतम ।

१९३ ढळतां–ढलने पर. तिय–स्त्री. पीय–पति. विजोग–वियोग ।

चंदमुखी हंसा गवणि, कोमळ दीरघ केस।
कंचन वरणी कांमणी, वेगो आव मिळेस ॥ १८२

विसारचा विसरै नहीं, अवर न आवै दाय।
भूल गया थे भंवरजी, लगन नवेली लाय ॥ १८३

साजन थारा नेह री, लागी लाय बलाय।
मन अभलाखां मर रह्यौ, जीव निसासां जाय ॥ १८४

बालम थे तौ भूलगा, काचौ नेह लगाय।
सो सांचौ म्हारे हिये, तन मन लीन्हौ छाय ॥ १८५

साजन बात सनेह की, किणसूं कहिये जाय।
जैसे छाया फूल की, मांही-मांहि समाय ॥ १८६

मन तूटौ आसा मिटी, नैणां खूटौ नीर।
ओळू कर कर आपरी, सूखौ सकळ सरीर ॥ १८७

---

१८२ गवणि–गामिनी कंचनवरणी–कंचन जैसे वर्ण वाली. वेगो–जल्दी. मिळेस–मिलना।

१८३ विसारचा–बिसारे हुए. अवर–अन्य. दाय–पसन्द।

१८४ अभलाखा–अभिलाषाओं से. निसासा–निश्वासों में।

१८५ भूलगा–भूल गये काचौ–कच्चा. सांचौ–सच्चा।

१८६ किणसूं–किससे. मांही-मांहि–अन्दर ही अन्दर।

१८७ नैणां खूटौ नीर–रोते-रोते आंसू सूख गये. ओळूं–याद. सकळ–समस्त।

साजन थां किसड़ी करी, किणसूं कहूं सुणाय ।
नहीं मिटण री या कदै, हिवड़ै लागी लाय ॥ २००

•

आज धुराऊ धूंधळो, मोटी छांटां मेह ।
भींजी पाग पधारस्यौ, जद जांणूंली नेह ॥ २०१

•

सांवण आयौ सायबा, सब बन पांगरियाह ।
आव विदेसी पांवणा, ए दिन दूभरियाह ॥ २०२

•

नैणां बरसै सेज पर, आंगण बरसै मेह ।
होडा होडी झड़ लगी, उत सांवण इत नेह ॥ २०३

•

पड पड़ बूंद पलंग पर, कड कड़ बीज कड़क्क ।
आज पिया बिन एकली, धड़हड़ जीव धड़क्क ॥ २०४

•

नाळा नदियां सूं मिळै, नदियां सरवर जाय ।
बिरछां सूं बेलां मिळै, ऐसी मही न जाय ॥ २०५

---

२०० किसड़ी–कैसी. सुणाय–सुना कर. मिटण री–मिटने की. या–यह।

२०१ धुराऊ–उत्तर दिशा. धूंधळो–धुंधला. पधारस्यौ–आओगे. जाणूंली–जानूंगी।

२०२ सायबा–पति. पांगरियाह–पल्लवित हुए. पांवणा–पाहुना. दूभरियाह–दुखदाई, कठिन।

२०३ नैणां–आंखें. आंगण–आंगन।

२०४ बीज–बिजली. एकली–अकेली।

२०५ सरवर–सरोवर. बिरछां सूं–वृक्षों से. बेलां–लताएँ।

दीप अगन मणि चंद्रमा, जगमग जोत सुधार ।
म्रग नैणी कांमण विनां, लागै सब अंधियार ।। १६४

•

वासां भूख न भाजही, ओसां भजै न प्यास ।
सज्जण रहतां संग मे, बरस थया इक मास ।। १६५

•

आखर पिय रे नाम के, लिखे कळेजा मांहि ।
डरती पांणी ना पिऊं, मतहि विधोरा जाहि ।। १६६

•

जीव उहां पिंजर इहां, हिवड़ै हूलाहूल ।
रे परदेसी वल्लहा, बेल विहूणा फूल ।। १६७

•

धूध न चूकै डूगरां, कड़वापण नीबांह ।
प्रीत न चूकै सज्जणा, देस विदेस गयांह ।। १६८

•

प्यारा वे दिन बोत था, बिच्च न समातौ हार ।
अबतौ मिळबौ कठण है, पड़ै ज बीच पहार ।। १६६

---

१६४ कामण–कामिनी. लागै–लगता है ।

१६५ वासा–सुगध से. भाजही–मिटेगी. ओसां–ओस से. थया–हुआ ।

१६६ आखर–अक्षर पिय रे–पिय के. विधोरा जाहि–मिट जाय ।

१६७ उहा–वहा इहा–यहाँ हूलाहूल–उथल-पुथल. वल्लहा–वल्लभ, प्रिय. बेल-विहूणा फूल–बिना बेल का फूल ।

१६८ धूध–कुहरा. न चूकै–समाप्त नही होती ।

१६६ मिळबौ–मिलना कठण–कठिन ।

सांवण आयौ सायवा, वेलां झुर रहि वाड़ ।
चात्रंग झूरै मेघ विन, पिय विन झुर रहि नार ॥ २१२

•

तीज नवेली तीजण्यां, तीज नवेली वीज ।
तीज नवेली वादळी, वरसत मो पर खीज ॥ २१३

•

काळी पीळी वादळी, वरसत भींज्यौ गात ।
ताजणिया लागा तिका, साजणिया विन सात ॥ २१४

•

मारंग वज्यौ रंग रच्यौ, उरे पसारचौ अंग ।
ऊभी थी लड़थड़ पड़ी, जांणै डसी भुजंग ॥ २१५

•

गाज नगारा चिमक खग, वरसत वाजत डाक ।
घटा नहीं आ कांम री, आवै फौज लड़ाक ॥ २१६

•

घर लीली गिरवर घुपै, घन मुधरौ गहरात ।
निस मारी खारी लगै, विन प्यारी वरसात ॥ २१७

---

२१२ सायवा–पति. वेला–लताएँ. चात्रग–चातक ।

२१३ नवेली–नवीन. तीजण्यां–तृतीया का त्यौहार मनाने वाली स्त्रियां ।

२१४ ताजणिया–चाबुक. साजणिया–सज्जन ।

२१५ मारंग–पवन, बादल रंग रच्यौ–विरह का रंग और गहरा हुआ. उरे–उर में ।

२१६ चिमक–बिजली. लड़ाक–लड़ाकू ।

२१७ घुपै–वर्षा में धुलते हैं. मुधरौ–धीमे-धीमे गहरात–गरजता है. निस–निशा ।

आज धुराऊ उनम्यौ, महलां बरसै मेह ।
बाहर था जे ऊबरै, भीजां मांझ घरेह ।। २०६

•

सौ कोसां बीजळ खिवै, ज्यांसूं किसा सनेह ।
किसना तिसना जद मिटै, आंगण वरसै मेह ।। २०७

•

च्यारां पासै घन घणौ, बीजळ खिवै अकास ।
हरियाळी रुत तौ भली, घर संपत पिव पास ।। २०८

•

सांवण आयौ सायबा, बांधौ पाग सुरंग ।
महल बैठ राजस करौ, लीला चरै तुरंग ।। २०९

•

बादळ काळा बरसिया, अत जळमाळा आंण ।
कांम लगौ चाळा करण, मतवाळा रंग मांण ।। २१०

•

सांवण आवण कह गया, करग्या कौल अनेक ।
गिणतां गिणतां घिस गई, आंगळियां री रेख ।। २११

---

२०६ उनम्यौ–उमड़ा. भीजा–भीगती हूं. मांझ घरेह–घर के अन्दर ।

२०७ बीजळ खिवै–बिजली चमकती है. ज्यांसूं–जिससे. सनेह–स्नेह. तिसना–तृष्णा ।

२०८ च्यारां पासै–च्यारु ओर. खिवै–चमकती है. संपत–सम्पत्ति ।

२०९ पाग–पगड़ी. राजस करौ–आनन्द करो. बरसिया–बरसे. जळमाळा–बादल ।

२१० कांम–कामदेव. चाळा–उत्पात. रंग मांण–आनन्द लूट ।

२११ कौल–वादा आंगळियां–अंगुलियां ।

जिण रुत वहु बादळ झरइ, नदियां नीर वहाय ।
तिण रुत साहिब वल्लहा, मो किम रयण विहाय ॥२२४

•

वीजळियां चहळावहळि, आभइ आभइ च्यारि ।
कदी मिळूंली सज्जणा, लांबी बांह पसारि ॥ २२५

•

वीजळियां चहळावहळि, आभइ आभइ अेक ।
कदी मिळूं उण साहिबा, कर काजळ की रेख ॥ २२६

•

वीजळियां नीलज्जियां, जळहर तूंही लज्जि ।
सूनी सेज विदेस पिव, मुधरइ मुधरइ गज्जि ॥ २२७

•

कहती संकूं मन व्यथा, विन कहियां तन ताप ।
मो जोवन मैमत हुवौ, विरहण करै विलाप ॥ २२८

•

आभ पड़ी बरसै अबै, मेहां झड़ी अमंत ।
अैसी रुत मे अेकला, कियां नचीता कंत ॥ २२९

---

२२४ झरइ–झरते हैं वल्लहा–वल्लभ, प्रिय रयण–रैन ।

२२५ चहळावहळि–चमक रही है आभइ–आकाश मिळूंली–मिलूंगी. सज्जणा–साजन, पति ।

२२६ कदी मिळूं–कब मिलूं उण–उस ।

२२७ नीलज्जियां–निर्लज्ज. जळहर–बादल. मुधरइ-मुधरइ–मधुर-मधुर. गज्जि–गर्जन करो ।

२२८ संकूं–शंकित होती हूं. जोवन–यौवन. मैमत–मदोन्मत्त. विरहण–विरहिनी ।

२२९ आभ–आकाश. अबै–अब. कियां नचीता–निश्चिन्त कैसे हो. कंत–पति ।

घूम घटा घर घालियौ, ऊपर लूंब अछेह ।
बालम नित बरसावजौ, महळां रंगभर मेह ।। २१८

•

पख पड़वा सू ओलरचौ, कर सूती सिणगार ।
आयौ न धण रौ साहिबौ, दिवौ न खंडै धार ।। २१६

•

पवन की फौजां चढ़ी, कोयल वीण वजाय ।
बोल पपीहा पिया पिया, औ दुख सह्यौ न जाय ।। २२०

•

बीजळियां अंबर चढ़ी, मही ज वूठा मेह ।
बोलण लागा दादरा, सालण लगौ सनेह ।। २२१

•

आज धरा दिस उनम्यौ, काळी घड़ सिखरांह ।
वा धण देसी ओळभा, कर कर लांबी बांह ।। २२२

•

सांवण आयौ साहिबा, पगे विलूंबी गार ।
ब्रच्छ विलूंबी वेलड़यां, नरां विलूंबी नार ।। २२३

---

२१८ घर घालियौ–एक ही जगह घूम रही है. अछेह–लगातार ।

२१६ पख पड़वा सूं ओलरचौ–पक्ष के प्रारंभ से ही बरस रहा है. धण–स्त्री. दीवौ–दीपक ।

२२० कोयल–कोकिल ।

२२१ बीजळिया–बिजलियां दादर–दादुर सालण लगौ–कष्ट देने लगा. सनेह–स्नेह ।

२२२ धरा दिस–उत्तर दिशा उनम्यौ–उमडा. घड–घटा. सिसराह–शिखरों पर. ओळभा–उलाहने ।

२२३ पगे–पैरों मे विलूंबी–लिपट गई ।

पीहू पीहू करण री, वुरी पपीहा वांण ।
थारौ सहज सुभाव यौ, म्हारै लागै वांण ॥ २३६

•

पपिहा चोंच कटाय दूं, ऊपर भुरकूं लूण ।
पिव म्हारौ हूं पीव री, थूं पिव कहै स कूण ॥ २३७

•

अरे पपीहा वावळा, आधी रात न कूक ।
होळै होळै सुळगती, सो तैं डारी फूंक ॥ २३८

•

कुरझड़ियां कळियळ किये, सरवर पहली तीर ।
निस भर सज्जण सल्लिया, नयणे वूठा नीर ॥ २३६

•

सारसडी मोती चुगै, चुगै त कुरळै काय ।
सगुण पियारा जे मिळै, मिळै त विछड़ै काय ॥ २४०

•

राते सारस कुरळिया, गूंजि रया सब ताल ।
जांकी जोडी वीछड़ी, तांकौ कूण हवाल ॥ २४१

---

२३६ करण री–करने की. वाण–आदत थारौ–तेरा. यौ–यह ।

२३७ कटाय दू–कटवा दूं. म्हारौ–मेरा. पीव री–पति की. कूण–कौन ।

२३८ वावळा–पागल होळै–धीरे ।

२३६ कुरभडियां–क्रौंच पक्षी. कळियळ किये–कोलाहल की आवाज. सज्जण–साजन सल्लिया–पीड़ित किया. नयणे–नैनों से. वूठा–वरसा ।

२४० सारसडी–वगुली. चुगै–चुगती है. कुरळै–रोती है. काय–क्यों. सगुण–गुणों वाला. जे मिळै–यदि मिलता है ।

२४१ राते–रात को. कुरळिया–करुण स्वर में वोले. जांकी–जिनकी. तांकौ–उनका. कूण–कौन. हवाल–हाल ।

आसा आसा ऊमड़ै, चौमासे घण थाट।
काळी घटा निहारतां, प्यारी जोवै बाट ॥ २३०

आभ विलूंवै घरण सूं, वीज सळावा लेह।
कंथौ कंटक हुय रह्यौ, घण वरसंते मेह ॥ २३१

घण गाजै विजळी खिवै, वरसै वादळ वार।
साजन विन लागै सखी, अंग पर बूंद अंगार ॥ २३२

डूंगरियां रा मोरिया, पीहरिया रा मित।
ज्यूं-ज्यूं सांवण ओलरै, त्यूं त्यूं आवै चित ॥ २३३

लोरां सांवण लूंवियौ, घोरां घण घरराय।
मांणीगर रंग मांण अव, प्याला भर मद पाय ॥ २३४

वावहिया नै विरहणी, यां विउ हेक सभाव।
जव ही वरसै घन घणौ, तवहि कहै पिव आव ॥ २३५

---

२३० ऊमडै-उमडती है. घरण-बादल. थाट-समूह, छटा. जोवै-देखती है।

२३१ धरण सू-धरनी से. वीज-बिजळी. सळावा लेह-रह-रह कर चमकती है. कंथौ कटक हुय रह्यौ-पति विरह-वेदना का काटा बना हुआ है।

२३२ घरण गाजै-वादल गरजते है. खिवै-चमकती है. लागै-लगते हैं।

२३३ डूंगरिया रा-पर्वतो के. पीहरिया रा-पीहर के. ओलरै-झूम-झूम कर वरसता है. आवै चिन्त-याद आते हैं।

२३४ लोरा-बादलो के झुण्ड घोरां घरण-बादलों की आवाज. माणीगर-आनन्द लूटने वाला. रग माण-आनन्द लूट।

२३५ वावहिया-पपीहा नै-और. विउ-दोनो. हेक-अेक. सभाव-स्वभाव. घणौ-वहुत।

चैत मास की चांनणी, कोयल विच कूकंत ।
पिव प्यारी नै पीव विन, वैरण लगै बसंत ॥ २४८

•

कहौ लुवां कित जावसौ, पावस घर पड़ियांह ।
हिये नवोढ़ा नार रै, बालम वीछड़ियांह ॥ २४६

•

सर सरिता जळ सूखिया, मरिया दादर जीव ।
तर झड़िया लागी तपत, अब घर आवौ पीव ॥ २५०

•

सुहिणा आया फिर गया, मैं सर भरिया रोय ।
आव सुहागण नीदड़ी, सजणा देखू सोय ॥ २५१

•

सपने सज्जण पाइया, हूं सूती गळ लाय ।
और न खोलूं आंखड़ी, मत सज्जण फिर जाय ॥ २५२

•

जांणूं हूं हिवड़ै हुवौ, सैणां हंदो साथ ।
जे सपनौ सांचौ हुवै, तौ घालूं गळबाथ ॥ २५३

---

२४८ चैत–चैत्र. कूकत–कूकती है. वैरण–वैरिन. लगै–लगती है ।

२४६ लुवा–लुएं. जावसौ–जाओगी. घर पड़ियांह–धरती पर आने पर. हिये–हृदय में. वीछड़ियाह–बिछुड़ने पर ।

२५० सूखिया–सूख गये. मरिया–मर गये. तर–वृक्ष. तपत–गर्मी ।

२५१ सुहिणा–स्वप्न. सर–तालाब. भरिया–भरे. रोय–रो कर. सुहागण–सुहागिन. नीदड़ी–निद्रा ।

२५२ सपने–स्वप्न मे पाइया–पाया. गळ लाय–गले से लगा कर. आंखड़ी–आंख. सज्जण–साजन ।

२५३ जाणू–जानू. हिवड़ै–हृदय मे. सैणा हंदो–प्रिय का. सपनौ–स्वप्न. सांचौ–सच्चा. घालू–डालूं गळबाथ–गलबांह ।

मांणस सूं पंखी भला, जो नित उडे मिळंत ।
अौर सनेही बापड़ा, अळगा झुरे मरंत ।। २४२

•

कुरझड़ियां द्यौ पांखड़ी, थांकउ विनउ वहेसि ।
सायर लंघी प्री मिळउ, प्री मिळ पाछी देसि ।। २४३

•

कागा पीव न आवियौ, कियौ बडेरौ चित्त ।
लकड़ी होय त दोय जळि, हूं अेकलड़ी नित्त ।। २४४

•

थूं क्यूं बोल्यौ मोरिया, ऊंचौ चढ़े खजूर ।
थारै मेह नजीक है, म्हारै साजन दूर ।। २४५

•

म्हे मगरां रा मोरिया, काकर चूण करंत ।
रुत आयां बोलां नहीं, हीया फूट मरंत ।। २४६

•

फागण मास बसंत रितु; नव तरुणी नव नेह ।
कहौ सखी कैसे सहूं, च्यार अगन इक देह ।। २४७

---

२४२ माणस–मानस, मनुष्य. पंखी–पक्षी. उडे–उड कर. मिळंत–मिलते हैं. सनेही–स्नेही. बापडा–बेचारे. अळगा–दूर. झुरे–विरह व्यथा से रुदन करना ।

२४३ द्यौ–देओ. पाखडी–पाँखें. थाकउ–तुम से. विनउ–विनती करती हूं. सायर–सागर. लघी–लांघ कर. प्री मिळउ–प्रियतम से मिलूं. पाछी देसि–वापिस दे दूंगी ।

२४४ आवियौ–आया. कियौ–किया. बडेरौ–बडा, धैर्यवान. अेकलडी–अकेली ।

२४५ बोल्यौ–बोला. मोरिया–मोर. नजीक–नजदीक ।

२४६ मगरा रा–पठार के. चूण करत–चुगते हैं । रुत–ऋतु ।

२४७ फागण–फागुन. तरुणी–तरुनी. अगन–अग्नि, जलन. इक–अेक ।

चैत मास की चांनणी, कोयल विच कूकंत ।
पिव प्यारी नै पीव बिन, वैरण लगै वसंत ॥ २४८

•

कहौ लुवां कित जावसौ, पावस धर पड़ियांह ।
हियै नवोढ़ा नार रै, बालम वीछड़ियांह ॥ २४९

•

सर सरिता जळ सूखिया, मरिया दादर जीव ।
तर झड़िया लागी तपत, अब घर आवौ पीव ॥ २५०

•

सुहिणा आया फिर गया, मैं सर भरिया रोय ।
आव सुहागण नीदड़ी, सजणा देखूं सोय ॥ २५१

•

सपने सज्जण पाइया, हूं सूती गळ लाय ।
और न खोलूं आंखड़ी, मत सज्जण फिर जाय ॥ २५२

•

जाणूं हूं हिवड़ै हुवौ, सैणां हंदो साथ ।
जे सपनौ सांचौ हुवै, तौ घालू गळबाथ ॥ २५३

---

२४८ चैत–चैत्र. कूकत–कूकती है. वैरण–वैरिन. लगै–लगती है ।

२४९ लुवा–लुयें. जावसो–जाओगी. धर पड़ियाह–धरती पर आने पर. हिये–हृदय मे. बीछड़ियाह–बिछुड़ने पर ।

२५० सूखिया–सूख गये. मरिया–मर गये. तर–वृक्ष. तपन–गर्मी ।

२५१ सुहिणा–स्वप्न. सर–तालाब. भरिया–भरे. रोय–रो कर. सुहागण–सुहागिन. नीदड़ी–निद्रा ।

२५२ सपने–स्वप्न मे. पाइया–पाया. गळ लाय–गले मे लगा कर. आंखड़ी–आंख. सज्जण–साजन ।

२५३ जाणू–जानू. हिवड़ै–हृदय मे. सैणा हंदो–प्रिय का. सपनो–स्वप्न. साचो–सच्चा. घालूं–डालूं गळबाथ–गलबांह ।

चाकरियां गरडा भया, दमड़ां चित्त दियाह् ।
वळे विदेसी बालमा, कहड़ा कांम कियाह् ।। २५४

•

जीव उहां पिंजर इहां, हिवड़े हूला-हूल ।
रे परदेसी वल्लहा, बेल विहूणा फूल ।। २५५

•

वाला ठाकर आव घर, केम फिरै परदेस ।
धन बूढापै संपजे, अै दिन कद आवेस ।। २५६

•

सोनो लावण पिव गया, सूनौ करग्या देस ।
सोनो मिळयौ न पी मिळया, चांदी होग्या केस ।। २५७

•

पतरी कितरी हूं लिखू, हित री चित री वात ।
इतरी तितरी ऊपजै, कागद में नहिं आत ।। २५८

•

आंसू नैणां उभळ कर, मेह झड़ी मच जाय ।
पाती लिखतां पीव नै, जळ छाती भर जाय ।। २५९

---

२५४ चाकरिया–चाकरी में. गरडा–वृद्ध. दमड़ां–पैसे में. वळे–लौट आ. कहडा–कैसा ।

२५५ उहा–वहां. इहां–यहां. हिवडे–हृदय में. हूला-हूल–हलचल. वल्लहा–वल्लभ. बेल विहूणा–बिना बेलि का ।

२५६ वाला–प्रिय. सपजे–शामिल करना. अै–ये. कद–कब. आवेस–आएंगे ।

२५७ लावण–लाने के लिए मिळयो–मिला. होग्या–हो गये ।

२५८ पतरी–पत्र कितरी–कितनी. हित री–हित की. ऊपजै–उत्पन्न होती है ।

२५९ नैणा–नैनों से उभळ कर–उछल कर. लिखता–लिखने समय. पीव नै–पति को. जळ छाती भर जाय–हृदय द्रवीभूत हो जाता है ।

कागद गळिया आंसुवां, नैणे नेह विलग्ग ।
पड़ि पड़ि बूंद पयोहरां, उवट उवट तिण लग्ग ॥ २६०

•

पंथी हाथ संदेसड़ौ, धण विललंती देह ।
पग सूं काढ़ै लीहटी, उर आंसुवां भरेह ॥ २६१

•

पंथी अेक संदेसडौ, लग ढोले पहुंचाइ ।
जोवन जावै प्राहुंणौ, वेगेरौ घर आइ ॥ २६२

•

पंथी अेक संदेसड़ौ, लग ढोले पहुंचाइ ।
जंघा केळिन फळि गई, स्वाति ज वरसउ आइ ॥ २६३

•

ढाढी जे ढोलो मिळै, कहै अमीणी वत्त ।
धण कणियर री कंब ज्यू, सूखी तोय सुरत्त ॥ २६४

•

कागद कौ लिखवौ किसौ, कागद सिस्टाचार ।
वो दिन भलो ज ऊगसी, मिळसां वांह पसार ॥ २६५

---

२६० गळिया—गल गया आंसुवा—आंसुओं से. पयोहरा—पयोधरों पर. उवट उवट—घुल घुल कर ।

२६१ धण—स्त्री. विललती—बिलखती हुई. लीहटी—लकीर. भरेह—भरती है।

२६२ संदेसडौ—सदेसा. लग ढोले—ढोले तक. पहुचाइ—पहुँचा दो प्राहुंणौ—पाहुना वेगेरौ—शीघ्र ।

२६३ केळिन—केलि वृक्ष. फळि गई—फल गई वरसउ—बरसो ।

२६४ ढाढी—गाने वाली एक जाति का व्यक्ति. ढोलो—नायक. मिळै—मिले अमीणी—मेरी. वत्त—बात. कणियर—कनेर. कंब—छड़ी. ज्यू—जैसे ।

२६५ लिखवौ—लिखना. किसौ—कौनसा, कैसा मिळसां—मिलेंगे ।

संदेसा मत मोकळौ, प्रीतम तूं आवेस ।
आंगळड़ी ही गळि गई, नयण न वांचण देस ॥ २६६

•

अगानैणी वाचजौ, सैणां पत्र सनेह ।
वैणां हीये वरतजौ, नैणां हुंदो नेह ॥ २६७

•

आवां मास असाढ़, प्रथम पख में पांवणा ।
महळ रखौ मन गाढ़, अब मत लिखजौ ओळभा ॥ २६८

•

लीला किम ढीलौ वहै, पंथ पयाणौ दूर ।
गोख उडीकै कांमणी, जोवन में भरपूर ॥ २६९

•

ऊंची चढ चढ गोखड़े, ऊंची ऊंची होय ।
जोऊं मारग राज री, आवण किण दिन होय ॥ २७०

•

अहर फरक्कै तन फुरै, तन फुर नैण फुरंत ।
नाभी मडळ सह फुरै, सांझै नाह मिळंत ॥ २७१

---

२६६ मोकळौ–भेजो. आवेस–आना. आंगळडी–अंगुली. गळि गई–गल गई. नयण–नैन ।

२६७ अगानैणी–अगनैनी. वाचजौ–पढ़ना. सैणा–प्रिय का. सनेह–स्नेह. वैणां–वचनों का. हियै–हृदय में. नैणां हुंदो–आंखो का ।

२६८ आवा–आयेंगे. पख–पक्ष. पावणा–पाहुना. महळ–महिला स्त्री. गाढ़–धैर्य. ओळभा–उलहाना ।

२६९ लीला–नीले रंग का घोड़ा. पयाणौ–चलना. गोख–गवाक्ष. उडीकै–राह देखती है. कामणी–कामिनी. जोवन–यौवन ।

२७० गोखड़े–गवाक्ष में. जोऊं–देखती हूं. मारग–मार्ग. राज री–आपका. आवण–आना ।

२७१ अहर–अधर. फरक्कै–फड़कते हैं. सह–सब. सांझै–संध्या समय. नाह–नाथ, पति. मिळंत–मिलेंगे ।

साजण ग्रायां की कहै, कोइ ग्रचांणक ग्रांण ।
तौ सजनी ताकौ हरख, देऊं वधाइ प्रांण ॥ २७२

•

जिण री जोऊं वाट, ते सज्जण दीसै नही ।
हिवड़ा मांहि उचाट, सु जनम क्यूं जासी जसा ॥ २७३

•

देखि सुरंगी डाळि, जांणूं जाइ विलगुं जसा ।
ग्रास करूं हूं ग्राळि, करम विनां मिळवौ किसौ ॥ २७४

•

प्रेम विहूंणी प्रीत, जोग्रे न मन ठरै जसा ।
रस विन पांनां रीत, रंग न ग्रावै राचणौ ॥ २७५

•

ग्रेक पखीणी ग्रंग, प्रीत कियां पछताइये ।
दीपक देखि पतंग, जळ वळ राख हुवै जसा ॥ २७६

•

मिळण भलौ विछड़ण बुरौ, मिळ विछड़ौ मत कोय ।
फिर मिळणा हंस बोलणा, देव करै जद होय ॥ २७७

२७२ साजण–साजन. ग्राया की–ग्राने की ग्राण–ग्राकर. हरख–हर्षित होकर ।

२७३ जिण री–जिसकी. जोऊं–देखती हूं दीसै–दिखता. हिवड़ा माहि–हृदय मे. जसा–कवि का नाम ।

२७४ देखि–देख कर. डाळि–टहनी जाणू–जानती हूं । विलगु–लिपट जाऊ. ग्राळि–व्यर्थ मिळवो–मिलना किसो–कौनसा ।

२७५ प्रेम विहूणी–विना प्रेम की. जोग्रे–देख कर ।

२७६ ग्रेक पखीणी–एक पक्ष की. हुवै–होता है ।

२७७ मिळण–मिलना. भलौ–ग्रच्छा विछड़ण–बिछुड़ना कोय–कोई. बोलणा–बोलना ।

जद सुध ग्रावत पीव की, विरह उठत तन जाग ।
ज्यूं चूनै की कांकरी, जद छिड़कौ तद ग्राग ।। २७८

नैणे काजळ ना किया, ना गळि पहिरे हार ।
मुख तंबोळ न खाइया, ना कछु किया सिंगार ।। २७९

तन तरवर फळ लग्गिया, दोइ नारंग संपूर ।
सूकण लागा विरह भळ, सीचण हारा दूर ।। २८०

पांन भड़ै सब दु:ख के, वेलि गई तन सूखि ।
दूतर राति वसंत की, गया पियारा मूकि ।। २८१

तिलक न खसियौ तरुणि कौ, रंग भर रमी न रैण ।
मांणक लड़ छूटी नही, ग्रजहूं काजळ नैण ।। २८२

सुन्दर घट घायल किया, बहगी धार दुधार ।
हार मनी पिय म्यांन कर, नैणां की तरवार ।। २८३

---

२७८ ग्रावत–ग्राती है पीव–पति. चूनै की कांकरी–चूने की बुझी हुई कंकरी पर जब कभी पानी छिड़का जाता है तो उसमें से धुंग्रा निकलता है ।

२७९ नैणे–नैनो मे. काजळ–कज्जल. गळि–गले में. न खाइया–नहीं खाया. सिंगार–शृंगार ।

२८० फळ–फल लग्गिया–लगे. दोइ नारंग–नारंगी के समान दो कुच. सूकण लागा–सूखने लगे. भळ–ग्राग. सीचणहारा–सीचने वाला ।

२८१ दूतर–दुस्तर मूकि–छोड कर ।

२८२ न खसियौ–मिटा नही. तरुणि–तरुनी. रैण–रैन. छूटी नही–ग्रस्त-व्यस्त नही हुई. ग्रजहूं–ग्रभी तक नैण–नैन ।

२८३ सुन्दर–नायिका का नाम. दुधार–तलवार. हार मनी–हार मानी. म्यांन कर–म्यान मे डाल ली. नैणां की–नैनो की ।

सुख कारण सायर चली, सायर घोर अंधार ।
मन मिळियौ ममता मरी, कारज सरचौ कमाल ।। २८४

•

मालण वेचै कमळ कूं, अपणा वदन छिपाय ।
लाज कहूं सूं करत है, कारज कौण जमाल ।। २८५

•

जमला जोवन फूल है, देखत ही कुमळाय ।
वाट वटाऊ पंथ सिर, वैठत ही उठ जाय ।। २८६

•

जमलौ दिल रौ लालची, मन में फिरै दलाल ।
धणी बसत वेचै नही, रसतौ पकड़ जमाल ।। २८७

•

सोनौ वायौ न ऊगै, मोती फळै न डाळ ।
रूप उधारौ नी मिळै, भूला फिरौ जमाल ।। २८८

•

जमला मै जोगण भई, पैरे अग की खाल ।
वन-वन सारौ ढूढ़ियौ, करत जमाल जमाल ।। २८९

---

२८४ सायर–सागर. घोर अधार–अत्यधिक अंधेरा. मिळियौ–मिला. कारज सरचौ–कार्य हो गया ।

२८५ वेचै–वेचती है. अपणा–अपना. वदन–मुख. कहूं सूं–किससे. कारज–कार्य ।

२८६ कुमळाय–कुम्हला जाता है. वटाऊ–राहगीर ।

२८७ जमलौ–जमाल, नायक. धणी–मालिक. वसत–वस्तु ।

२८८ सोनौ–सोना. वायौ–बोया हुआ. फळै न–नहीं फलते. डाळ–डाल ।

२८९ जोगण–जोगन. पैर–पहिन कर. ढूढ़ियौ–ढूंढा ।

काफी प्याला प्रेम का, पीवणहार सुजांण ।
पीवण वाळा सिक रह्या, मगन भया सुण ग्यांन ।। २६०

•

काछब काछ धणीह, बसौ तौ बासौ म्हे दां ।
दूध पखाळूं देह, पिंजस दळावूं पोढ़णे ।। २६१

•

(थे) राजवियां री धीह, (म्हे) पांणी मां'ला काछबा ।
जोख न धातौ जीह, पर घर बासौ नी लियां ।। २६२

•

वाळी बरत न वाढ़, कूम्रे मां'ला काछवा ।
बिन खूनो मत मार, कांमण थारी काछबा ।। २६३

•

जोसी मोटी जात, मत कर वात विरोध री ।
ग्राई हूँ अधरात, कंवर निरखण काछबौ ।। २६४

•

दूजा दूजै बेस, निरमळ बागै काछबौ ।
मूछां बळ सवसेस, मोमदसाही मोळियौ ।। २६५

---

२६० काफी–रागिनी का नाम. पीवणहार–पीने वाला. पीवण वाळा–पीने वाले. सिक रह्या–ग्रत्यत ग्रभिभूत हो रहे है. मगन–मग्न ।

२६१ काछब–नायक का नाम. काछ धणीह–कच्छ देश का मालिक. बासौ–रहने की सुविधा पिंजस–विशेष प्रकार का पिलंग. पोढणे–सोने के लिए ।

२६२ राजविया री–राजा की. धीह–बेटी. पाणी मा'ला–पानी मे रहने वाला. काछवा–कछुग्रा जोख–जोखिम. जीह–जीव. पर–पराया ।

२६३ वाळी बरत–कुए मे डाली हुई मोटी रस्सी (लाव). न वाढ–मत काट. कामण–कामिनी. स्त्री. थारी–तुम्हारी ।

२६४ जोसी–जोशी मोटी जात–ऊँची जात. निरखण–देखने को ।

२६५ दूजा–दूसरे. बेस–पोशाक. निरमळ बागै–स्वच्छ वस्त्रो मे. वळ–मरोड. मोमदसाही मोळियौ–विशेप रगो का साफा ।

नाडी अळियर नीर, झूल्यां जळ भागै नहीं ।
सुखलिणी रै सरीर, कऊ लगागौ काछवा ॥ २९६

•

तूं बेगड़ौ वणास, धर जीपण धनराज रा ।
अड़वड़िया आधार, कंध न राळे काछवा ॥ २९७

•

काछव पाछल फोर, कंवारी काठे चढ़ै ।
चढ़ै तौ चढ़ण दो'र, वळती (मे) पूळी नाखसां ॥ २९८

•

सांमेरी संसार में, कूड़ा विणज कियाह ।
झड़प मारी हंस नै, कागा हाथ लियाह ॥ २९९

•

सांमेरी संसार मे, जीयै जित लग मांण ।
जरियन ऊभा वारणै, कसियोड़ा कैकांण ॥ ३००

•

सांमेरी डूंगर चढ़ी, हाथ बजावत वीण ।
कांटौ भागौ प्रेम रौ, दूखै ज्यांरै पीर ॥ ३०१

---

२९६ अळियर नीर–समुद्र जितना पानी. झूल्यां–नहाने से. सुखलिणी–सुख में लीन सुन्दरी. कऊ–आग जलाने का कुंड ।

२९७ बेगड़ौ–मजबूत बैल. जीपण–जीतने वाला.
धनराज रा–धनराज के पुत्र. अड़वड़िया आधार–डिगने वाले के लिए आधार.
कंध न राळे–दूर न हटना ।

२९८ पाछल फोर–मुड़ कर देख. काठे चढ़ै–चिता पर चढ़ रही है ।

२९९ सांमेरी–नायिका का नाम कूड़ा–झूठा. विणज–व्यापार. हंस नै–हंस को ।

३०० जीयै–जीती है. जित लग–जब तक. मांण–आनन्द लूट. जरियन–मौत के दूत.
वारणै–दरवाजे पर. कसियोड़ा–कसे हुए ।

३०१ डूंगर–पर्वत. ज्यांरै–जिनके ।

जिण घर घोड़ी लीलड़ी, ऊजळ चिंती नार।
तिण घर सदा उजासणौ, दिवलै तेल न बाळ ॥ ३०२

•

वणगौ जात कमीण, नाई वणगौ नागजी।
दिल में दाखी हीण, (हूँ) निकळंक बैठी नागजी ॥ ३०३

•

नागा नागर वेल, पसरै पण फूलै नहीं।
बाळपणै री मेळ, बिछड़ै पण भूलै नहीं ॥ ३०४

•

नागा नगर गयांह, मनमेळू मिळिया नहीं।
मिळिया बिन मिळियाह, जांसूं मन रळिया नहीं ॥ ३०५

•

सूता खूंटी खांच, बतळायां बोलौ नहीं।
कदे'क पड़ियां कांम, नोरा करसौ नागजी ॥ ३०६

•

जोड़ै ज्यूंही जोड़, बिणजारा रा व्याज ज्यूं।
तनक जोड़ मत तोड़, नातौ तांतौ नागजी ॥ ३०७

---

३०२ लीलड़ी–नीले रंग का घोड़ा. ऊजळ चिंती–उज्ज्वल चित्त वाली. उजासणौ–उजाला. दिवलै–दीपक में।

३०३ वणगौ–बन गया. कमीण–निम्न जाति का. नागजी–नायक का नाम. दाखी हीण–निराश हो गया।

३०४ बाळपणैं री मेळ–बचपन का स्नेह बिछड़ै–बिछुड़ता है. पण–परन्तु।

३०५ मनमेळू–एक मन होकर मिलने वाले. बिन मिळियाह–ऊपरी मन से. जासूं–जिनसे. रळिया–मिला।

३०६ सूता खूंटी खांच–तान कर सो गये. बतळाया–बोलाने पर. कदे'क–कभी न कभी. नोरा करसौ–आजीजी करोगे।

३०७ ज्यूंही–जैसे ही तनक–तनिक नातौ–सम्बन्ध।

चलतां हलतां चीत, सूतां बैठां सारखी ।
पड़ै न जूनी प्रीत, नैण लग्योड़ी नागजी ॥ ३०८

•

नागा नवळौ नेह, जिण तिण सूं कीजे नहीं ।
लीजे परायौ छेह, आप तणौ दीजे नहीं ॥ ३०९

•

आहियौ आसाडाह, गाजे नै गुड़कौ कियौ ।
वूठौ भेदाळाह, निवळी भुय पर नागजी ॥ ३१०

•

चोटी चौथै मास, गूथी गुणां सजाय नै ।
हेताळू री गांठ, जाभै दुख में नी खुलै ॥ ३११

•

कुळ मांही कुम्हार, माटी रा मेळा करै ।
चाक उतारणहार, नवौ घड़ीदे नागजी ॥ ३१२

•

तूं हीरावळ हीर, (म्हनै)मोहराता मिळसी घणा ।
पाटण रौ पटचीर, नवौ ओढ़ाग्यौ नागजी ॥ ३१३

---

३०८ चीत–यादगार. सारखी–बराबर. नैण लग्योडी–आंखों से लगी हुई ।

३०९ नवळौ–नवीन. नेह–स्नेह. जिण तिण सू–जिस किसी से. परायौ–पराया. छेह–अंत. आप तणौ–अपना ।

३१० आहियौ–आकर. आसाडाह–आषाढ़ का बादल. गाजे नै–गर्ज कर. गुड़कौ–गड़गड़ाहट. वूठौ–बरसा. भेदाळाह–भेद वाला निवळी–कमजोर. भुय–जगह ।

३११ गुणां–गुणों से. सजाय नै–सज्जित करके. हेताळू–प्रेमी. जाभै–गाढे ।

३१२ कुळ–कुल. चाक उतारणहार–चाक पर वस्तुएं बनाने वाले. नवौ–नया. घड़ीदे–घड़ दे ।

३१३ हीरावळ–बढ़िया ज्यों कबन. मोहराता–प्रेम के रंग में रंजित. मिळसी–मिलेंगे. घणा–बहुत. पाटण–पाटन शहर. ओढ़ाग्यौ–ओढ़ा गया ।

देखौ दोरा दो'र, सदा अेक गत सारसां ।
आवै कदे न और, जाय जिसा दिन जेठवा ।। ३१४

दरसण हुवा न देव, भेव विहूणा भटकिया ।
सूना मिन्दर सेव, जूण गमाई जेठवा ।। ३१५

डहक्यौ डंफर देख, वादळ थोथौ नीर विन ।
हाथ न आई हेक, जळ री बूंद न जेठवा ।। ३१६

टोळी सूं टळतांह, हिरणां मन माठा हुवै ।
वाल्हा वीछंतांह, जीणौ किण विध जेठवा ।। ३१७

जोड़ी जग मे दोय, चकवै नै सारस तणी ।
तीजी मिळी न कोय, जो जो हारी जेठवा ।। ३१८

जेठवा जळ इक जात, जळ में जात हुवे नही ।
आव वरे री भांत, पांणी पा वरसा तणौ ।। ३१९

---

३१४ अेक गत–एक ही गति. सारसा–बगुले और बगुली का जोड़ा. जाय जिसा–जाने वालों के समान ।

३१५ दरसण–दर्शन. हुवा–हुए. भेव–भेष. विहूणा–तरह-तरह के. सेव–सेवा करके. जूण–जिन्दगी ।

३१६ डहक्यौ–अत्यन्त प्रसन्न हुआ. वादळ थोथौ–खाली बादल. हेक–एक ।

३१७ टोळी सूं–टोली से. टळतांह–बिछुड़ते समय. माठा हुवै–खिन्न होते हैं. वाल्हा–प्रिय. वीछंतांह–बिछुड़ते समय. जीणौ–जीना ।

३१८ चकवै नै सारस तणी–चकवा-चकवी तथा सारस-सारसणी की. तीजी–तीसरी. जो जो–देख देख कर ।

३१९ जळ–जल. वरे री भांत–वरण किये हुए की तरह ।

आंख्यां उणियारोह, निपट नही न्यारौ हुवै ।
प्रीतम मो प्यारोह, जोती फिरूं रे जेठवा ॥ ३२०

•

सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही ।
लाखीणी आ लोय, जग में रहसी जेठवा ॥ ३२१

•

वीणा जंतर तार, थे छेड्या उण राग रा ।
गुण नै झुरूं गंवार, जात न भीकूं जेठवा ॥ ३२२

•

मोटी उफण्यौ मेह, आयौ धरती धरवतौ ।
मुझ पांती री ग्रेह, छांट न बरस्यौ जेठवा ॥ ३२३

•

पावासर री पाज, हंसौ हेरण हालियौ ।
कोई न सरियौ काज, जागा सूनी जेठवा ॥ ३२४

•

पल जाणै दिन जाय, दिन जाणै पख ज्यूं दरस ।
पख ग्रेक बरस पेखाय, जावण लागा जेठवा ॥ ३२५

---

३२० उणियारोह–चहरा न्यारौ–अलग. जोती फिरूं–ढूंढती फिरती हूं ।

३२१ मरतौ जोय–मरता हुआ देख कर. मरसी–मरेगी. लाखीणी आ लोय–यह प्रेम की अमूल्य ज्योति ।

३२२ जंतर–एक वाद्य यंत्र. उण–उस. गुण नै झुरूं–गुण के लिये लालायित हूं. जात न भीकूं–जाति की परवाह नहीं करती ।

३२३ उफण्यौ–उमड़ा. मेह–वर्षा धरवतौ–धाराओं में बरसा. मुझ पांती री–मेरे हिस्से का बरस्यौ–बरसा ।

३२४ पावासर–मानसरोवर पाज–पाल. हेरण–ढूंढने को. हालियौ–चला. जागा–जगह ।

३२५ पख–पक्ष. पेखाय–लगता है. जावण लागा–जाने लगे ।

जिण सूं लाग्यौ जोय, मन सोही प्यारौ मनां ।
कारण और न कोय, जात पांत रौ जेठवा ॥ ३२६

•

जळ पीधौ जाडेह, पावासर रै पावटे ।
नैनकिये नाडेह, जीव न धापै जेठवा ॥ ३२७

•

चढियौ नीर अपार, पड़ियौ जद पीधौ नहीं ।
गूदळिये जळगार, जीव न धापै जेठवा ॥ ३२८

•

चकवा चाकर चोर, रैण बिछोवा राखिया ।
अब मिळ जावै और, जतनां राखूं जेठवा ॥ ३२९

•

चकवा सारस बांण, नारी नेह तीनूं निरख ।
जीणौ मुसकल जांण, जोड़ी बिछड़्यां जेठवा ॥ ३३०

•

खारी लागै खेळ, बाळां नै बूढ़ां तणी ।
मनां न होवै मेळ, जोड़ी बिना न जेठवा ॥ ३३१

---

३२६ जिण सूं–जिससे. लाग्यौ–लगा ।

३२७ पीधौ–पीया जाडेह–तृप्त होकर. पावासर–मानसरोवर पावटे–किनारे. नैनकिये–छोटे. न धापै–तृप्त नहीं होता ।

३२८ चढियौ नीर अपार–खूब पानी भरा हुआ था. पड़ियौ–पडा था. पीधौ–पीया. गूदळिये–गदले हुए. जळगार–जलाशय ।

३२९ रैण–रात. बिछोवा–विछोह. मिळ जावै–मिल जावे. जतना राखूं–पूरे यत्न के साथ रखूं ।

३३० बाण–आदत. जीणौ–जीना. मुसकल–मुश्किल. बिछड्या–बिछुड़ने पर ।

३३१ खेळ–किलोल. बाळां–कम उम्र के. तणी–की. मेळ–मेल ।

आवै और अनेक, जां पर मन जावै नहीं ।
दीसै तो विन देख, जागा सूनी जेठवा ॥ ३३२

...

पांन खड़ूकै अग तसै, वसै ज जंगळ दीप ।
सुण सुण राग ज वीण रो, सीस कियो बगसीस ॥ ३३३

•

वाळे सूं गरडी भई, सेवतडी बणराय ।
मिरगा अेक अचंभड़ो, पगे हली बणराय ॥ ३३४

•

राग न रीझै मिरगला, सीगाड़ा भड़मल्ल ।
कोइ पारधी मारसी, धण फिरती अेकल्ल ॥ ३३५

•

आहेड़ी गुण पारधी, हितकर वीण वजाय ।
जित लग सांस सरीर में, गाय गाय सुणाय ॥ ३३६

---

३३२ आवै–आते हैं. दीसै–दिखाई पड़ती है. जागा–जगह ।

३३३ तसै–त्रासयुक्त होना, चौंकना जंगळ दीप–जंगल के मध्य में. वीण रो–वीणा का. बगसीस–प्रदान कर दिया ।

३३४ वाळे सूं–बचपन से. गरडी–बूढ़ी. सेवतड़ी–उपभोग करती हुई. बणराय–वनराजी. अचंभडो–अचंभा. पगे हली–पैरों चली ।

३३५ रीझै–मोहित होना. सींगाड़ा भड़मल्ल–बड़े सींगों वाला. पारधी–शिकारी. धण–स्त्री. अेकल्ल–अकेली ।

३३६ आहेड़ी–आखेटक. हितकर–प्रेम से. जित लग–जब तक ।

मो आंतन की तांत कर, मो खल तळै बिछाय।
मो सीगन को नाद कर, घर घर अलख जगाय ।। ३३७

•

पगां न दीसै पारधी, लगा न दीसै बांण।
म्हे थनै पूछां हे सखि, किण विध तजिया प्रांण ।। ३३८

•

जळ थोड़ो'र नेह घणौ, लगौ प्रीत रौ बांण।
तू पी तू पी कर मुवा, दोनूं तजिया प्रांण ।। ३३९

•

बाग नहीं बाड़ी नहीं, नहीं बेल परसंग।
म्हे थनै पूछां हे सखि, (क्यू) भसमि चढ़ावै अंग ।। ३४०

•

अठै चनण रौ रूंख थौ, जळियौ दव रै संग।
प्रीत पुरांणी कारणै, भसमि चढ़ावै अंग ।। ३४१

•

जळी जड़ूणी केतकी, जळया न उणहि संग।
प्रीत बिगोवै भंवरा, भसमि चढ़ावै अंग ।। ३४२

---

३३७ खल–खाल. तळै–नीचे नाद–ध्वनि, आवाज ।

३३८ पगा न दीसै पारधी–शिकारी के पैरो के चिन्ह नही दिखते. किण विध–किस तरह।

३३९ नेह–स्नेह घणौ–अधिक लगौ–लगा।

३४० नही बेल परसग–कोई लता भी नही है पूछा–पूछती हैं. भसमि–भस्म. चढावै–आदर सहित लगाता है।

३४१ अठै–यहां. चनण–चन्दन. रूंख–वृक्ष. थौ–था जळियौ–जल गया. दव–दावाग्नि ।

३४२ जड़ूणी–जड़ से जळया न–जले नहीं. बिगोवै–नष्ट करता भसमि–भस्म।

होतौ तौ रहतौ नहीं, जळतौ उणरै संग ।
पांखन सूं लेपां करूं, रजी पुगावां अंग ।। ३४३

•

सुण भंवरा भंवरी कहै, काळौ किण विध होय ।
संग थारौ उत्तम सूं, रह्यौ फुलन में सोय ।। ३४४

•

सुण भंवरी भंवरौ कहै, घणा कियो म्हें मित ।
मिळ मिळ साजन बीछड़ै, तिल तिल दाभूं नित्त ।। ३४५

•

सुण भंवरा भंवरी कहै, जरद पीठ पर क्यूंह ।
वरछी लाग्यां प्रेम री, हळदी लागी ज्यूंह ।। ३४६

•

चंपै भवरे रूसणौ, कहौ कदूणौ दोस ।
का चंपौ गुण आगळौ, (का) भवर घणेरै रोस ।। ३४७

•

आगण वाही वेलडी, फळसै वाही जाळ ।
अधबिच भंवर अळूझियौ, कही भंवर किण काज ।। ३४८

---

३४३ होतौ–उपस्थित होता जळतौ–जलता. पांखन–पांखो से. रजी–रज. पुगावां–पहुँचाता हूं।

३४४ काळौ–काला संग–संगति थारौ–तेरा ।

३४५ सुण–सुन भंवरी–भ्रमरी. भंवरौ–भ्रमर. घणा–अधिक. मित–मित्र. मिळ मिळ–मिल मिल कर बीछड़ै–बिछुड़ते हैं. दाभूं–जलता हूं ।

३४६ जरद–जर्द, पीलापन लाग्यां–लगने पर. हळदी–हल्दी ।

३४७ रूसणौ–रूठना. कदूणौ–कथना. गुण आगळौ–अधिक गुणो वाला. घणेरै–अत्यधिक. रोस–गुस्सा ।

३४८ आंगण–आंगन. वाही–बोई. वेलडी–लता. फळसै–फाटक पर. अळूझियौ–उलझ गया ।

सखी भंवर मनायले, मत रख म्हारी कांण ।
पाड़ोसी रै थाळ ज्यूं, बेगौ दीजै आंण ।। ३४९

सुण भंवरा भंवरी कहै, क्यूं फिरै चित्त भंग ।
जे इण महलां रम रहै, लाल करूं सब रंग ।। ३५०

हूं भंवरौ सुलखणौ, कैर मूळ नहिं खाय ।
का बैठूं उड केतकी, का सतलंघण रह जाय ।। ३५१

जारे भंवरा बिणज कर, बोहळे बाजारे ।
उरे न ढूकै छाबड़े, अेह दिन चीतारे ।। ३५२

भंवरौ जांणै सह रस, जिण चाखी वणराय ।
घुण किम जांणै बप्पड़ौ, सूखा लक्कड़ खाय ।। ३५३

दाड़म केरे फूलड़ै, भंवरा भूल म बंध ।
जे सौ बरसां सेवियै, तोइ न पावै गंध ।। ३५४

---

३४९ मनायले–मनाले. पाडोसी–पड़ौसी. बेगौ–जल्दी. दीजे आंण–लाकर देना ।

३५० चित्त भग–उदास. रम रहै–रति-क्रीडा करे ।

३५१ सुलखणौ–अच्छे लक्षणों वाला. कैर–करील. का–या. सतलंघण–उपवास ।

३५२ बिणज कर–कार्य-व्यापार कर. बोहळे–बहुत बड़े. बाजारे–बाजार में. उरे न ढूकै छाबडे–हृदय की छबडी के नीचे न रहे. चीतारे–याद करना ।

३५३ जाणै–जानता है. जिण–जिसने. चाखी–चखी. वणराय–वनराजी. घुण–घुन. बप्पडो–बेचारा ।

३५४ दाड़म केरे–दाडिम के. फूलडै–फूल में. भूल म बंध–भूल कर भी मत बंध. सेवियै–सेवन करेगा. तोई–तो भी ।

सुरा सोरे भकोळिये, भंवर न जागै काय ।
प्रेमविळूंधौ भंवरौ, सखि मरंतौ जाय ।। ३५५

•

जा भंवरी रोज न कर, भंवर मुवा न जांण ।
वाधा जेही छूटसी, तळै चढ़ंता भूण ।। ३५६

•

हंसलौ ऊमण दूमणौ, वैठौ चोंच छुपाय ।
का तौ जोड़ा बीछड़चा, का सरवर गयौ सुखाय ।। ३५७

•

सर सूखे नव दिन हुवा, पांणी गयौ पताळ ।
ओगणगारै हंसलै, अजे न छोडी पाळ ।। ३५८

•

पाळ पुरांणी जळ नवौ, हंसलौ वैठौ आय ।
प्रीत पुरांणी कारणै, चुग चुग कांकर खाय ।। ३५९

•

डिग मती रे सरवरा, लांबी छौळ न देय ।
आपे हो उडजावसां, पंख संवारण देय ।। ३६०

---

३५५ सुरा सोरे भकोळिये–सुरा मे पूरी तरह उन्मत्त. प्रेमविळूधो–प्रेम-विलुब्ध ।

३५६. रोज–रुदन. मुवा–मरा हुआ. तळै–कुए पर. भूण–कुए का चक्र ।

३५७ ऊमण दूमणा–अनमना. वैठौ–बैठा. छुपाय–छिपा कर. बीछड़या–बिछुड़ गया. का–या ।

३५८ हुवा–हुए पांणी–पानी. पताळ–पाताल. ओगणगारै–अवगुण का आधार. अजे–अभी तक. पाळ–पाल ।

३५९ पुरांणी–पुरानी. नवौ–नया. वैठौ–बैठा. कांकर–कंकर ।

३६० लांबी छौळ–लंबी हिलोर. आपे ही–अपने आप. उडजावसां–उड़ जायेंगे. संवारण–संवारने ।

पांख संवारे पव करे, डाळा रंग भरेह ।
उडण वाळौ हंसलौ, बन बन डोय करेह ।। ३६१

•

हंसा अपणी डार नै, छोड कठै मत जाय ।
दुख में आडा आवसी, और न कोई आय ।। ३६२

•

हंसा सरवर ना तजौ, जे जळ खारौ होय ।
छीलर छीलर डोलतां, भला न कहसी कोय ।। ३६३

•

सरवर हंस मनायले, नेड़े थके नै मोड़ ।
ज्यां बैठां रळियामणौ, खेंच न वांसूं तोड़ ।। ३६४

•

जावतड़ां वरजूं नही, रेवै तौ आ ठौड़ ।
हंसां नै सरवर घणा, सरवर हंस करोड़ ।। ३६५

•

और घणाई आवसी, चिड़ी कमेड़ी काग ।
हंसा फेर न आवसी, सुण सरवर मंद भाग ।। ३६६

---

३६१ संवारे–सवार कर. पव–पवन. डाळा–टहनियां. उडण वाळौ–उडने वाला. डोय–आनन्द ।

३६२ अपणी–अपनी. डार–पंक्ति, झुण्ड. आवसी–आयेंगे ।

३६३ न तजौ–छोडो नही. जे–यदि. खारौ–खारा. छीलर–छोटी तलैया. डोलतां–डोलते रहने से ।

३६४ मनायले–मना ले. नेडे थके–नजदीक से. रळियामणौ–सुहावना ।

३६५ जावतडा–जाते हुओ को. वरजूं नही–मना नही करूंगा. रेवै तो–रहते हैं तो. आ ठोड़–यह जगह है. घणा–बहुत ।

३६६ घणाई–कई आवसी–आएंगे. फेर–फिर से. सुण–सुन. भाग–भाग्य ।

हंसां आ पारक्खड़ी, छीलर जळ न पियंत ।
कै पावासर पीवणा, कै तिरसाहि मरंत ॥ ३६७

•

हंसा विड़द विचार लै, चुगै त मोती चुग्ग ।
नितरा करणा लंघणा, जीणौ कितेक जुग्ग ॥ ३६८

•

हंसा हीणी जात, काथौ किणरी ना सहै ।
भणक्यौ भीणी रात, मोळायौ मोती चुगै ॥ ३६९

•

ओछै जळ री माछळी, ओछा वचन कियाह ।
दरियावां सू रूसणां, छीलर थग्ग लियाह ॥ ३७०

•

हंसा कहै रे डेडरा, सायर लिया न सद्द ।
ओछै जळ मे रैविया, ओछी होवै वुद्ध ॥ ३७१

•

हंसा कहै रे डेडरा, सायर लहर न दिट्ठ ।
ज्यां नाळेर न चाखिया, काचरिया ही मिट्ठ ॥ ३७२

---

३६७ पारक्खड़ी–परख. छीलर–छोटी तलैया, डाबर. पावासर–पर्वतसर, मानसरोवर. पीवणा–पीना तिरसाहि–प्यासे ही ।

३६८ विड़द–विरद विचार लै–विचार ले. करणा–करना लंघणा–उपवास जीणौ–जीना जुग्ग–युग ।

३६९ हीणी–कमजोर काथौ–कहा हुआ किणरी–किसी का भी. भणक्यौ–बोला भीणी रात–भीगी रात मे. मोळायौ–स्वाद परिवर्तन करने को लालायित ।

३७० ओछै जळ री–छिछले जल की ओछा वचन–टेढा वचन. रूसणा–रूठना. छीलर–छोटा पोखर. थग्ग लियाह–थाह लेली ।

३७१ डेडरा–मेंढक सायर–सागर, बडा तालाब. सद्द–स्वाद, आनन्द. रैविया–रहे. वुद्ध–बुद्धि ।

३७२ न दिट्ठ–देखी नहीं. ज्यां–जिन्होंने. नाळेर–नारियल. न चाखिया–चखे नहीं. काचरिया–वर्षा की मौसम मे बेल पर लगने वाला ककड़ी जैसा छोटा फल. मिट्ठ–मीठे ।

डिगे मती रे तरवरा, मन में रहै सधीर ।
पाव पलक रौ बैठणौ, घड़ी पलक रौ सीर ।। ३७३

•

जांण्यौ बीड़ौ चनण रौ, आसी बास सुवास ।
जे जांणूं क इरंड हौ, पग नी थोपूं पास ।। ३७४

•

म्हे तौ हंसा इरंड हां, बिटा पन मत देख ।
भार खिवै सिर आपरै, दूजा तरवर देख ।। ३७५

•

आग लगी बन खंड में, दाझे चनण वंस ।
म्हे तौ दाझ्या पंख बिन, थे क्यों दाझौ हंस ।। ३७६

•

पांन विधूंस्या रस पियौ, सुख पायौ इण डाळ ।
तुम जळौ'र हम उड चले, जीणौ कितेक काळ ।। ३७७

•

आरे पतंग निसंग जळ, जळत न मोड़ौ अंग ।
पैली तौ दीपक जळै, पीछै जळै पतंग ।। ३७८

---

३७३ तरवरा–तरवर. सधीर–धैर्यवान. सीर–हिस्सा ।

३७४ जाण्यौ–जाना. चनण रौ–चन्दन का. आसी–आएगी. जे जांणूं–यदि जानता. पग नी थोपूं–पैर नहीं रखता ।

३७५ हां–हैं. बिटा पन–टहनी पर दोनों ओर एक साथ निकलने वाले पान. भार खिवै–बोझ झेलते हैं. दूजा–दूसरे ।

३७६ दाझे चनण वंस–चन्दन के वृक्ष जल गये. दाझ्या–जले ।

३७७ विधूंस्या–तोड़े-मरोड़े. इण डाळ–इस डाली पर. जीणौ–जीना. कितेक काळ–कितने समय के लिये ।

३७८ निसंग–निशंक जळत–जलते समय पैली–पहले ।

हेली थारी करहलौ, मोही बिलगौ बार।
कै कांटां री बाड़ कर, कै घर बांधौ चार ॥ ३७९

•

काची कळी न हेळियौ, गुणे न रीझवियोह।
हेली थारौ करहलौ, गहमाती गमियोह ॥ ३८०

•

करहौ काची ना चरै, पाकी दिसां न जाय।
अधर विलूंबी वेलडी, तिणनै घणौ झुराय ॥ ३८१

•

चंपौ मरवौ केवडौ, नीरूं तीने थोक।
अे हर ढीलौ करहलौ, झुकियौ ना'वै झोक ॥ ३८२

•

नन्नण नीरूं वण चरै, वृण नीरूं सण खाय।
अे हर ढीलौ करहलौ, जित वरजूं तित जाय ॥ ३८३

•

पर घर रीझण करहला, नीघरिया घर आव।
बीजां अेक झबूकडा, वेलां अेको साव ॥ ३८४

---

३७९ थारौ–तेरा. करहलौ–ऊंट का बच्चा बिलगौ–उलझ पड़ा कै–या.
घर बांधौ चार–घर पर बांध कर चराओ।

३८० काची कळी–कच्ची कली. न हेळियौ–आदी नहीं किया. गुणे–गुणों पर.
न रीझवियोह–मोहित नहीं किया. गमियोह–खो गया।

३८१ काचो–कच्ची. ना चरै–नहीं चरता. पाकी दिसां–पकी हुई की ओर अधर
विलूंबी–अधर झूलती हुई. वेलडी–लता. तिण नै–उस को. घणौ झुराय–
अत्यधिक लालायित होता है।

३८२ नीरू तीने थोक–तीन ही प्रकार की चीजें खाने को डालती हूं. अे हर–इस इच्छा
से. ना'वै–नहीं आता. झोक–ऊंट को बांधने का स्थान।

३८३ नीरूं–चरने के लिए डालती हूं. वण–वन. जित वरजूं–जिधर जाने को मना
करती हूं. तित जाय–उधर ही जाता है।

३८४ रीझण–मोहित होने वाला. नीघरिया–बिना घर वाला. बीजां अेक झबूकड़ा–सभी
बिजलियों में एक सी चमक होती है. वेलां अेको साव–लताओं में एक-सा स्वाद है।

लोहा लिपटचा काठ नूं, घूम रहचा जळ मांय ।
वडा डूवण नाहि दे, जांकी पकड़ी वांय ॥ ३८५

•

सीच्या था गुण जांण के, दुसटि निकळ्या काठ ।
देखो प्रीत अजांण की, सिर पर वेवण वार ॥ ३८६

•

जळ न डुबोवै काठ कूं, कहो कदूणी प्रीत ।
अपणा सीच्या जांण के, याहि वडां की रीत ॥ ३८७

• • •

पहले पहरै रैण के, दिवला अंबर डूल ।
धण कसतूरी हुइ रही, पिव चम्पा रौ फूल ॥ ३८८

•

दूजै पहरै रैण के, मिळिया प्यारी पीव ।
रति रंग राता हुय रह्या, हुळस रह्या अत जीव ॥ ३८९

---

३८५ काठ नूं–लकडी से. डूबण–डूबने. बाय–बांह ।

३८६ दुसटि–दुष्ट. निकळ्या–निकला. अजांण–अनजान. बेवण–चलने वाला ।

३८७ न डुबोवै–नही डुबोता. कदूणी–कब की. अपणा–अपना. जांण के–जान क

३८८ पहले पहरै–पहली प्रहर में. रैण–रात. अंबर डूल–आकाश में भूल रहे हैं. घ
स्त्री. पिव–प्रिय ।

३८९ दूजे पहरै–दूसरी प्रहर में. मिळिया–मिले. पीव–पति. रति रंग राता–रति
उन्मत्त. हुळस रह्या–उल्लसित हो रहे हैं ।

तीजै पहरै रैण के, मिळिया तेहा तेह।
धण धरती सी हुय रही, कंत सुहावौ मेह ॥ ३६०

•

चौथै पहरै रैण के, कूकड़ मेली राळ।
नार संवारे कंचुकी, पिव मूछां रा वाळ ॥ ३६१

•

पंचम पहरै दिवस के, सायधण करै वुहार।
रिमझिम रिमझिम हुय रही, पायल री झणकार ॥ ३६२

•

छठै पहरै दिवस के, हुई ज जीमणवार।
मन चावळ तन लापसी, नैणां घी की धार ॥ ३६३

•

सातम पहरै दिवस रै, धण जु बाडियां जाय।
आंणै द्राख विजोरियां, धण छोलै पिव खाय ॥ ३६४

•

आठम पहरै सांझ रै, धण सज्जै सिणगार।
पांन कजळ पाखर करै, फूलां कौ गळहार ॥ ३६५

---

३६० तीजै पहरै–तीसरे प्रहर में. मिळिया तेहा तेह–खूब गाढे प्रेम के साथ मिले. धण–स्त्री. हुय रही–हो रही है कंत–पति. सुहावौ–सुहावना. मेह–वर्षा।

३६१ चौथै पहरै–चौथे प्रहर में. कूकड़–मुर्गा. मेली राळ–बाग दी. नार–नारी. संवारे–सवारती है. पिव–प्रिय. मूछां रा–मूछों के।

३६२ पंचम पहरै–पांचवें प्रहर मे. सायधण–स्त्री. करै वुहार–झाड़ू लगाती है. पायल री–पायल की।

३६३ छठै पहरै–छठी प्रहर मे. जीमणवार–भोजन. लापसी–लपसी।

३६४ सातम पहरै–सातवें प्रहर मे. धण–स्त्री. बाडियां–बाडियों में. आंणै–लाते हैं. द्राख–दाख. छोलै–छीलती है।

३६५ आठम पहरै–आठवें प्रहर में. सज्जै–सज्जित होती है. सिणगार–शृंगार. पाखर–सीसा।

प्रहरै प्रहर ऊतरचौ, दिवला साख भरेह।
धण जीती पिय हारियौ, वेल्हा मिळण करेह ।। ३९६

आदीते गुण वेलड़ी, पसरी म्हारै अंग।
फूली जोबन फूलड़ां, धण फळ जोवन रंग ।। ३९७

सोम सरीखौ कंथ थूं, हूम ससिकंत समांन।
गिरा लाग्या बिऊ ससो, हंस नै मूकी मांण ।। ३९८

मंगळवारे मंड कर, परणी आंणे कंथ।
सेजां चढ़ राजस किया, पूरै मन सूं कंथ ।। ३९९

बुद्ध करी बहु ऊपरै, मूकाया चंद्र चीर।
भली तरै पिव भोगवी, रस रंग रातै हीर ।। ४००

गुरू गुर है चिरंजीव, जिण जोड़ी कर मेळ।
हूं तरणी थूं तरण पिव, करलै रस रंग केळ ।। ४०१

---

३९६ दिवला–दीपक साख भरेह–साक्षी देना. पिय–पति. हारियौ–हार गया. वेल्हा–वेला. करेह–करना।

३९७ आदीते–रविवार को. गुण वेलडी–गुणों की लता. जोबन फूलडा–यौवन के फूलो से।

३९८ सोम–चद्रमा. सरीखौ–समान कंथ–पति. गिरा लाग्या–जिह्वा धारण किये हुए. मूकी माण–मान को त्याग दो।

३९९ परणी आणे कथ–पति ने आकर विवाह किया पूरै मन सू–सम्पूर्ण मन की।

४०० मूकाया–भेजे. भोगवी–उपभोग किया।

४०१ गुरू–बृहस्पतिवार. जिण–जिसने. तरणी–तरनी. तरण–तारने वाला।

सुक्र सनेही प्रीतड़ी लागै अमी समांण ।
आंख ठरी तन उलरियौ, जग निध पाई जांण ।। ४०२

•

थावर थावर आकरौ, कंचु कसण गी तूट ।
बिहु पयोहर उससिया, बांधे नेह अटूट ।। ४०३

•

पिड़वा दिन पिव हालियौ, मेहां लग ना दीठ ।
मन मोत्यां ही सूं गयौ, नैण भराणा नीठ ।। ४०४

•

बीज सु आज सहेलियां, ऊगौ चंद निकळंक ।
चंदै नै दुनियां वंदै, हूं तौ पीव मयंक ।। ४०५

•

सखी ज तन सिणगारियां, खेलै सांवण तीज ।
मो मन ऊमणदूमणौ, देख खिवंती बीज ।। ४०६

•

चौथे भगवत पूजतां, आई बहुळी आथ ।
जे प्रीतम घर आवसी, चौथ करां पिव साथ ।। ४०७

---

४०२ अमी–अमृत. समाण–समान. उलरियौ–उल्लसित हुआ ।

४०३ थावर–शनिश्चर. आकरौ–कठिन. कसण–कंचुकी की डोरी. उससिया–उल्लसित होकर फूले ।

४०४ पिड़वा–एकम. हालियौ–रवाना हुआ. मेहां लग–वर्षा की ओर. मोत्यां ही सूं गयौ–मोती रूपी धन खो बैठी. भराणा–भर गये. नीठ–मुश्किल से ।

४०५ ऊगौ–उदित हुआ. वंदै–वंदना करती है. पीव–पति ।

४०६ सिणगारियां–शृंगार से सज्जित हो कर. खेलै–खेलती हैं. सांवण तीज–सावन की तृतीया के त्यौहार के दिन. ऊमणदूमणौ–अनमना. खिवंती–चमकती हुई. बीज–बिजली ।

४०७ बहुळी आथ–बहुत सा धन. आवसी–आएंगे. करां–करेंगे ।

पांचम आज सहेलियां, आई आज वसंत।
तन मन जोवन नींद सुख, प्रीतम लेग्यौ पंच ॥ ४०८

•

छट्ठ सहेली साहिवौ, छाय रह्यौ परदेस।
झुर झुर नै पिंजर हुई, वाळा जोवन वेस ॥ ४०९

•

सातम दिन सांची हुई, सात वरस री रैण।
नैण न आवै नींदड़ी, सालै घट में सैण ॥ ४१०

•

आठम हुआ ज आठ दिन, पिव विन सूना साज।
आंण हुवै जे पांहुणा, नजर कळेजौ आज ॥ ४११

•

सखी सहेली सांभळे, म्हें मन वांध्या थाट।
नव दिन कीधा नोरता, सो प्रीतम हद वाट ॥ ४१२

•

जे घर आवै सायवौ, आय मिळै भर वाथ।
तौ पूजां परमेसरी, दसरावौ पिउ साथ ॥ ४१३

---

४०८ जोबन–यौवन लेग्यौ–ले गया।

४०९ छाय रह्यौ–आनन्दित हो रहा है. झुर-झुर नै–रो-रो कर. वाळा–वाला. वेस–वयस।

४१० रैण–रात. नैण–नैन. नीदड़ी–निद्रा. सालै–कचोटता है. सैण–प्रिय।

४११ पिव–पति. आण–आकर. पाहुणा–पाहुना. नजर कळेजौ आज–कलेजा तक भेंट कर दू।

४१२ मन बाध्या थाट–मन मे कई सुमधुर कल्पनाएँ की. कीधा–किये. नोरता–नौ उपवास।

४१३ सायबौ–पति. भर वाथ–आलिंगन मे भर कर. परमेसरी–भगवती. पिउ–पति।

सही आज इग्यारसी, म्हारै हिवड़ै तीख।
करसां तौही पारणौ, जो पिव मिळै हतीक ॥ ४१४

•

बारस आज सहेलियां, ऊगा बारै भांण।
जांणै साजन आवसी, ताता तुरी पिलांण ॥ ४१५

•

तेरस तेरै वर गई, आज न लागै थाग।
हिवड़ौ हळवळियौ हमें, ऊमीजै ऊमाग ॥ ४१६

•

चवदस खेलै चांनणी, सुखिया लोग सदेव।
हू तौ ऊमणदूमणी, सिवरूं साजन देव ॥ ४१७

•

पूनम पूरै प्रेम सूं, सज सोळै सिणगार।
अगनैणी ऊछब करै, पिव कारज जसराज ॥ ४१८

•

पिव चालै पदमण कहै, आयौ मिगसर मास।
चहूं दिसा हिम चमकियौ, बालम हिये बिसास ॥ ४१९

---

४१४ तीख–तीव्र इच्छा. पारणौ–उपवास की समाप्ति पर किया जाने वाला भोजन. हतीक–निश्चय ही।

४१५ ऊगा–उदित हुए. बारै भाण–द्वादस सूर्य. आवसी–आएँगे. ताता तुरी–तेज घोडे. पिलाण–काठी आदि कस के।

४१६ लागै–मिलता है. थाग–थाह. हिवडौ–हृदय हळवळियौ–हिल-हिल गया. ऊमीजै–विह्वल होता है. ऊमाग–उमग।

४१७ ऊमणदूमणी–अनमनी. सिवरूं–वन्दना करती हूं।

४१८ सज–सज्जित होकर. सोळै–सोलह. सिणगार–शृंगार. ऊछब–उत्सव. पिव कारज–पति के लिये।

४१९ पदमण–पद्मिनी स्त्री. कहै–कहती है हिये–हृदय को।

ऊमगियौ उतराध रौ, नव जोबन संजोग।
पोस महीनै गोरड़ी, कदै न छंडै लोग ॥ ४२०

माघ महीनै सी पड़ै, तिण रुत चलै वलाय।
ऊंडै पड़वै पोढ़वौ, कांमण कंठ लगाय ॥ ४२१

फागण आज वसंत रुत, सुण भोगी भरतार।
परदेसां री चाकरी, चालै कौण गंवार ॥ ४२२

चैत महीनौ चैन रौ, हुवा ज हालणहार।
तंग खेंचौ तुरियां तणा, सांईणा सिरदार ॥ ४२३

पिव वैसाखां हालियौ, सैणां सीख करेह।
ऊभी झूरै गोरडी, डब-डब नैण भरेह ॥ ४२४

लू वाजै धरती तपै, मास आकरौ जेठ।
आंख्या पावस ऊलरै, ऊभी मिन्दर हेट ॥ ४२५

---

४२० ऊमगियौ–उमड़ा. उतराध रौ–उत्तर दिशा की ओर का. सजोग–सयोग. गोरड़ी–गोरी।

४२१ सी पडै–सर्दी पडती है. तिण रुत–उस ऋतु मे. ऊडै पड़वै–घर में गहरे जाकर. पोढवौ–सोना कामण–कामिनी।

४२२ फागण–फागुन सुण–सुन. भोगी–उपभोग करने वाला. भरतार–पति. परदेसा री–विदेश की चाकरी–नौकरी. कौण–कौन।

४२३ हालणहार–चलने वाले. तग खेंचौ–जीन को कसो. तुरियां तणा–घोड़ों के. साईणा–समवयस्क।

४२४ सैणा सीख करेह–प्रिया से विदा लेकर. झूरै गोरड़ी–गोरी विरह में रो रही है।

४२५ आख्या–आँखो से. ऊलरै–उमडता है।

पीव वसै परदेस में, आयौ मास असाढ़।
दुख दे पापी हालियौ, गोरी सूं कर गाढ़॥ ४२६

सजनी सांवण आवियौ, ऊमड़ आयौ मेह।
चमकै वीजळ चहुं दिसा, दाझण लागी देह॥ ४२७

भादव घण भल गाजियौ, नदियां खळक्या नीर।
पपीहौ पिव पिव करै, आव नणद रा वीर॥ ४२८

आसोजांहि विदेस पिव, विरह लगावै वांण।
सेझड़ल्यां विस घोळियौ, मिंदरिया अळखांण॥ ४२९

कातिक कंथ पधारिया, सिध मनवंचत काज।
घर दीपक उजवाळिया, रह्यौ रंग रसराज॥ ४३०

• • •

---

४२६ पीव–पति हालियौ–चला. कर गाढ़–गाढ़ा परिचय करके।

४२७ आवियौ–आया. ऊमड आयौ–उमड कर आया. दाझण लागी–जलने लगी।

४२८ गाजियौ–गर्जा. नदियां खळक्या–नदी में वेग से बहने लगा. नणद रा वीर–ननद का भाई।

४२९ आसोजां–आश्विन. सेझड़ल्यां–सेज में. विस घोळियौ–विष घोला. अळखांण–अगुहावने।

४३० मनवंचित–मनोवांछित. उजवाळिया–प्रज्वलित किये।

मन वाड़ी तन केवड़ौ, सींचत इम्रत वैण।
प्रांण पुरख के बाग में, अजब फूल दो नैण ॥ ४३१

तीर लगौ गोळा लगौ, लगौ मरम कौ घाव।
नैण किणी रा ना लगौ, तिणरौ नाहिं उपाव ॥ ४३२

सर विण पर विण भाल विण, निकस गयौ उर पार।
कै यौ घायल जांणसी, कै यौ बावणहार ॥ ४३३

नैण नैण पै जात हैं, नैण नैण के हेत।
नैण नैण की बातड़ी, नैण नैण कह देत ॥ ४३४

नैणां केरी प्रीतड़ी, बूझै बिरलौ कोय।
जे सुख नैणां पाइये, ते सुख सेज न होय ॥ ४३५

नैण मिळंतां मन मिळै, मन मिळ बैण मिळंत।
बैण मिळंतां कर मिळै, कर मिळ देह मिळंत ॥ ४३६

---

४३१ केवडौ–केवडा. सीचत–सीचता है. इम्रत–अमृत. वैण–बैन. पुरख–पुरुष।

४३२ मरम–मर्म. किणी रा–किसी के. तिणरौ–जिसका. उपाव–उपाय।

४३३ विण–बिन. निकस गयौ–निकल गया. कै–या. यौ–यह. जाणसी–जानेगा. बावणहार–फेंकने वाला।

४३४ हेत–प्रेम. बातडी–बात।

४३५ नैणा केरी–नैनो की. बूझै बिरलौ–विरला ही जानता है।

४३६ नैण मिळ ता–नैनो के मिलने पर. वैण मिळंत–वचनो का आदान-प्रदान होता है।

नैण पदारथ वैण रस, नैणां वैण मिळंत ।
अणजांण्यां सूं प्रीतड़ी, पैला नैण करंत ।। ४३७

•

नैण भले'र नैण बुरे, नैण कुवद के मूळ ।
आप फंद में डार के, रहें दूर के दूर ।। ४३८

•

नयण मिळंतां मन मिळइ, मन मिळि वयण मिळंति ।
ग्रे त्रिणी मेळवि करी, काया गढ़ भेळंति ।। ४३९

•

लोचण तुम हो लालची, अति लालच दुख होइ ।
झूठा सा कछुत्तर मोहे, सांच कहैगी लोइ ।। ४४०

•

लोचण वपड़ा क्या करे, पड़े प्रेम के जाळ ।
पलक विजोग न सम सकै, देख देख भए लाल ।। ४४१

•

लोचण वड़े अपत्त हैं, लागे परमुख धाइ ।
आग विडाणी आणि के, तन में देत लगाइ ।। ४४२

---

४३७ पदारथ–पदार्थ. वैण–वैण. मिळंत–मिलते हैं. अणजांण्या सूं–अनजान से. पैला–पहले. करंत–करते हैं।

४३८ कुवद के मूळ–शैतानी के मूल कारण ।

४३९ नयण–नयन. मिळइ–मिलते हैं. ग्रे त्रिणी–ये तीनों. मेळवि करी–मिल कर के. काया गढ़ भेळंति–शारीरिक मिलन कराते हैं ।

४४० लोचण–लोचन, आंखें ।

४४१ वपड़ा–बेचारे. विजोग–वियोग. न सम सकैं–बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

४४२ अपत्त–विश्वासरहित. विडाणी–अन्य की. आणि के–ला कर के ।

चोर परखै चोर नै, मोर परखै मेह।
पांव परखै पगरखी, नैण परखै नेह ॥ ४४३

•

नैण पटक दूं ताल में, किरच किरच ह्वै जाय।
म्हें थनै नैणां कद कह्यौ, मन पैली मिळ जाय ॥ ४४४

•

नैण भलांई लाग जौ, तूं मत लागे चित्त।
नैण छूट सी रोय नै, (थूं) वंध्यौ रहसी नित्त ॥ ४४५

•

ग्रौर गांठ खुल जात है, जंह लग पूगे हाथ।
प्रीत गांठ नैणां घुळी, रिगस रिगस ग्रड़ जाय ॥ ४४६

•

साजन ग्रेसी प्रीत कर, निस ग्रर चंदे हेत।
चंदे बिन निस सांवळी, निस विन चंदी सेत ॥ ४४७

•

प्रीतम पासी प्रेम री, पड़ी गळै मे ग्राय।
काढ़ी ग्राढी ना खुलै, ग्रांट गांठ ग्रड़ जाय ॥ ४४८

---

४४३ परखै–परखते हैं मेह-वर्षा. पगरखी–जूती।

४४४ किरच किरच–टुकड़े टुकड़े कद–कब. पैली–पहले।

४४५ भलाई–भले ही. लागजौ–लगना रोय नै–रो कर. रहसी–रहेगा।

४४६ जंह लग–जहा तक घुळी–गाढी हो गई है रिगस रिगस–सरक सरक कर।

४४७ निस–निशि, रात सावळी–काली. सेत–श्वेत।

४४८ पासी–फांसी. वाढी–काटने पर।

साजन तुम दरियाव हो, मै श्रौगण की जाज ।
श्रवकी पार लगायदे, कर पकड़े की लाज ।। ४४६

•

सम्मन प्रीत न जोड़िये, जोड़ न तोड़ौ कोय ।
जोड़्यां पीछे तोड़िये, गांठगंठीली होय ।। ४५०

•

सठ सनेह जीरण वसन, जतन करंतां जाय ।
चतर प्रीत रेसम लछा, घुळत घुळत घुळ जाय ।। ४५१

•

मोती फाट्यौ वींधतां, मन फाट्यौ इक वोल ।
मोती फेर मंगावसां, मनड़ौ मिळै न मोल ।। ४५२

•

डूंगर वाळा जळ भरया, तिण ऊपरलौ तेह ।
वहतां वहै उतावळा, छिटक दिखावै छेह ।। ४५३

•

साजन ग्रेसा कीजिये, ता मे लखण वतीस ।
कांम पड़्यां विरचै नहीं, सीस करै वगसीस ।। ४५४

---

४४६ श्रौगण–श्रवगुन. जाज–जहाज. श्रवकी–इस बार।

४५० जोड़्यां पीछे–जोड़ने के वाद. गांठगठीली होय–वह स्वाभाविक प्रेम नहीं रहता ।

४५१ सठ सनेह–नीच का प्रेम. जीरण–जीर्ण. जतन–यत्न. चतर–चतुर. रेसम लछा–रेशम की डोरी का गुच्छा ।

४५२ फाट्यो–फट गया. वींधतां–छेद करते समय. फेर–फिर भी. मंगावस्यां–मँगवा लेंगे. मिळै न–नहीं मिलता ।

४५३ डूंगर वाळा–पहाड़ी नाला. ऊपरलौ तेह–गहराई से रहित. उतावळा–तीव्र. छेह–अन्त ।

४५४ लखण–लक्षण. विरचै नहीं–धोखा नहीं देते. करै वगसीस–प्रदान करते हैं ।

साजन खारा खांड सा, केसर जिसा कुरंग।
मैला मोती सारसा, ओछा सिंधु तरंग॥ ४५५

•

मांग्या लाभै जव चणा, मांगी लभै जवार।
मांग्या साजन किम मिळै, गहली मूढ़ गिवार॥ ४५६

•

कोरौ करवौ जळ भरचौ, जमी चूस्यौ जाय।
चतर हुवै तौ पीयलै, मूरख तिरसौ जाय॥ ४५७

•

भोजन भरियौ वाटकौ, चिड़ियां चुग चुग जाय।
चतर हुवै तौ जीमलै, मूरख भूखौ जाय॥ ४५८

•

चन्नण पड़ियौ चोवटै, लेउड़ा फिर फिर जाय।
आसी चनण रौ पारखी, लेसी मोल चुकाय॥ ४५९

•

चनण काठरौ ढोलियौ, किस्तूरचां आवास।
धण जागै पिव पोढ़ियौ, वाळूं यौ घरवास॥ ४६०

---

४५५ खाड सा–शक्कर जैसे. कुरंग–कुरूप. सारसा–समान।

४५६ माग्या–मांगने पर. लाभै–मिलते है. जव–जौ. चरणा–चना. गहली–पगली।

४५७ कोरौ करवौ–मिट्टी का नया छोटा बर्तन. जमी–जमीन. चूस्यौ जाय–सोखा जा रहा है. चतर–चतुर. तिरसौ–प्यासा।

४५८ वाटकौ–कटोरा. जीमलै–भोजन खाले।

४५९ चन्नण–चन्दन. चौवटै–चोहटे में. लेउड़ा–लेने वाले. आसी–आयेगा. पारखी–परखने वाला. लेसी–लेगा।

४६० ढोलियौ–पिलग. पोढियौ–सो रहा है. यौ–यह. घरवास–सहवास।

वारूं दुरजण ऊपरा, सौ सज्जण की भेंट ।
रजनी का मेळा किया, वेह का अच्छर मेट ॥ ४६१

•

कोटां सिरे ज कोटड़ौ, देसां मुरधर देस ।
रांण्यां सिरै ज भारमल, राजा बाघ नरेस ॥ ४६२

•

जंह गिरवर तंह मोरिया, जंह सरवर तंह हंस ।
जंह बाघौ तंह भारमल, जंह दारू तंह मंस ॥ ४६३

•

गिरवर तजै न मोरिया, सरवर तजै न हंस ।
बाघौ तजै न भारमल, दारू तजै न मंस ॥ ४६४

•

आ नित दीसै साजना, रीस रखूं की रोक ।
साजनिया सालै नहीं, सालै ल्होड़ी सौक ॥ ४६५

•

की थांसू मन री कहूं, म्हांसूं नहीं सनेह ।
प्रीतम प्यारी पागियौ, नानकड़ी सूं नेह ॥ ४६६

---

४६१ दुरजण-दुर्जन. ऊपरा-उपर. सज्जण-सज्जन. मेळा किया-मिलन संभव करवा दिया. वेह-विधि. अच्छर-अक्षर. मेट-मिटा कर ।

४६२ कोटां सिरे-गढ़ो में सिरमौर. कोटड़ो-बाघजी का गाँव. भारमल-बाघजी की प्रेयसी ।

४६३ मोरिया-मोर. बाघौ-बाघजी, भारमली का प्रेमी. दारू-शराब ।

४६४ तजै न-नहीं छोड़ते ।

४६५ दीसै-दिखाई देती है. की रोक-कैसे रोकूं. सालै नहीं-सटकता नहीं. ल्होड़ी-छोटी. सौक-सौत ।

४६६ थांसूं-तुम से. म्हांसूं-मुझ से. पागियौ-पग गया. नानकड़ी-छोटी बहू ।

कर जोड़े साजन कहूं, हाय कछू नहिं हाय ।
दोरौ लागै देखतां, सोकड़ल्यां रौ साथ ।। ४६७

•

मुख ऊपर मीठा मिळ्यां, दिल में खोट दुराव ।
म्हांसूं छांनै सौक घर, राखौ आवणजाव ।। ४६८

•

आंख्यां में सुइयां सहूं, सूळी सहूं पचास ।
औ दुखड़ौ कैसे सहूं, पिव औरां के पास ।। ४६९

•

जोवन नै जवार, काचा थकां ज मांणिये ।
झड़पे जासी झार, बाकी रहसी पींछरा ।। ४७०

•

जोबन था तद मांन था, ग्राक था सब लोग ।
जोबन रतौ गमाय नै, बैठी कळंदर होय ।। ४७१

•

(जे) जांणां जोबन जावसी, आड खंचावत बाड ।
कूं कूं कूंपळि मेलती, कढ़ती बार तिवार ।। ४७२

---

४६७ दोरौ–कठिन, बुरा. सोकडल्या–सौतो का ।

४६८ मिळ्या–मिलने पर. छानै–चुपके. आवणजाव–आनाजाना ।

४६९ आख्या मे–आंखो में. सूळी–सूली. दुखडौ–दु ख ।

४७० जवार–ज्वार. माणिये–आनन्द लूटो. झडपे–झटकने पर. पीछरा–खाली भूसा ।

४७१ जोबन–यौवन. ग्राक–ग्राहक. कळंदर–जीर्णशीर्ण ।

४७२ जाणा–यदि जानती. जावसी–चला जाएगा. कूंकूं–कुंकुम. कूंपळि–डिब्बी. मेलती–रखती. कढती–निकालती वार तिवार–कभी-कभी विशेष मौको पर ।

जोबन जातां नव गया, जिण में तीन अळग्ग ।
तुरि खेलण सेजां रमण, पर सिर वावण खग्ग ।। ४७३

•

कांनां केसां लोयणां, दरसण नै दांतांह ।
अेतां में विखौ पड़चौ, (इक) जोवनियौ जातांह ।। ४७४

•

जोवन गयौ स भल हुई, सिर री टळी वलाय ।
जणै जणै रौ रूसणौ, औ दुख सह्यौ न जाय ।। ४७५

•

धोळा वधावौ हे सखि, मोत्यां थाळ भरेह ।
जोवन नदी अथग्ग जळ, ऊतरिया कुसळेह ।। ४७६

•

चाळीसां बोळावियां, पच्चासांहि तळेह ।
बूढ़ापा री बाळकी, बांकी अेक वळेह ।। ४७७

•

साठी मिळियौ हे सखी, विरहण वाळी वेस ।
जैसा कंथा घर भला, वैसा भला विदेस ।। ४७८

---

४७३ जातां–जाते समय. नव गया–नौ चीजें चली गईं. अळग्ग–अलग. तुरि–घोड़ा. वावण खग्ग–तलवार चलाना ।

४७४ लोयणां–आंखों मे. अेतां मे–इतनों में. विखौ–दुःख. जोवनियौ–यौवन ।

४७५ भल हुई–ठीक हुई. टळी–टल गई. जणै जणै रौ–हर एक का. रूसणौ–रूठना. सह्यौ–सहा ।

४७६ धोळा वधावौ–सफेद बालों का सम्मान करो. मोत्यां थाळ भरेह–मोतियों का थाल भर कर. अथग्ग–अथाह. ऊतरिया कुसळेह–सकुशल पार उतर गये ।

४७७ चाळीसां बोळावियां–चालीस वर्ष समाप्त करने पर. तळेह–नीचे. बूढ़ापा री–बुढ़ापे की. बाळकी–छोटा नाला. वळेह–फिर से आने वाली ।

४७८ साठी–साठ वर्ष की उम्र वाला. वाळी वेस–नव-यौवना. कंथा–पति ।

पीथळ धौळा आविया. बहुळी लागी खोड़ ।
पूरै जोबन पदमणी, ऊभी मुक्ख मरोड़ ॥ ४७९

•

प्यारी कह पीथळ सुणौ, धौळां दिस मत जोय ।
नरां तुरां अर वन फळां, पाक्यां ही रस होय ॥ ४८०

• • •

गाहा गीत विनोद रस, सगुणां दीह लियंति ।
कइ निंद्रा कइ कळह करि, मूरख दीह लियंति ॥ ४८१

•

विरह वियापी रयण भरि, प्रीतम विणु तन खीण ।
वीण अलापी देखि ससि, किस गुण मेल्ही वीण ॥ ४८२

•

वीण अलापी देखि ससि, रयणी नाद सलीण ।
ससिहर अग रथ मोहियउ, तिण हसि मेल्ही वीण । ४८३

---

४७९ पीथळ–बीकानेर के राठौड़ पृथ्वीराज. आविया–आ गये. बहुळी–अत्यधिक. खोड–कसर, कमी. पदमणी–पद्मिनी. ऊभी–खडी है. मुक्ख मरोड़–मुख मोड कर ।

४८० सुणौ–सुनो धौळा दिस–सफेद बालों की ओर. जोय–देख. पाक्यां–पकने पर ही ।

४८१ सगुणां दीह लियंति–गुणवान् लोग दिन बिताते हैं. कळह करि–कलह करके ।

४८२ विरह वियापी–विरहव्याप्त. रयण–रैन, रात. विणु–बिना. खीण–क्षीण. वीण अलापी–वीणा बजाई. किस गुण–किस कारण से. मेल्ही–रखी ।

४८३ सलीण–लीन हो गया. ससिहर–चंद्रमा. मोहियउ–मोहित कर लिया ।

सुन्दर चोरे संग्रही, सब लीया सिंणगार ।
नकफूली लीधी नहीं, कहि सखि कवण विचार ॥ ४८४

•

अहर रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि व्रन्न ।
जांण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न ॥ ४८५

•

परदेसां प्री आवियउ, मोती आंण्या जेण ।
धण कर कंवळां झालिया, हसि करि नाख्यां केण ॥ ४८६

•

कर रत्ता मोती नूमळ, नयणे काजळ रेह ।
धण भूली गुंजाहळे, हंसि करि नांख्या तेह ॥ ४८७

•

तरुणी पुणेवि गहियं, परियच्चय भितरेण पिउ दिट्ठं ।
कारण कवण सयाणे, दीपक्को धूणए सीसं ॥ ४८८

•

वालंभ दीपक पवन-भय, अंचळ सरण पयट्ठ ।
करहीणउ धूणइ कमळ, जांण पयोहर दिट्ठ ॥ ४८९

---

४८४ चोरे-चोरो ने. संग्रही-संग्रहीत कर लिये सिणगार-शृंगार, आभूषण. लीधो नहीं-नही ली ।

४८५ अहर-अधर. रत्तउ-लाल. काजळ-कज्जल जाण्यउ-जाना. गुंजाहळ-गुंजाफल. अछइ-है न ढूकउ मन्न-चोरने का मन नही हुआ ।

४८६ प्री-प्रियतम. आवियउ-आया. आण्या-लाया. कर-कंवळां-कर-कमलों में. झालिया-पकडे. नाख्या-डाल दिये ।

४८७ रत्ता-लाल. नूमळ-निर्मल. नयणे-आंखों में. काजळ रेह-काजल की रेखा. धण-स्त्री. भूली गुंजाहळे-गुंजाफल के मिस भूल गई ।

४८८ पुणेवि-फिर से. गहियं-हाथ मे पकड़ा. परियच्चय-आंचल. भितरेण-अन्दर. कारण कवण-क्या कारण है. दीपक्को-दीपक. धूणए सीस-सिर धुन रहा है ।

४८९ वालभ-प्रिय. सरण पयट्ठ-शरण में गया. करहीणउ-कररहित. धूणइ कमळ-सिर धुनता है. पयोहर-पयोधर. दिट्ठ-देखने पर ।

बहु दिवसे प्री ग्रावियउ, सभिया त्री सिंणगार ।
निजरि दिखाई ग्रादरस, किम सिंणगार उतार ॥ ४६०

•

इंद्रा वाहण नासिका, तासु तणइ उणिहार ।
तस भख हूवउ प्राहुणौ, तिणि सिंणगार उतार ॥ ४६१

•

ससनेही सज्जण मिळया, रयण रही रस लाइ ।
चिहु पहरे चटकउ कियउ, वैरण गई बिहाइ ॥ ४६२

•

रे हिय ! वज्जर घड़ीयउ, की पाखांण कुरंड ।
वालंभ नर विछोहियउ, हुउ ना खंडउ खंड ॥ ४६३

•

तौ तूं परदेसी हुया, जे दीसंता नित्त ।
नयणे तूहि विसारिया, तू म विसारइ चित्त ॥ ४६४

•

सज्जण हूं तुझ तूं मुझइ, ग्रवर म लेखी लेखि ।
मुझ तुझ हियडा ग्रेक छइ, भावइ काढ़ी देखि ॥ ४६५

---

४६० सभिया–सजे. ग्रादरस–शीशा किम–कैसे ।

४६१ इंद्रावाहण–हाथी. नासिका–सूंड. उणिहार–समान, सर्प. तस भख–उसका भक्ष्य हो गया ।

४६२ मिळया–मिले. चिहु पहरे–चारो पहर. चटकउ कियउ–फुर्ती से बीत गये. गई विहाइ–बीत गई ।

४६३ वज्जर–वज्र. घडीयउ–घडा हुग्रा है. पाखांण–पाषांण. वालंभ–वालम. विछोहियउ–बिछुड गया. हुउ ना–नही हुग्रा. खंडउ खंड–टुकडे-टुकडे ।

४६४ दीसता–दिखाई देते थे. वीसारिया–भुला दिये. म–नही. विसारइ–बिसारना ।

४६५ ग्रवर–ग्रन्य. म लेखी लेखि–ग्रन्य मत समझो. हियड़ा–हृदय. ग्रेक छइ–ग्रेक हैं. भावइ–यदि चाहो. काढी–निकाल कर ।

हिवड़ा भीतर दव वळइ, धूंम्रा प्रगट न होइ ।
वेलि विछोह्यां पानड़ां, दिन दिन पीळा होइ ।। ४९६

•

निसास तू भल सरजियौ, ग्राधौ दुक्ख सहंति ।
जो निसासउ सरजत नहिं, तौ हीयाइ मरंति ।। ४९७

•

मांणस थिकि पंखी भला, ग्रळगा चूण चूणंति ।
तरुवर भमि संझा समइ, माळइ ग्रावि मिळंति ।। ४९८

•

ग्रांखड़ियां डंवर हुई, नयण गमाया रोइ ।
ते साजण परदेसड़इ, रह्या विडांणा होइ ।। ४९९

•

सुरता राग न धापिये, धरा न धापै मेह ।
प्रेम न धापै पदमणी, नैण न धापै नेह ।। ५००

* * *

---

४९६ दव वळइ–दावाग्नि लगी हुई है. वेलि विछोह्या–वेल से बिछुडने पर. पीळा–पीला ।

४९७ निसास–निश्वास. सरजियौ–सर्जित हुग्रा. हीयाइ मरंति–हृदय में ही घुट कर मर जाती ।

४९८ मांणस थिकि–मनुष्य से. पंखी–पक्षी. ग्रळगा–दूर चूण चूणंति–चुग्गा चुगते हैं. माळइ–घोसले मे. मिळंति–मिलते हैं ।

४९९ डंवर हुई–सजल, बादल की तरह. नयण–नैन गमाया–गवाया. परदेसडइ–परदेस में. विडांणा–पराये ।

५०० सुरता–श्रोता न धापिये–तृप्त नहीं होते. मेह–वर्षा. पदमणी–पद्मिनी. नैण–नैन. नेह–स्नेह ।

परिशिष्ट

– वर्णन क्रम-संकेत

– प्रासंगिक कथाओं पर
परिचयात्मक टिप्पणियाँ

****

वर्णन क्रम - संकेत

**

परिचयात्मक टिप्पणियाँ

**

ढोला मारू—[पृ० १७, १८, २४, २५, २७, २८, २६, ३६, ३७, ३८, ३६, ४२, ४३, ४७, ४८, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५६, ६१, ६२, ८२, ८३, ८४, ६८, ६६, १००]

ढोला और मारवण की कथा राजस्थान की सुप्रसिद्ध प्रेम-कथा है। नरवरगढ के राजकुमार ढोला का पूंगळ की राजकुमारी मारवणि के साथ बचपन में ही विवाह हो जाता है। ढोला जब युवा होता है तो उसके माता-पिता मालव देश की राजकुमारी मालवणि के साथ उसका विवाह कर देते हैं। ढोला और मालवणि में प्रेम दिनो-दिन बढता जाता है। इधर मारवणि भी युवावस्था को प्राप्त होती है और ढोला के विरह में विलखने लगती है। मारवणि की विरह-व्यथा को कवि ने स्वप्न और संदेश के माध्यम से बहुत सरस रूप मे व्यंजित किया है। मारवणि अति विरह-व्याकुल होकर क्षीण होती जाती है। माता-पिता को पता लगने पर वे कई सन्देश ढोला के पास भेजते हैं पर मालवणि के नियुक्त किये हुए लोगो द्वारा सन्देशवाहक बीच ही में मार दिये जाते हैं। अत मे दो ढाढियो को सन्देश देकर भेजने की व्यवस्था होती है। मारवणि स्वय उन्हे पत्र लिख कर देती है और कई एक हृदयविदारक दोहे याद करवाती है। ढाढी कई कठिनाइयो का सामना करने के पश्चात ढोला के पास पहुँचते हैं और मारवणि की विरह-व्यथा दोहो में गाकर सुनाते हैं। ढोला की विरह-व्यथा जाग उठती है। वह मारवणि से मिलने के लिए अत्यन्त व्याकुल हो जाता है। मालवणि के बहुत मनाने पर भी वह अपना करहा [ऊँट] लेकर मारवणि के देश पहुँचता है। ढोला के पहुँचने का पता लगते ही मारवणि और उसकी सखियो के आनन्द का पार नही रहता। ढोला की खूब खातिर की जाती है। करहे तक की आवभगत मे कमी नहीं रखी जाती। उसके प्रति गीतों के माध्यम से प्रेम-भावना व्यक्त की जाती है—'अरे म्हारा लोटण करिया भायहलो भीनी रा पर आव।' ढोला और मारवणि के कुछ दिन आनन्द और उल्लास में व्यतीत होत हैं। फिर मारवणि को ढोला के साथ दहेज आदि देकर विदा किया जाता है। रास्ते मे सोती हुई मारवणि को पीना सर्प डस जाता है और वह मर जाती है। ढोला बहुत विलाप करता है। तब शिव-पार्वती आकर उसे जीवन-दान देते हैं। वहाँ से आगे आने पर मालवणि द्वारा सिखाया हुआ डाकू ऊमर सूमरा मिलता है। वह ढोला को मनुहार करके ठहरा लेता है और धोखे से मारवणि को छीन लेने का षडयन्त्र रचता है। पर मारवणि की होशियारी से ही वे ऊँट पर चढ कर निकल भागते हैं। ऊमर सूमरा पीछा करता है, पर निष्फल।

ढोला मारवणि को लेकर नरवरगढ पहुँचता है और दोनों रानियों के साथ आनन्द से रहने लगता है।

उधर बादशाह ने सोरठ को बहुत मनाया पर उसने साफ इन्कार कर दिया और बीझे के श्मशान पर जाने की इच्छा व्यक्त की। बादशाह ने तंग आकर उसे इजाजत देदी। उसने श्मशान पर जाकर बीझे को सच्चे हृदय से याद किया और जन्म-जन्मान्तर तक उसे पति रूप मे पाने की कामना की। अपने आप बीझे के श्मशान से अग्नि प्रज्वलित हुई और सोरठ जल कर भस्म हो गई।

सोरठ के दोहे सोरठ रागिनी में ही गाये जाते हैं जिनके सम्बन्ध में ये दोहे बहुत प्रसिद्ध हैं—

देसां को पत माळवो, सहरां पत उज्जेण।
रागां को पत सोरठो, बाजां को पत बीण॥
सोरठ जब ही कीजिये, सोपौ ही पड़ जाय।
ज्यों ज्यों रात गळतड़ी, त्यों त्यों मीठी थाय॥

*

ऊमा सांखली और अचलदास—[पृ० २०] अचलदास खीची गढ़ गगुढे पर राज्य करता था। अत्यन्त रूपवती लाला मेवाड़ी उसकी पत्नी थी पर पुत्र नही था, इसलिए उसने दूसरा विवाह करने का विचार किया। उसे एक दिन जागळ देस की चारणी भीमा मिली जिसे उसने अपने मन की बात कही तो भीमां ने कहा कि उसके राजा खीवसी की पुत्री ऊमा सांखली अत्यंत रूपवती है और उसके साथ उनका सम्बन्ध हो सकता है। अचलदास की इच्छानुसार विवाह निश्चित हो गया पर जब विवाह के लिए वह रवाना होने लगा तो लाला ने उनसे एक वचन मांगा कि आप शादी भले ही करें पर मेरी स्वीकृति के बिना आप अपनी नई रानी के महल मे नहीं जा सकेंगे। राजा ने बात मंजूर करली।

अचलदास का विवाह ऊमा के साथ धूमधाम से हुआ। ऊमा रूपवती और गुण-वान थी। ऐसी पत्नी को पाकर अचलदास उस पर इतना मुग्ध हुआ कि कई दिन तक महलो से नीचे तक नही उतरा। उसे अपने वचन याद थे इसलिए उसने एक युक्ति निकाली। कई महीनो तक वह अपने देश ही नही लौटा। उधर लालां बहुत विकल हो उठी। उसके कामदार मेहता ने उसे ढाढ़स दिलाया और स्वयं जागल देस को चला। उसने जाकर राज्य की अव्यवस्था का हाल सुनाया तो अचलदास फौरन अपने देश लौटा। पर अब वह लालां की स्वीकृति के बिना उमा से मिल नहीं सकता था। भींमा ऊमा के साथ थी। उसे एक युक्ति सूझी। उसने ऊमा का एक बहुत कीमती हार एक बार लालां को बताया तो लालां ने वह हार पहिनने के लिए मांग लिया। लाला हार प्राप्त करके खुश हुई और उसने अचलदास को ऊमा से मिलने की इजाजत दी पर रति-क्रीड़ा करने की नहीं। अचलदास बहुत बड़ी दुविधा में पड़ गए। वे चुपचाप पलंग पर सो रहे। भींमा को बात समझ मे आ गई। उसने अचल-दास को फटकारा कि हमने तो हमारा कीमती हार लालां को देकर आपको खरीदा

था और तब भी भाप इस तरह का व्यवहार करते हैं। यह सुनते ही अचलदास को लालां पर बडा क्रोध आया पर वे बोले नही, फिर वचन दिया कि जब भी उमा बुलायेगी वे अवश्य उसके पास आयेंगे। एक दिन जब वे चौपड़ खेल रहे थे, ऊमा का बुलावा आया तो वे फौरन उठ खड़े हुए। लालां ने बाजी पूरी करने को कहा तब उन्होंने दो टूक उत्तर दे दिया कि जो औरत मुझे बेच सकती है, मैं उसके पास नही बैठूंगा। लालां ने बहुत बुद्ध कहा पर उसने एक न सुनी, तब लालां ने गुस्से में राजा के साथ कभी भी सहवास न करने की कसम खाई। जिन्दगी भर वह उनसे रूठी रही और जब युद्ध में अचलदास मारा गया तो उसके साथ सती हो गई।

*

सुहप—[पृ० २६, २७, ३५] सुहप सुखदेव जोहिये की लड़की थी। इनका निवासस्थान घाट में था। सुजेर में शादी हुई थी।

सुहप बेटी सुखदेव री।
धिन जोहियांणी जात ॥

पति-पत्नी के बीच अनबन हो जाने से पति ईडर चला गया पर उनके प्रेम-सम्बन्ध विरह-व्याकुल हृदयों से विलग नही हुए। सुहप का राशि-राशि सौन्दर्य सर्व-विख्यात था। *उनका बिछोह अन्य लोगों के लिए भी दु.ख का विषय बन गया—*

सुहप कर सिणगार, मोहनियो मनाय ले।
आतम रो आधार, रुड़ो रुसायो राजवी ॥

लम्बे विरह के बाद उनका सुखद मिलन हुआ।

*

आभल खींवजी—[पृ० ३४] आभल खीवजी की प्रेम-कथा में रोमांस और करुणा का अद्भुत मिश्रण है। कथा के नायक खीवजी चोटियाले गढ के राजकुमार थे। उनका अधिकाश समय शिकार और आमोद-प्रमोद मे ही जाता था। एक बार उनकी भाभी ने हंसी-मजाक मे ताना मारा जिसके फलस्वरूप उन्होने भाभी की छोटी बहन आभल से विवाह करने का प्रण किया। *अपने घोड़े पर सवार होकर वे उसी समय रवाना हो गये।* आभल का निवासस्थान बीसलपुर बहुत दूर था पर उन्होंने बीसलपुर पहुँच कर ही चैन की सास ली। शहर के बाहर एक सुन्दर बगीचा था। उसीमे उन्होने विश्राम करने के विचार से माली से सांठ-गाठ की और आराम करने लगे। वह बाग राज-घराने का ही था इसलिए थोड़ी देर में आभल स्वयं अपनी सखियो सहित वहाँ आ निकली। खीवजी नीद मे थे। बगीचे मे अकेले पुरुष को देख कर वह वापस अपने महल को चलदी। जब खीवजी को इस बात का पता लगा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वे अपने घोडे पर चढ कर फौरन आभल के महल के नीचे पहुँचे। इधर उनके हृदय में औत्सुक्य भरा प्रेम उमड रहा

था, उधर आकाश मे काली घटायें उमड़ रही थी। सहमा जोरो से वर्षा होने लगी। खींवजी का घोडा आभल के महल के ठीक नीचे था, परनाल से पानी सीधा उनके सिर पर गिरने लगा तो उन्होंने अपने भाले पर रूमाल बाँध कर परनाल मे डाल दिया जिससे महल का पानी छत पर शामिल होने लगा। यह देख कर आभल को बड़ा अचंभा हुआ। एक सखी ने नीचे देख कर आभल को सूचना दी तो आभल ने स्वयं महल के नीचे झांका। वह खींवजी जैसे सुन्दर युवक को देख कर आश्चर्य-चकित रह गई। उनके सौन्दर्य पर अभिभूत हो गई। प्रश्न किया—

परनाळां पांणी पड़ै, घर अंबर इक धार।
किसै गढ़ रा राजवी, कुण हो राजकुमार॥

उत्तर—

पिता म्हारो परतापसी, गढ़ चोटयाळो गांव।
आभल निरखण आविया, नरपत खींवजी नांव॥

आभल के मन में खींवजी की सूरत हमेशा के लिए बस गई। खींवजी ने जब वहाँ से विदा लेली तो उनसे मिलने के लिए आभल बहुत लालायित होने लगी। उसने एक युक्ति निकाली। बीमारी के बहाने से जगन्नाथजी के मन्दिर फेरी देने की स्वीकृति अपने पिता से ली और वहाँ से कुछ सिपाहियो के साथ रवाना हुई।

आभल उछाळा घालिया, ऊंठां कसिया भार।
कुण जावै जग डेहरे, जावै खाळेचै रै लार॥

रास्ते में चोटियाळा गाव पड़ता था, वहाँ के एक बगीचे में डेरे दिये गये। आभल की बहिन को जब मालूम हुआ तो उसकी खुशी का पार नही रहा। कई वर्षो बाद उसे अपनी बहिन से मिलने का अवसर मिला था। वह सज-धज कर ज्योही चलने लगी तो खींवजी ने उनका रास्ता रोक लिया और कहा कि यदि मुझे साथ नही ले जाओगी तो मै तुम्हे नही जाने दूंगा। भाभी बड़ी पशोपेश में पड गई। अंत मे कोई चारा न देख कर उन्हें स्त्री के कपडे पहनाये और साथ ले गई। थोड़ी देर के बाद आभल ने उन्हे पहिचान लिया। सब लोगो के चले जाने पर उनका मिलन हुआ। दोनो ने विवाह करने का पक्का वादा किया। आभल जगन्नाथ के मंदिर के लिए चल दी। खींवजी उसे पहुँचाने गये। पर लौटते समय जब वे भालो के गाव मे से निकल रहे थे तो सहसा उन्होंने अपना पुराना वैर लेने के लिए खींवजी को ललकारा। खींवजी ने कहा—युद्ध करना मेरा धर्म है और कर्त्तव्य भी, पर मुझे मेरी बहिन को विदा करना है इसलिए यह कार्य करने पर मैं स्वयं युद्ध के लिए उपस्थित हो जाऊंगा। भालो ने बात मानली। खींवजी ने ठाट-बाट के साथ अपनी बहिन को विदा किया और युद्ध के लिए प्रस्तुत हुए। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। पूरी फौज कट मरी। खींवजी भी वीर गति को प्राप्त हुए।
इधर आभल वापिस लौट रही थी—अपने हृदय के अपसिले प्रेम-कुसुमो को हर गाम मे सहलाती हुई। एकाएक उसने यह भीषण दृश्य देखा। खींवजी की लाश

पर उसकी दृष्टि पडी और उसने रथ से उतर कर उस लाश को अपनी गोद में ले लिया और बोली—

> मन री मन रै मांय, खांत करै मिळिया नहीं ।
> मिळिया मसांणां मांय, खीरां ऊपर खीवजी ॥

भाग्यवश शिव-पार्वती वहां आ निकले और पार्वती के हठ करने पर शिवजी ने करुणार्द्र होकर उन्हे जीवित किया। खीवजी को नई जिन्दगी और आभल को नया प्रेम मिल गया।

*

ऊमा—रूठी राणी—[पृ० ३५] ऊमा जैसलमेर की राजकुमारी थी। रूप, शील, मान-मर्यादा के गुणो से मडित उसका व्यक्तित्व था। जोधपुर के प्रसिद्ध राजा मालदेव के साथ उसकी शादी निश्चित हुई। मालदेव ठाट-बाट के साथ शादी के लिए जैसलमेर पहुँचे। बधावे [सत्कार] के समय राजघराने की सभी दासियां भी उपस्थित थी। उनमे भारमली नाम की दासी अत्यंत रूपवती थी। मालदेव की दृष्टि सहसा उस पर पडी और वे मुग्ध हो गये। शादी के बाद मालदेवजी को जब महलो में ले जाया गया तो भारमली उनके स्वागत के लिए महल के आगे खडी थी। मालदेव अपने को काबू मे नही रख सके और उन्होने नशे में भारमली से छेडछाड करली। ऊमा को इस बात का पता लगते ही बहुत नाराज हुई और पति से उनका मन-मुटाव हो गया। मालदेव जब रवाना होने लगे तो उसे बहुत मनाने की कोशिश की पर उसने साफ जबाव दे दिया कि ऐसा पति मुझे नही चाहिए। मालदेव जोधपुर लौट गये और भारमली को अपने साथ ले गये। इसके बाद कई बार ऊमा को मनाने का प्रयत्न किया गया पर सब कुछ निष्फल रहा। अंत में चारण कवि आशानन्दजी को भेजा गया। उनके समझाने-बुझाने पर ऊमा जोधपुर आने को तैयार हो गई। रास्ते मे आते समय ऊमा को फिर अपने मान का खयाल आया और आशानन्दजी से प्रश्न किया कि क्या मेरा मान वहाँ भी इसी रूप में सुरक्षित रह सकेगा। तो कवि होने के नाते उन्होने खरी-खरी बात इस दोहे के माध्यम से सुनादी—

> मांण रखै तौ पीव तज, पीव रखै तज मांण ।
> दो दो गयद न बंध ही, हेकै कंबू ठांण ॥

ऊमा वही पर ठहर गई, आगे नही बढी। जिन्दगी भर उसने मालदेव का मुँह नही देखा पर मालदेव की मृत्यु पर उनके साथ सती हुई।

*

सैणी बीजाणंद [पृ० ३६,४०] बीजाणंद बचपन में अनाथ बालक की तरह इधर-उधर भटकता और पशु चरा कर अपना गुजारा करता था। ज्यों-ज्यों वह बड़ा हुआ उसने जंतर बजाने की विद्या हासिल की और उसमें उतना प्रवीण हो गया कि उसके जंतर को सुन कर पशु तक मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उसी गाँव में वेदा नामक धनी चारण रहता था। उसके सैणी नाम की एक सुन्दर लड़की थी। वह कभी अपने घर से बाहर नहीं निकलती थी और किसीसे भी विवाह न करने का उसने निश्चय कर लिया था। एक दिन जब बीजाणंद अपनी मस्ती में जंतर बजा रहा था तो उसकी ध्वनि सुन कर वह बीजाणंद पर मोहित हो गई। कुछ दिन बाद वेदा ने बीजाणंद को अपने घर भोजन करने का न्यौता दिया और यह भी कहा कि मेरे पास अपार धन है, तू जो माँगेगा वही दूंगा। बीजाणंद ने कुछ देर ठहर कर उत्तर दिया—देने वाली वात तुमसे पूरी नहीं होगी। तब वेदा ने और भी हठ किया और कहा—मेरे पास किस चीज की कमी है, मैं वचन देता हूँ कि तुम जो माँगोगे वही मैं दूंगा। मेरी देह बेच कर भी अपना वचन पूरा करूंगा। बीजाणंद ने कहा—मुझे सैणी का हाथ देदो। वेदा के सामने अजीब संकट उपस्थित हो गया। उसने कहा—यह कोई माँगने की चीज नहीं है। तब बीजाणंद बिना कुछ खाये ही उठ खड़ा हुआ और जाने लगा। वेदा को अपने वचन भंग होने का खयाल आया। उसने जाते हुए बीजाणंद को रोक कर कहा—बीजाणंद, सैणी को पाना इतना सरल नहीं है, यदि तुम नौ चदरियू भैंसें (विशेष प्रकार की भैंसें) मुझे एक साल के भीतर भीतर लादो तो सैणी तुम्हें मिल जायेगी। प्रेम से गद्गद् बीजाणंद ने कहा—मैं ऐसा ही करूंगा। और वह वहाँ से चल निकला। जाते समय अपनी भैंसों को योंही वन में छोड़ गया और कहा—एक वर्ष बाद सैणी मेरे घर आकर तुम्हारे दूध का बिलोना करेगी। उसकी विह्वलता देख उन पशुओं की आँखों से बड़े बड़े आँसू टपकने लगे। बीजाणंद निर्विलम्ब वहाँ से चल दिया। रात दिन अपने जंतर की करुण रसीली आवाज से लोगों के चित्त को आकर्षित करता हुआ जहाँ भी नव चदरी भैंस का समाचार पाता पहुँच जाता। उधर सैणी का विरह-व्यथित हृदय अत्यंत आतुरता से अपने प्रिय की प्रतीक्षा कर रहा था। अन्त में वर्ष पूरा हो गया पर बीजाणंद नहीं लौटा। सैणी अपना घर छोड़ कर हिमालय में गलने को चलदी। तब बीजाणंद पहुँचा पर सैणी वहाँ से निकल चुकी थी। वह उसके विरह में पागल सा वन वन की खाक छानता अपने जंतर पर अपनी करुणा को व्यक्त करता हुआ ठेट हिमालय पर पहुँच गया। सैणी का आधा शरीर गल चुका था। उसने सैणी को लौट चलने के लिए कहा। तब सैणी ने निश्वास लेकर उत्तर दिया—

आधो गळियो गात, आधे मंहि आधो रह्यो।
हमें मसळो हाथ, धण मोला आवी फिरे।

अंत में बीजाणंद का जंतर सुनने की सैणी ने इच्छा व्यक्त की।

हिम-शिखरों में जंतर की आवाज गूंज उठी। थोड़ी देर में सैणी की पूरी

पर उसकी दृष्टि पड़ी और उसने रथ से उतर कर उस लाश को अपनी गोद में ले लिया और बोली—

मन री मन रै मांय, रांत करै मिळिया नहीं।
मिळिया मसांणां मांय, लीरां ऊपर लींवजो ॥

भाग्यवश शिव-पार्वती वहाँ आ निकले और पार्वती के हठ करने पर शिवजी ने करुणार्द्र होकर उन्हें जीवित किया। सींवजी को नई जिन्दगी और आभल को नया प्रेम मिल गया।

★

ऊमा—रूठी राणी—[पृ० ३५] ऊमा जैसलमेर की राजकुमारी थी। रूप, शील, मान-मर्यादा के गुणों से मंडित उसका व्यक्तित्व था। जोधपुर के प्रसिद्ध राजा मालदेव के साथ उसकी शादी निश्चित हुई। मालदेव ठाट-बाट के साथ शादी के लिए जैसलमेर पहुँचे। बधावे [सत्कार] के समय राजघराने की सभी दासियाँ भी उपस्थित थी। उनमें भारमली नाम की दासी अत्यंत रूपवती थी। मालदेव की दृष्टि सहसा उस पर पड़ी और वे मुग्ध हो गये। शादी के बाद मालदेवजी को जब महलों में ले जाया गया तो भारमली उनके स्वागत के लिए महल के आगे खड़ी थी। मालदेव अपने को काबू मे नहीं रख सके और उन्होंने नशे में भारमली से छेड़छाड़ करली। ऊमा को इस बात का पता लगते ही बहुत नाराज हुई और पति से उनका मन-मुटाव हो गया। मालदेव जब रवाना होने लगे तो उसे बहुत मनाने की कोशिश की पर उसने साफ जवाब दे दिया कि ऐसा पति मुझे नहीं चाहिए। मालदेव जोधपुर लौट गये और भारमली को अपने साथ ले गये। इसके बाद कई बार ऊमा को मनाने का प्रयत्न किया गया पर सब कुछ निष्फल रहा। अंत में चारण कवि आशानन्दजी को भेजा गया। उनके समझाने-बुझाने पर ऊमा जोधपुर आने को तैयार हो गई। रास्ते मे आते समय ऊमा को फिर अपने मान का खयाल आया और आशानन्दजी से प्रश्न किया कि क्या मेरा मान वहाँ भी इसी रूप में सुरक्षित रह सकेगा। तो कवि होने के नाते उन्होंने खरी-खरी बात इस दोहे के माध्यम से सुनादी—

मांण रखै तो पीव तज, पीव रखै तज मांण।
दो दो गयद न बंध हो, हेके कंबू ठांण ॥

ऊमा वहीं पर ठहर गई, आगे नहीं बढ़ी। जिन्दगी भर उसने मालदेव का मुँह नहीं देखा पर मालदेव की मृत्यु पर उनके साथ सती हुई।

★

का सामना करने पर भी वह बूबना से अवश्य मिलता। अेक बार बादशाह के पास शिकायत पहुँच गई तो बादशाह स्वयं महल में पहुँचा पर बूबना ने होशियारी के साथ जलाल को फूलों के ढेर में छिपा दिया और उसकी जान बच गई। परन्तु बादशाह को शक हो गया था इसलिए वह जलाल को सदैव दूर रखने का प्रयत्न करता। पर वे किसी न किसी बहाने से मिलते अवश्य। तब लोगों ने बादशाह से कहा कि जलाल को खत्म करने का एक ही उपाय है—यदि बूबना के पास जलाल की मृत्यु की खबर भेजी जाय तो बूबना अवश्य ही तड़फ तड़फ कर मर जायगी और फिर जलाल की भी यही गति होगी क्योंकि उससे प्रेम बहुत अधिक है। ऐसा ही किया गया और जलाल बूबना दोनों ने अेक दूसरे को मरा जान कर प्राण त्याग दिये। दोनों प्रेमियों को अगतमायची ने अेक ही जगह दफनाने की आज्ञा दी। पर शिव-पार्वती की कृपा से वे फिर जीवित हो उठे। यह खबर सुन कर बादशाह इतना भयभीत हुआ कि उसके प्राणपखेरू उड़ गये। और तब से जलाल बूबना के प्रेममय जीवन का नवीन सुखमय अध्याय प्रारम्भ हुआ। जलाल की प्रीत, दानशीलता और वीरता आज भी अमर है—

मांगीगर दातार में, रण जगो जस खग।
जायो अर न जलमसी, जलाल जैसो नग॥

*

काछबो [पृ० ६६] काछबा धनराज का पुत्र था। पड़िहारों की लड़की से उसकी सगाई हुई थी। पर अेक दिन जब वह लड़की स्नान करने तलाव पर पहुँची तो उसकी भावज ने पानी में तैरते हुए कच्छप की ओर संकेत कर के ननद को चिढ़ाने के लिए ताना मारा कि तेरा पति इस कच्छप जैसा कुरूप है। यह सुन कर वह बहुत लज्जित हुई तथा अपने माता पिता को भला बुरा कहने लगी और काछबे के साथ विवाह न करने की इच्छा व्यक्त की जिससे काछबे के साथ उसकी सगाई टूट गई। कुछ वर्षों बाद काछबा विवाह के लिए सीसोदियों के वहाँ जा रहा था तो संयोग से इसी गाँव में आकर उनकी बारात ठहरी। काछबा अत्यन्त सुन्दर युवक था। जब उस लड़की ने उसे देखा तो उसके पश्चात्ताप की सीमा न रही। वह अत्यंत अधीर होकर अपनी भावज को भला-बुरा कहने लगी—

मरजो भायज थारो बीर, वर छोडायो काछबो।

वह काछबे को जी भर कर देखने के लिए उसके डेरे पर पहुँची पर वहाँ से भी उसको तिरस्कृत होकर निकलना पड़ा—

पासं रहो पड़िहार, इकसे मरं सिसोदणी।
इण ओढ़ं रं इकसार, नहि परणीजं काछबो॥

फिर भी उसने काछबे के पास शादी का प्रस्ताव भिजवाया और उसके सच्चे प्रेम को न ठुकराने की प्रार्थना की पर काछबा अपने प्रेम का विभाजन करने में असमर्थ

देह गल गई। बीजाणंद अपना दुखी हृदय लेकर लौट गया। उम्र भर वह इस विरह-व्यथा को जंतर पर गाता हुआ भटकता रहा।

★

जमाल और सुन्दर [पृ० ४४, ६४, ६५, ६६] जमाल और सुन्दर के बीच गहरा प्रेम-सम्बन्ध होते हुए भी उनका मिलन दुविधा मे पड गया। तब जमाल और उसके साथी कमाल ने एक दूसरे को सम्बोधित करके उनकी इस प्रेमजन्य दुविधा को व्यक्त किया है। राजस्थान के कई लोकगायकों का मत है कि जमाल गंभीर का लड़का था जिसका काफी रागिनी के निर्माण में विशेष स्थान है। सुन्दर और जमाल के दोहे भी काफी रागिनी मे गाये जाते हैं—

> काट काट काफी करी, सब रागन को सीर।
> भोपाळां मन भावणी, गाई गुणी गंभीर ॥

★

जलाल-बूबना—[पृ० ५०, ८१] थटा भखर के बादशाह अगतमायची की बहन का लडका जलाल बचपन से ही उसके दरबार मे रहता था। जब वह सयाना हुआ तो उसके सुघड़पन और बहादुरी की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। उसी समय सिंध समुद्र के बादशाह भँवर की दो लडकियाँ—बडी मूमना और छोटी बूबना के विवाह के लिए बादशाह ने अपने आदमी इधर-उधर भेजे। लोगो ने जलाल की बादशाह भँवर के सामने बडी तारीफ की। तब छोटी लडकी बूबना जो अत्यन्त रूपवती थी, की शादी जलाल के साथ और बडी लडकी मूमना की शादी अगतमायची के साथ निश्चित करने के लिए काजी को भेजा। काजी पहले अगतमायची से मिला तो उसने छोटी लडकी बूबना के सौन्दर्य की तारीफ पहले से ही सुन रखी थी इसलिए उसी के साथ विवाह करवाने के लिए काजी को मजबूर किया। काजी ने रिश्वत लेकर ऐसा ही किया और बादशाह का सम्बन्ध बूबना के साथ तथा जलाल का सम्बन्ध मूमना के साथ तय कर दिया। कुछ दिन बाद जलाल ठाट-बाट के साथ शादी के लिए रवाना हुआ। बादशाह ने स्वयं न आकर हाथी के होदे पर अपना खांडा शादी के लिए भेज दिया। जब शादी का समय आया तो सारा भेद खुला। बादशाह भंवर बहुत बिगड़ा और काजी को भारी सजा दी पर शादी मे हेर-फेर नहीं कर सका। शादी की रस्म के बाद बूबना जलाल से मिलने के लिए पहुँचती है और उसी पर मुग्ध हो जाती है। वहाँ से बरात रवाना होती है तो रास्ते मे कई दिन लगते हैं। उस दौरान मे भी मौका निकाल कर जलाल बूबना मिलते रहते हैं। राजधानी मे पहुँचने पर बूबना को अलग महल मे रखा जाता है। बादशाह के कई रानियाँ होने के कारण कई महीनो के बाद ही बूबना के महल बादशाह पहुँचता था। इधर जलाल मूमना के पास न जाकर बूबना से मिलने के लिए प्रयत्नशील रहता और कई कठिनाइयों

का सामना करने पर भी वह बूबना से अवश्य मिलता। अेक बार बादशाह के पास शिकायत पहुँच गई तो बादशाह स्वयं महल में पहुँचा पर बूबना ने होशियारी के साथ जलाल को फूलों के ढेर में छिपा दिया और उसकी जान बच गई। परन्तु बादशाह को शक हो गया था इसलिए वह जलाल को सदैव दूर रखने का प्रयत्न करता। पर वे किसी न किसी बहाने से मिलते अवश्य। तब लोगों ने बादशाह से कहा कि जलाल को खत्म करने का एक ही उपाय है—यदि बूबना के पास जलाल की मृत्यु की खबर भेजी जाय तो बूबना अवश्य ही तड़फ-तड़फ कर मर जायगी और फिर जलाल की भी यही गति होगी क्योंकि उसमें प्रेम बहुत अधिक है। ऐसा ही किया गया और जलाल बूबना दोनों ने अेक दूसरे को मरा जान [illegible] दोनों प्रेमियों को अगतमायची ने अेक ही जगह दफनाने [illegible] पार्वती की कृपा से वे फिर जीवित हो उठे। यह [illegible] भयभीत हुआ कि उसके प्राणपखेरू उड़ गये। और [illegible] मय जीवन का नवीन सुखमय अध्याय प्रारम्भ हुआ। [illegible] और वीरता आज भी अमर है—

> माणीगर दातार में, रण चंगो [illegible]
> जायो अर न जलमती, जलाल जैसो [illegible]

★

काछबो [पृ० ६६] काछबा धनराज का पुत्र था। परिहारों [illegible] हुई थी। पर अेक दिन जब वह लड़की स्नान करने [illegible] भावज ने पानी में तैरते हुए कच्छप की ओर संकेत [illegible] ताना मारा कि तेरा पति इस कच्छप जैसा कुरूप है। [illegible] हुई तथा अपने माता पिता का भला बुरा कहने [illegible] न करने की इच्छा व्यक्त की जिससे काछबे के साथ [illegible] वर्षों बाद काछबा विवाह के लिए सीसोदियों के [illegible] गाँव में आकर उनकी बारात ठहरी। काछबा [illegible] लड़की ने उसे देखा तो उसके पश्चात्ताप की [illegible] अपनी भावज का भला-बुरा कहने लगी—

> मरजो भावज थारो वीर, था [illegible]

यह काछबे को जी भर कर देखने के लिए उसको निस्संकोच होकर निरखना पड़ा—

> पार्से रहो परिहार, हु [illegible]
> इण ओछे रे इकसार, मैं [illegible]

फिर भी उसने काछबे के पास शादी का न टुकराने की प्रार्थना की पर काछबा [illegible]

था। काछवे की बरात वहां से रवाना होने लगी तो वह उसके वियोग मे जल कर प्राणान्त करने को तैयार हो गई—

काछवा पाछल फोर, कवारी काठे चढ़ै।

काछवे ने फिर भी परवाह नही की पर अंत मे ज्योही वह जलने को थी काछवे ने आकर उसके प्रेम प्रस्ताव को स्वीकार किया और उसका विवाह हुआ। उनकी इस प्रेमगाथा के आधार पर गाया जाने वाला गीत 'काछवा' बडा ही सरस और हृदय-ग्राही है।

*

सांमेरी [पृ० ६७, ६८, ८७] सांमेरी के कुछ दोहे अत्यंत प्रसिद्ध हैं पर उसकी जीवन-गाथा के सम्बन्ध में अधिक जानने को नही मिलता। इनका आतिथ्य-सत्कार बहुत प्रसिद्ध था जिसकी साक्षी के निम्नलिखित दोहे हैं—

सांमेरी धण दूबळी, केडी चिन्त पड़ी।
का विदेसी बालमौ, का सम्पत नहीं घड़ी॥

सपत थोड़ो बाट घर, मोटो पिय को नांव।
इण कारण धण दूबळी, गेलै ऊपर गांव॥

सामेरी के दोहो मे उसके प्रेम, सौन्दर्य और बुढापे तक के बड़े सरस दोहे हैं।

सांमेरी गरड़ी हुई, करड़ी हुई कवांण।
अणबींध्या मोती बींधती, तिणां न तूटै आंण॥

*

नागजी [पृ० ६८,६६]—

नागा नवळौ नेह, जिण तिण सूं कीजै नहीं।
लीजै परायौ छेह, आप तणौ दीजै नहीं॥

एक बार आईजी ठाकुर के गाँव में अकाल पडा। बिना घास के जानवर भूखो मरने लगे। धवळदे वाळ के गाँव मे अकाल नही था इसलिए उनसे इजाजत लेकर वे उसके गाँव पहुँचे। आईजी के एक रूपवती लडकी थी, वह भी परिवार के साथ चलदी।

धवळदे का लडका नागजी जवार के खेत की रखवाली किया करता था। उसकी भाभी उसके लिए खाना लाया करती थी। एक बार उसने भाभी से कहा—भाभी, अकेले मे दिन भर रखवाली नही होती। मुझे कोई साथी चाहिए। भाभी ने हँस कर कहा—तुम्हारे लिए अब साथी जरूर खोजना पडेगा।

दूसरे दिन जब नागजी की भाभी खेत को आ रही थी तो आईजी ठाकुर की

लडकी भी खेत देखने की इच्छा से साथ रवाना हो गई। सालासर नाम का वहाँ बहुत बडा तालाब था, उस पर आकर देखा तो कुकुम जगह जगह बिखरा हुआ था। लडकी ने पूछा—यह कुकुम यहाँ कहाँ से आया ? तो नागजी की भाभी ने कहा—नागजी यहाँ स्नान करके सूर्य की पूजा करते हैं। उनके बालो से जो पानी की बूंदें गिरती हैं वे कुंकुम में परिवर्तित हो जाती हैं। लडकी को बडा आश्चर्य हुआ। उसने बात मानी नही और कहा—यदि यह बात सच्ची सिद्ध हो जाय तो मैं उनके साथ शादी कर लूंगी। नागजी को बुलाया गया और ज्योंही उन्होने स्नान करके सूर्य की परिक्रमा प्रारंभ की, उनके बालो से गिरने वाली पानी की बूंदें कुंकुम मे परिवर्तित हो गई। अपने वायदे के अनुसार नागजी के साथ लडकी ने वही खेत में चुपके से विवाह कर लिया।

फिर तो वे दोनो चुपके-चुपके रोज खेत में मिलते। उनका प्रेम दिनोदिन बढता गया। एक दिन दोनो के पिता चाँदनी रात में शिकार खेलते खेलते खेत तक आ पहुँचे जहाँ नागजी अपनी प्रेमिका के साथ चौपड खेल रहे थे। इतने में घवळदे ने उन्हे देख लिया। उनके गुस्से का पार नही रहा। फौरन अपनी कटार निकाली। तब लडकी दृढता के साथ अपना प्रेम स्वीकार करते हुए बोली —

> बाळा बाढ़ेज बेल, चंपे घाव न घातजे।
> चंपे केड़ी दोस, चपं विलूधी बेलडी।।

तब से दोनों का विछोह हो गया। लडकी की सगाई की हुई थी। कुछ ही दिनो में उसका विवाह रचा गया। उसने वायदा किया था कि शादी की रात को तुमसे आकर अवश्य मिलूंगी। वह वायदा निभाने के लिए लडकी अपने महल से निकली। पर नागजी अपना धैर्य खो बैठे थे, उन्होने बहुत देर तक इन्तजार करने के बाद कटार अपने कलेजे में भोंकली और सदा के लिए सो रहे। नागवती ने जब पहुँच कर देखा तो उन्हें सोता हुआ पाया। उसने समझा नागजी उससे रूठ गये हैं—

> सूता खूंटी ताँण, वैरी बतळाया बोलो नहीं।
> करेक पड़िया काम, नोरा करसो नागजी।

जब नागजी नहीं बोला तो उसने कपडा हटाया। नागजी की देह खून में सराबोर थी, दोराकुन नागवती विलख-विलख कर रोने लगी —

> कटारी कू मार, बेवतड़ी विरची नहीं।
> नाग तणा घट माय, सो बाळी साळो नहीं।।

वह अपना हृदय पत्थर का सा बना कर घर लौट गई। सवेरे जब बरात रवाना हुई तो सालासर की पाल के पास से निकली। वही नागजी की दाह-क्रिया हो रही थी। जलती हुई चिता को देख कर नागवती से नहीं रहा गया। वह सहसा अपने रथ से उतरी और नागजी की चिता में जाकर भस्म हो गई। उसने अपनी बचपन की

प्रीत को प्राण देकर भी निभाया। आज भी उनकी अमर प्रीत का करोड़ों कंठों मे निवास है—

बाल पणं री प्रीत, बिछड़ियां पण भूलै नहीं।

*

जेठवा ऊजळी [पृ० ७०, ७१, ७२, ७३] धूमली नगर का राजा मेह जेठवा एक दिन वर्षा की मौसम में अपने साथियो के साथ शिकार के लिए निकला। सहसा आंधी और वर्षा ने इन्हे आ घेरा। अधिक वर्षा के कारण राजा बेहोश हो गया। साथी बिछुड़ गये। रात हो गई पर घोड़ा बहुत समझदार था, वह उसे इसी स्थिति मे अपनी पीठ पर लादे एक झोपडी के पास आ पहुँचा। उसमें अमरा चारण अपनी युवती कन्या के साथ रहता था। अमरा ने घोड़े की आवाज सुन कर दरवाजा खोला और बेहोश व्यक्ति को झोपड़ी के अन्दर लिया। झोपडी मे वर्षा के कारण आग तक बुझ चुकी थी। अन्य कोई चारा न देख कर उसने अपनी पुत्री से कहा कि वह उसे अपने शरीर से चिपका कर रखे जिसकी उष्णता से शायद इसकी जिन्दगी बच जाय। युवती के दिमाग मे बडा संघर्ष पैदा हो गया पर अंत मे उसने पिता के आदेश को माना। सवेरा होते-होते राजा होश मे आया। उसकी सेवा के लिए उसने बहुत आभार प्रकट किया और ऊजळी से वायदा किया कि वह उसके साथ विवाह करेगा। पर राजा कभी नही लौटा और वायदा कभी पूरा नही हुआ। ऊजळी विरह में तड़फती रही। ये सोरठे उसी विरह-व्यंजना को व्यजित करते हैं। कहा जाता है कि राजधानी तक मे जाकर उसने राजा से अपने प्रेम की भीख मांगी पर सामाजिक बन्धनो के कारण राजा ने सम्बन्ध स्वीकार नही किया। तब ऊजळी ने उसे शाप दिया। फलस्वरूप उसकी देह मे जलन पैदा हो गई और राजा ने तड़फ-तड़फ कर प्राण दे दिये। ऊजळी को पता लगते ही उसने भी अपना प्राणान्त जेठवा की देह के साथ ही कर दिया।

*

राठौड़ पृथ्वीराज [पृ० ६५] इस दोहे की पृष्ठभूमि मे एक अनोखी कथा प्रचलित है। बादशाह अकबर ने राठौड पृथ्वीराज से एक बार प्रश्न किया कि तुम पहुँचे हुए भक्त कहलाते हो तो इस बात का जवाब दो कि तुम्हारी मृत्यु किस दिन और किस स्थान पर होगी? तब पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि यह तो बहुत साधारण बात है और बताया कि मेरी मृत्यु गगा के घाट पर अमुक दिन होगी। जब वह दिन नजदीक आने लगा तो बादशाह ने उन्हे दक्षिण मे युद्ध के लिए रवाना कर दिया जिससे वे गगा के घाट से दूर चले जाय। इधर एक कवि (कई रहीम का नाम भी बताते है) ने चकवे चकवी को एक पिंजरे मे बद देख कर कल्पना की कि किसी ने इन

पक्षियों को बन्दी बनाने के लिए पिंजरे में बंद किया है पर इस तरह इनका मिलन सदा के लिए संभव हो गया है। पंक्ति इस प्रकार थी :

वार्ह दुरजण ऊपरा, सो सज्जण को भेंट।

पर दूसरी पंक्ति नहीं बन सकी तब बादशाह ने पृथ्वीराज को बुलाने भेजा। पृथ्वीराज वापिस लौटे और ज्योंही गंगा के घाट पर पहुँचे उन्होंने दोहे की पूर्ति के लिए दूसरी पंक्ति बना कर अकबर के पास भिजवा दी तथा गंगा के घाट पर ही उनका देहान्त हो गया। अकबर ने पंक्ति को पढ़ा—

रजनी का मेळा किया, वेह का अच्छर मेट।

अर्थात् विधि के लेख को भी मिटा कर उस दुर्जन ने रात में भी इनका मिलन संभव कर दिया है क्योंकि वैसे चकवा चकवी का रात में वियोग रहता है। अकबर को यह भी पता लगा कि पृथ्वीराज ने गंगा किनारे ही शरीर त्याग दिया है, तो उसे उनकी सच्चाई पर आश्चर्य भी हुआ और अपार दुःख भी। पृथ्वीराज की काव्य-चातुरी पर बादशाह मुग्ध था इसीलिए यह दोहा कहा—

पीथल सूं मजलिस गई, तानसेन सूं राग।
रीझ खीज हस बोलणो, गयो बीरबल साथ॥

*

बाघो भारमली [पृ० ६५] जैसा कि रूठी राणी की कथा में पहले कहा जा चुका है, भारमली जैसलमेर की दासी थी। पर अत्यन्त रूपवती होने के कारण जोधपुर के राजा मालदेव उसे ले आये थे और उनकी पत्नी उमा जिन्दगी भर इसी बात पर उनसे रूठी रही। जैसलमेर वालों ने सोचा कि यह सब भारमली की वजह से हुआ है इसलिए उन्होंने अपने रिश्तेदार बाघजी कोटड़िये से भारमली को जोधपुर से उड़ा कर ले आने को कहा। बाघजी बड़ा मनमौजी और बहादुर आदमी था। उसने ऐसा ही किया और भारमली को अपने वहाँ ले गया। मालदेवजी ने वहाँ भी आशानन्दजी को ही भेजा ताकि वे बाघजी को समझा कर भारमली को लाने की कोशिश करें। आशानन्दजी गये तो बाघजी व भारमली ने उनकी इतनी खातिर की कि आशानन्दजी उनके इस सद्व्यवहार के कायल हो गये और यह दोहा कहा—

जंह तरवर तह मोरिया, जह सरवर तंह हंस।
जह बाघो तंह भारमल, जह दारू तह मंस॥

तब से आशानन्दजी भी वहीं रहने लगे और जीवन भर बाघजी के साथ ही रहे उनके बीच बड़ा घनिष्ट स्नेह हो गया। बाघजी के मरने के बाद उन्होंने बड़े हृदय-विदारक मरसिये कहे हैं—

ठौड़-ठौड़ पग ठोड़, करसी पेट ज कारणे।
रात दिवस राठौड़, बीसर सी नहिं बाघ नैं॥

पीयल धौळा आविया [पृ० ६८] बीकानेर के राठौड़ पृथ्वीराज ने पहली पत्नी लालांदे की मृत्यु के पश्चात उसकी छोटी बहिन से शादी की थी। इस समय पृथ्वीराज की उम्र ढलने लगी थी जिसके फलस्वरूप बालों में एक आध सफेद बाल उन्हें दिखाई दिया। आइने में देख कर ज्योंही वे उस सफेद बाल को तोड़ने लगे, उनकी पत्नी का प्रतिबिम्ब उस आइने में पड़ा। पत्नी को आया जान उन्होंने शीघ्रता करने का प्रयत्न किया पर वह सब कुछ समझ गई। उसने मुस्करा कर मुँह मोड़ लिया। तब पृथ्वीराज ने निश्वास लेकर कहा:—

पीयल धौळा आविया, बहुळी लागी खोड़।

चतुर पत्नी ने उत्तर दिया—

प्यारी कहे पीयल सुणो, धौळां दिस मत जोय।
नरां तुरां अर बन फळां, पाक्यां ही रस होय॥

**

उद्देश्य व नियम

१–राजस्थानी साहित्य, भाषा, कला व संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

२–परम्परा का प्रत्येक अंक प्रायः विशेषांक होता है, इसलिए विषयानुकूल सामग्री को ही स्थान मिल सकेगा।

३–लेखों में व्यक्त विचारों का उत्तरदायित्व उनके लेखकों पर होगा।

४–लेखक को, सम्बन्धित अंक के साथ, अपने निबन्ध की पच्चीस अनुमुद्रित प्रतियाँ भेंट की जावेगी।

५–समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ आना आवश्यक है। केवल शोध-संबंधी महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों की समालोचना ही संभव हो सकेगी।

परम्परा की प्रचारात्मक सामग्री, उसके नियम तथा व्यवस्था-सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें—

व्यवस्थापक **परम्परा**
राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी
जोधपुर [राजस्थान]